1981 अगस्त सितम्बर।

रु. १०.००

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान

अगस्त-सितम्बर, १९८१

स्तोत्र-विशेषांक

राम रक्षा स्तोत्र
पृष्ठ २४

राजेन्द्र मोक्ष
पृष्ठ ३२

नारायण कवच
पृष्ठ ४०

सुदर्शन कवच
पृष्ठ ४७

बगलामुखी कवच
पृष्ठ ५४

श्री सूक्त
पृष्ठ ७०

मंत्र तंत्र से सम्बंधित भारत की श्रेष्ठ पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर-३४२ ००१ राजस्थान

सम्पादक
कैलाशचन्द्र श्रीमाली

सह सम्पादक
आनन्द प्रकाश

यह प्रति वार्षिक ग्राहकों के लिये है, बिक्री के लिए नहीं।

स्तोत्र-पाठ में धारण करने योग्य

पांच अद्वितीय मालाएं

(प्रामाणिक, मंत्र सिद्ध, मंत्र चैतन्य युक्त)

❖ कमलगट्टे की माला

लक्ष्मी से संबंधित कार्यों, प्रयोग, अनुष्ठान या लक्ष्मी से संबंधित स्तोत्र पाठ में धारण करने योग्य श्रेष्ठ मंत्र चैतन्य माला......

मूल्य ३०) रु.

❖ [illegible]

[illegible] में सहायक, हृदय रोग को नियन्त्रण करने वाली, शत्रुओं पर हावी होने, अपने व्यक्तित्व को बढ़ाने व बल प्राप्ति में सहायक, गले में धारण करने योग्य......

मूल्य ८०) रु.

❖ [illegible]

छोटे-छोटे रुद्राक्ष युक्त, रोगों को भगाने वाली, मृत्यु पर विजय प्राप्त करने वाली, अकाल मृत्यु टालने वाली, मंत्र सिद्ध, चैतन्य, गले में पहिनने योग्य......

मूल्य ३००) रु.

❖ कार्य सिद्धि माला

रुद्राक्ष की तरह छोटे मनकों की मंत्र सिद्ध चैतन्य माला, जपने योग्य, गले में धारण करने योग्य माला......

मूल्य ४२) रु.

❖ रोगहर माला

सुन्दर, विभिन्न मनकों से युक्त रोगहर सम्पुट से सिद्ध, धारण करने योग्य श्रेष्ठ माला......

मूल्य ६०) रु.

धनराशि मनिआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से इस पते पर भेजें—

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (३४२००१) राजस्थान

वर्ष : १
अंक : ८-९
अगस्त–सितम्बर १९८१
मूल्य १०-०० रुपये

संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

सम्पादक
कैलाशचन्द्र श्रीमाली

सह–सम्पादक
आनन्द प्रकाश

कार्यालय पता :
"मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान"
डॉ. श्रीमाली मार्ग,
हाई कोर्ट कालोनी
जोधपुर—३४२ ००१ (राजस्थान)
टेलीफोन : २२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, ऊर्ध्वमुखी प्रगति और भारतीय ज्योतिष अध्ययन अनुसंधान केन्द्र से समन्वित मासिक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

❖❖

प्रार्थना

ध्यानपूते ज्ञान जले रागद्वेष मलापहे ।
यः स्नाति दिव्यतं स्तोत्रे स याति परमां गतिम् ।।

—स्कन्द पुराण

ध्यान के द्वारा पवित्र तथा ज्ञान रूपी जल से भरे हुए, राग-द्वेष रूपी मल को दूर करने वाले दिव्य स्तोत्र-तीर्थ में जो पुरुष स्नान करता है, वह परमगति-मोक्ष को प्राप्त होता है ।

❖❖

 ● पत्रिका का वार्षिक विशेषांक का मूल्य ही १०५.०० रु. है, अतः अन्य सभी अंक जब तक प्रकाशित हों, निःशुल्क ही समझें । पत्रिका का दो वर्ष का शुल्क १०५.०० रु. तथा एक वर्ष का शुल्क ६०.०० रु. है । एक अंक का मूल्य ५.०० रु. है । पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेदारी साधक की स्वयं की होगी । साथ ही, साधक ऐसी कोई उपासना, मन्त्र जप प्रयोग या साधना न करे, जो नैतिक, सामाजिक नियमों के विरुद्ध तथा कानूनी मान्यता के विपरीत हो । पत्रिका में विज्ञापित सामग्री के सम्बन्ध में आलोचना या आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी ।

❖

मुद्रक : जितेन्द्र प्रिण्टर्स, घासमण्डी रोड, जोधपुर (राज.)

(2)

कल्पतरु तले

पूज्य श्रीमाली जी से स्तोत्र से संबंधित अंतरंग बातचीत

पिछले दिनों पूज्य श्रीमाली जी के सम्मुख उनके एक शिष्य ने स्तोत्रों से संबंधित अपनी शंकायें व्यक्त की थीं। उन शंकाओं के निवारणार्थ श्रीमाली जी ने जो उत्तर दिए, वे पत्रिका पाठकों के लिए भी उपयोगी होंगे, ऐसा समझ कर उन्हें इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है।

इस स्तोत्र विशेषांक के लिए यह सामग्री विशेष रूप से उपयोगी है।

प्रश्न— आपकी पुस्तक 'स्तोत्र शक्ति' पढ़ी। स्तोत्रों के चमत्कारिक प्रभावों को पढ़कर एक दम से उनकी सत्यता पर विश्वास नहीं हुआ। क्या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह समझाने की कृपा करेंगे कि स्तोत्रों के प्रभावों का आधार क्या है? किस प्रकार वे भव-भय मिटाने में समर्थ होते हैं?

उत्तर— हम अपने मुंह से जो भी शब्द निकालते हैं, वह वायुमण्डल में गुंजरित रहता है, क्योंकि इस वायुमण्डल से उत्पन्न ध्वनि कभी भी समाप्त नहीं होती। इसीलिये आज वैज्ञानिक इस बात के लिये प्रयत्नशील हैं कि यदि ध्वनि समाप्त नहीं होती, वह शाश्वत रहती है तो श्री कृष्ण और अर्जुन का संवाद तथा वह ध्वनि भी वायुमण्डल में ही गतिशील होगी। यदि ध्वनि की उस 'वेव' को पकड़ा जा सके तो उस संवाद को भी सुना जा सकता है।

हम जो कुछ बोलते हैं उसका एक निश्चित प्रभाव होता है, यह प्रभाव ही मानव के लिये सार्थक-निरर्थक हो सकता है। उदाहरण के लिये यदि कोई व्यक्ति हमारे सामने पांच फीट की दूरी पर बैठा है और हम विशेष शब्दों का संयोजन कर उसे गालियां दें तो वह दूर बैठा व्यक्ति भी क्रोधित हो जायेगा, उसकी नसें खिंच जायेंगी, चेहरा तमतमा जायगा, हाथ की मुट्ठी बंध जायेगी और वह हमें मारने के लिये उद्यत हो जायगा। यह सब क्या है, हमने उस व्यक्ति को शरीर से स्पर्श तक नहीं किया फिर वह उत्तेजित क्यों हो गया? इसके मूल में शब्दों का प्रवाह ही तो था।

इसी प्रकार यदि किसी सामने वाले व्यक्ति से मधुर बातें करते हैं तो उसका चेहरा खिल जाता है, और वह विरोधी होते हुए भी हमारा साथ देने को तैयार हो जाता है।

इन सब के मूल में ध्वनि-प्रवाह ही है। विशेष शब्दों के संयोजन से एक विशेष ध्वनि का निर्माण होता है और वह ध्वनि ईथर के माध्यम से प्रवहित होकर सामने वाले व्यक्ति और उसके विचारों से टकराती है। फलस्वरूप उसके मानस को वह ध्वनि आन्दोलित कर देती है और मनोवांछित प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम हो जाती है।

स्तोत्र भी एक प्रकार से विशेष शब्दों का संयोजन है जिसके माध्यम से एक विशेष प्रकार की ध्वनि-संयोजन तैयार होकर प्रवाहित होता है और सामने वाले व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

हमारी आंखें केवल स्थूल पदार्थों को ही देख पाती हैं, सूक्ष्म मनुष्यों को देखना उनके वश की बात नहीं है। इसलिये इस विश्व में और वायुमण्डल में भूत, प्रेत, पिशाच, गन्धर्व और देवता विचरण करते हैं परन्तु हमारी स्थूल आंखें उन्हें नहीं देख पातीं, पर इसका तात्पर्य यह नहीं कि उनका अस्तित्व ही नहीं है।

इसीलिये जब हम किसी विशेष देवता को प्रसन्न करने के लिए तथा मनोवांछित फल प्राप्त करने के लिए स्तोत्र पाठ करते हैं तो उस शब्द-संयोजन से एक विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है जो इस जगत में स्थित संबंधित देवताओं की भावनाओं को उद्वेलित-आन्दोलित करता है और देवता उस प्रभाव से हमारे अनुकूल हो कर हमें मनोवांछित फल देने में सहायक हो जाते हैं।

प्रश्न— इसका तात्पर्य यह हुआ कि स्तोत्र से संबंधित ध्वनि प्रवाह बनाने के लिये यह आवश्यक है कि स्तोत्र का सस्वर पाठ किया जाय?

उत्तर— हां, शब्द लहरियां दो प्रकार से बनती हैं। मानसिक स्वर लहरी तथा वायु स्वर लहरी। हम अपने मस्तिष्क में जो कुछ सोचते हैं वह शारीरिक ऊर्जा के माध्यम से बाहर प्रस्फुटित होता है और उससे एक विशेष ध्वनि-लहर बनती है तथा सामने वाले व्यक्ति के मानस को आन्दोलित-प्रभावित करती है। इसी प्रकार हम जो कुछ बोलते हैं उससे भी ध्वनि लहर बनकर प्रवहित होती है और हम जिसे प्रभावित करना चाहते हैं वह प्रभावित हो पाता है।

स्तोत्र का मूल आधार स्वर लहरी है, इसलिये स्तोत्र का मानसिक जप उचित एवं अनुकूल नहीं। स्तोत्र का उच्चारण करना, और सही प्रकार से उच्चारण करना आवश्यक है। ऐसा करने पर ही निश्चित प्रभाव उत्पन्न हो पाता है। परन्तु कहने और चिल्लाने में अन्तर है। इस बात का ध्यान रखा जाय कि स्तोत्र का अर्थ प्रार्थना है, अनुनय है, रिक्वेस्ट है और प्रार्थना, नम्र विनीत भाव से की जाती है, चिल्ला कर अनुनय या रिक्वेस्ट नहीं की जाती।

इसलिये स्तोत्र का सस्वर पाठ होना आवश्यक है परन्तु उसके मूल में नम्रता अत्यावश्यक है। जब हम संबंधित देवता से जुड़कर कोई बात कहेंगे तभी तो उसका प्रभाव हो सकेगा। उदाहरण के लिये कोई भिखारी हमारे सामने चिल्ला कर दबाव के स्वर में भीख मांगे तो हम पर अनुकूल प्रभाव नहीं हो सकेगा, हम उसको फटकार कर भगा देंगे। परन्तु इसके विपरीत यदि भिखारी अनुनय पूर्वक, नम्रता से अपनी बात दोहराता है, तो उसका हमारे चित्त पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है और हम उसकी सहायता करने को तैयार हो जाते हैं।

प्रभु तो दाता हैं, हम उसके सामने भिखारीवत् ही है। हमें तो अनुनय-विनय से श्रद्धा से, प्रेम से, और नम्रता से अपनी बात उनके सामने रखनी है। अपने विचारों

(2)

कल्पतरु तले

पूज्य श्रीमाली जी से स्तोत्र से संबंधित अंतरंग बातचीत

पिछले दिनों पूज्य श्रीमाली जी के सम्मुख उनके एक शिष्य ने स्तोत्रों से संबंधित अपनी शंकायें व्यक्त की थीं। उन शंकाओं के निवारणार्थ श्रीमाली जी ने जो उत्तर दिए, वे पत्रिका पाठकों के लिए भी उपयोगी होंगे, ऐसा समझ कर उन्हें इस अंक में प्रकाशित किया जा रहा है।

इस स्तोत्र विशेषांक के लिए यह सामग्री विशेष रूप से उपयोगी है।

प्रश्न—आपकी पुस्तक 'स्तोत्र शक्ति' पढ़ी। स्तोत्रों के चमत्कारिक प्रभावों को पढ़कर एक दम से उनकी सत्यता पर विश्वास नहीं हुआ। क्या वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह समझाने की कृपा करेंगे कि स्तोत्रों के प्रभावों का आधार क्या है? किस प्रकार वे भव-भय मिटाने में समर्थ होते हैं?

उत्तर—हम अपने मुंह से जो भी शब्द निकालते हैं, वह वायुमण्डल में गुंजरित रहता है, क्योंकि इस वायुमण्डल से उत्पन्न ध्वनि कभी भी समाप्त नहीं होती। इसीलिये आज वैज्ञानिक इस बात के लिये प्रयत्नशील हैं कि यदि ध्वनि समाप्त नहीं होती, वह शाश्वत रहती है तो श्री कृष्ण और अर्जुन का संवाद तथा वह ध्वनि भी वायुमण्डल में हो गतिशील होगी। यदि ध्वनि की उस 'देव' को पकड़ा जा सके तो उस संवाद को भी सुना जा सकता है।

हम जो कुछ बोलते हैं उसका एक निश्चित प्रभाव होता है, यह प्रभाव ही मानव के लिये सार्थक-निरर्थक हो सकता है। उदाहरण के लिये यदि कोई व्यक्ति हमारे सामने पांच फीट की दूरी पर बैठा है और हम विशेष शब्दों का संयोजन कर उसे गालियां दें तो वह दूर बैठा व्यक्ति भी क्रोधित हो जायेगा, उसकी नसें खिंच जायेंगी, चेहरा तमतमा जायगा, हाथ की मुट्ठी बंध जायेगी और वह हमें मारने के लिये उद्यत हो जायगा। यह सब क्या है, हमने उस व्यक्ति को शरीर से स्पर्श तक नहीं किया फिर वह उत्तेजित क्यों हो गया? इसके मूल में शब्दों का प्रवाह ही तो था।

इसी प्रकार यदि किसी सामने वाले व्यक्ति से मधुर बातें करते हैं तो उसका चेहरा खिल जाता है, और वह विरोधी होते हुए भी हमारा साथ देने को तैयार हो जाता है।

इन सब के मूल में ध्वनि-प्रवाह ही है। विशेष शब्दों के संयोजन से एक विशेष ध्वनि का निर्माण होता है और वह ध्वनि ईथर के माध्यम से प्रवहित होकर सामने वाले व्यक्ति और उसके विचारों से टकराती है। फलस्वरूप उसके मानस को वह ध्वनि आन्दोलित कर देती है और मनोवांछित प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम हो जाती है।

स्तोत्र भी एक प्रकार से विशेष शब्दों का संयोजन है जिसके माध्यम से एक विशेष प्रकार की ध्वनि-संयोजन तैयार होकर प्रवाहित होता है और सामने वाले व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

हमारी आंखें केवल स्थूल पदार्थों को ही देख पाती हैं, सूक्ष्म मनुष्यों को देखना उनके वश को बात नहीं है। इसलिये इस विश्व में और वायुमण्डल में भूत, प्रेत, पिशाच, गन्धर्व और देवता विचरण करते हैं परन्तु हमारी स्थूल आंखें उन्हें नहीं देख पातीं, पर इसका तात्पर्य यह नहीं कि उनका अस्तित्व ही नहीं है।

इसीलिये जब हम किसी विशेष देवता को प्रसन्न करने के लिए तथा मनोवांछित फल प्राप्त करने के लिए स्तोत्र पाठ करते हैं तो उस शब्द-संयोजन से एक विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है जो इस जगत में स्थित संबंधित देवताओं की भावनाओं को उद्वेलित-आन्दोलित करता है और देवता उस प्रभाव से हमारे अनुकूल हो कर हमें मनोवांछित फल देने में सहायक हो जाते हैं।

प्रश्न—इसका तात्पर्य यह हुआ कि स्तोत्र से संबंधित ध्वनि प्रवाह बनाने के लिये यह आवश्यक है कि स्तोत्र का सस्वर पाठ किया जाय?

उत्तर—हां, शब्द लहरियां दो प्रकार से बनती हैं। मानसिक स्वर लहरी तथा वायु स्वर लहरी। हम अपने मस्तिष्क में जो कुछ सोचते हैं वह शारीरिक ऊर्जा के माध्यम से बाहर प्रस्फुटित होता है और उससे एक विशेष ध्वनि-लहर बनती है तथा सामने वाले व्यक्ति के मानस को आन्दोलित-प्रभावित करती है। इसी प्रकार हम जो कुछ बोलते हैं उससे भी ध्वनि लहर बनकर प्रवहित होती है और हम जिसे प्रभावित करना चाहते हैं वह प्रभावित हो पाता है।

स्तोत्र का मूल आधार स्वर लहरी है, इसलिये स्तोत्र का मानसिक जप उचित एवं अनुकूल नहीं। स्तोत्र का उच्चारण करना, और सही प्रकार से उच्चारण करना आवश्यक है। ऐसा करने पर ही निश्चित प्रभाव उत्पन्न हो पाता है। परन्तु कहने और चिल्लाने में अन्तर है। इस बात का ध्यान रखा जाय कि स्तोत्र का अर्थ प्रार्थना है, अनुनय है, रिक्वेस्ट है और प्रार्थना, नम्र विनीत भाव से की जाती है, चिल्ला कर अनुनय या रिक्वेस्ट नहीं की जाती।

इसलिये स्तोत्र का सस्वर पाठ होना आवश्यक है परन्तु उसके मूल में नम्रता अत्यावश्यक है। जब हम संबंधित देवता से जुड़कर कोई बात कहेंगे तभी तो उसका प्रभाव हो सकेगा। उदाहरण के लिये कोई भिखारी हमारे सामने चिल्ला कर दबाव के स्वर में भीख मांगे तो हम पर अनुकूल प्रभाव नहीं हो सकेगा, हम उसको फटकार कर भगा देंगे। परन्तु इसके विपरीत यदि भिखारी अनुनय पूर्वक, नम्रता से अपनी बात दोहराता है, तो उसका हमारे चित्त पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है और हम उसकी सहायता करने को तैयार हो जाते हैं।

प्रभु तो दाता हैं, हम उसके सामने भिखारीवत् ही हैं। हमें तो अनुनय-विनय से श्रद्धा से, प्रेम से, और नम्रता से अपनी बात उनके सामने रखनी है। अपने विचारों

को इस तरीके से रखना है कि वह प्रभावित हो जाय, उसका हृदय पसीज जाय और वह हमारी सहायता के लिये तैयार हो जाय।

इसलिये स्तोत्र पाठ सस्वर धीमी गति से और मनोवांछित प्रभाव उत्पन्न करते हुए होना चाहिए, तभी उसमें हमें सफलता मिल सकती है।

प्रश्न—अधिकतर स्तोत्र संस्कृत में है। आज के युग में अधिकांश लोगों को संस्कृत का सही उच्चारण ज्ञात नहीं है, ऐसी स्थिति में यदि संस्कृत का हिन्दी अनुवाद पढ़ लिया जाय तो क्या उसका भी वही प्रभाव होना संभव है?

उत्तर—जैसा कि मैंने ऊपर बताया हम प्रभु के सामने अपनी बात अवश्य रख रहे हैं परन्तु साथ ही साथ एक विशेष प्रकार की स्वर लहरी भी तैयार कर रहे हैं जो कि उनके हृदय को प्रभावित कर सके। एक विशेष स्वर लहरी तो विशेष शब्द के द्वारा ही सम्भव है। जब तक उस मूल शब्द का उच्चारण नहीं होगा तब तक वह मूल ध्वनि प्रभाव उत्पन्न होना भी सम्भव नहीं है।

अतः स्तोत्र के मूल पाठ ही पढ़े जाने चाहिए तभी उनका प्रभाव संभव है। मूल स्तोत्र का हिन्दी अनुवाद या अन्य भाषाओं में किया हुआ अनुवाद मूल भाव को सही रूप में व्यक्त नहीं कर सकता, इसलिये अनुवाद से हम उस प्रभाव को उत्पन्न नहीं कर सकते।

यदि पाठक को संस्कृत का ज्ञान नहीं है तो यह ज्ञान प्राप्त करना असंभव नहीं है। थोड़े से अभ्यास से यह ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। स्तोत्र पाठ मूल संस्कृत में करने से ही मनोवांछित प्रभाव सम्भव है।

प्रश्न—आपने स्तोत्र पाठ में सस्वर शब्द का प्रयोग किया, क्या स्तोत्र पाठ सस्वर ही होना अनिवार्य है?

उत्तर—स्तोत्र का आधार गेय है। कोई भी प्रभाव तभी उत्पन्न हो सकता है, जब उसे विशेष लय और ध्वनि के साथ व्यक्त किया जाय।

यदि कोई वीर रस की कविता कमजोर और मरी हुई आवाज में बोले तो क्या उसका प्रभाव हो सकता है? हास्य रस की कविता जोर से चिल्ला कर वीर रस के स्वर में पढ़ी जाय तो क्या उसका प्रभाव संभव है? इसी प्रकार आधारभूत तथ्य यह है कि शब्द में जो भावना हो, उस भावना के अनुरूप ही स्वर का उतार-चढ़ाव होना चाहिए, तभी उसका प्रभाव संभव है।

यदि स्तोत्र करुणा पूर्ण है तो उसे चिल्ला कर वीर रस के स्वर में पढ़ने से मनोनुकूल प्रभाव संभव नहीं, उसे तो विगलित स्वर में करुणपूर्ण ध्वनि में पढ़ना ही मनोवांछित है। जब स्तोत्र पढ़ते पढ़ते आप स्वयं भावनाओं से भीग जायं, आपकी आंखें भर जायं, आपका गला रुंध जाय और आप ईश्वर से एक रस हो जायं तभी आप समझें कि आप सही रूप से उच्चारण कर रहे हैं, सही तरीके से स्तोत्र पाठ हो रहा है।

गेय का तात्पर्य कोई शास्त्रीय संगीत की तरह पढ़ने से नहीं है। स्तोत्र पाठ करने के लिए सा रे ग म प आदि ध्वनियों का शास्त्रीय ज्ञान होना अनिवार्य नहीं है, अनिवार्यता है हृदय रस के प्रवाहित होने की, अनिवार्यता है भावनाओं में डूब जाने की, आवश्यकता है ईश्वर से एकाकार हो जाने की और जब ऐसा हो जायगा तो आपका स्तोत्र और आपका हृदय सही रूप में धन्य हो सकेगा।

प्रश्न—उस स्तोत्र में एकाकार तो तभी हुआ जा सकता है जब उस स्तोत्र का अर्थ ज्ञात हो। जब तक उसकी मूलध्वनि, उसकी मूल भावना ज्ञात नहीं होगी तब तक व्यक्ति उसमें एकाकार कैसे हो सकेगा? तो क्या किसी भी स्तोत्र का पाठ करते समय उसके अर्थ का ज्ञान होना अनिवार्य है?

उत्तर—हां, अनिवार्य है। जब तक साधक स्तोत्र के अर्थ को उसके मूल आधार को, उसकी मूल भावना को नहीं समझेगा तब तक वह उसमें एकाकार कैसे हो सकेगा? उस स्तोत्र में भली प्रकार से कैसे रम सकेगा, उस स्तोत्र से अपना तादात्म्य कैसे स्थापित कर सकेगा? अतः साधक के लिये यह आवश्यक है कि वह पढ़े जाने वाले स्तोत्र को समझे और उसके अर्थ को भली प्रकार से जाने, उसकी मूल भावना को पहिचाने। तभी उसका स्तोत्र पाठ सार्थक हो सकेगा। केवल मात्र तोते की तरह रट देने से या उच्चारण कर देने से पूर्ण सार्थकता सम्भव नहीं।

प्रश्न—स्तोत्र और मन्त्र में मूलभूत अन्तर क्या है?

उत्तर—मन्त्र एक विशेष प्रकार के शब्दों का संगुंफन है और उससे एक विशेष स्वर लहरी उत्पन्न होती है। मन्त्रों के शब्दों का संयोजन एक विशेष प्रकार से होता है अतः उसका प्रभाव भी अधिकारिक स्वर से निश्चित रूप से होता है। एक प्रकार से मन्त्रों के द्वारा संबंधित कार्य फोर्स से कराये जाते हैं। मन्त्र पाठ में हम आधिकारिक रूप से उपस्थित होते हैं। हम जो कुछ चाहते हैं वह होना ही चाहिए इसीलिये मन्त्र में सही प्रकार से उच्चारण आवश्यक है पर यह आवश्यक नहीं है कि हमें मन्त्र के अर्थ ज्ञात हो। जब मन्त्र पाठ करते हैं तो उसके अर्थ को मानस में नहीं रखा जाता, केवल मात्र उसके प्रभाव को मानस में रखा जाता है कि इसके द्वारा इतनी अवधि में यह कार्य होना ही है।

इसके विपरीत स्तोत्र में एक विशेष प्रकार की स्वर लहरी उत्पन्न करने की भावना होती है, परन्तु उसमें फोर्स नहीं होता। उसमें याचना होती है, हम याचना के द्वारा उस कार्य को सम्पन्न कराने की इच्छा रखते हैं।

अतः स्तोत्र पाठ में यदि त्रुटि भी हो जाती है, तो कोई अन्तर नहीं पड़ता। ज्यादा से ज्यादा यह होगा कि हम जो कुछ, जिस प्रकार से चाहते हैं वह उस प्रकार से नहीं हो सकेगा। पर इसके विपरीत मन्त्र उच्चारण में यह छूट नहीं है। यदि गलत ढंग से या गलत प्रकार से मन्त्र उच्चारण होता है, तो उसका विपरीत प्रभाव निश्चित रूप से पड़ता है और हमें उस विपरीत प्रभाव को भोगना ही पड़ता है, अतः मन्त्र उच्चारण करते समय विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है, ज्यादा सावधानी की जरूरत है।

प्रश्न—एक भक्त के दृष्टिकोण से स्तोत्र या स्तुति शब्द कहते ही दो अलग-अलग अस्तित्वों का भान होता है-एक स्तुति करने वाला तथा दूसरा वह जिसकी स्तुति की जा रही है। जीवन और ब्रह्म की एकता में विश्वास करने वाले ज्ञानमार्गी या शरीर में निहित ऊर्जा की शक्ति के विकास में विश्वास करने वाले तांत्रिकों के लिये क्या स्तोत्रों का उतना ही महत्व है जितना भक्त मार्गी साधकों के लिये? स्तोत्रों के सम्बन्ध में भक्त, ज्ञान मार्गी और तांत्रिक की भावभूमियों की विवेचना करें।

उत्तर मैं इसका उत्तर थोड़े-बहुत रूप में ऊपर दे चुका हूं। स्तोत्र या स्तुति प्रार्थना है,

इसमें फोर्स नहीं होता । स्तोत्र के द्वारा हमारा कार्य होगा ही, ऐसा नहीं माना जा सकता, क्योंकि स्तुति का आधार हृदय होता है । जिस स्तोत्र में जितना ही ज्यादा हृदय-रस मिलेगा उसका प्रभाव उतना ही ज्यादा हो सकेगा, अतः भक्त के लिये तो स्तोत्र आधारभूत धारणा है, वह तो स्तुति के द्वारा ही प्रभु के चरणों में लीन होने को कटिबद्ध रहता है, उसके मन में न तो फोर्स होता है और न ही दवाव । वह जबरदस्ती करना चाहता ही नहीं । उसकी तो मूल भावना ही यह रहती है कि मैं दीन-दरिद्री और प्रभु के दरवाजे पर पर पड़ा रहने वाला भिखारी हूं, जब भी प्रभु की इच्छा होगी वह मुझ पर कृपा कटाक्ष करेंगे । ऐसी दृष्टि से भक्त के लिये स्तुति आधारभूत है । परन्तु तांत्रिक का मूल आधार तन्त्र-प्रक्रिया होती है, वह रिक्वेस्ट में विश्वास नहीं करता, वह तो आंख में आंख डाल कर अपना कार्य सम्पन्न करना चाहता है । इसलिये उसके लिये स्तोत्रकोई मायने नहीं रखता, क्योंकि स्तोत्र का आधार ही विगलित स्वर है जब कि तन्त्र का आधार हठ पूर्वक कार्य सम्पन्न कराना है । जहां तक ज्ञान मार्ग का प्रश्न है, वह दोनों ओर खुला है, वह चाहे तो भक्त की तरह स्तोत्र के द्वारा अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सकता है और चाहे तो तन्त्र प्रक्रिया के द्वारा अपने कार्य की सिद्धि प्राप्त कर सकता है ।

इसलिये अघोरी, हठयोगी, मन्त्र शास्त्री, और तांत्रिकों के लिये स्तोत्र का कोई महत्व नहीं होता । यह अलग बात है कि एक तांत्रिक भी दूसरे रूप में मनुष्य होता है । उसके मन में भी कोमल भावनाएं होती है और जब वह प्रभु के सामने कोमल भावनाओं के साथ बैठता है तब वह भक्त होता है और तब उसके लिये भी स्तोत्र महत्वपूर्ण हो जाता है । युद्ध में तलवार से सिर काटने वाला योद्धा भी घर आकर कोमल हृदय वाला मानव बन जाता है और बच्चे के पांव में कांटा चुभा हुआ देखकर उसकी आंखों में भी आंसू आ जाते हैं, ऐसी स्थिति में वह कोमल हृदय मानव होता है ।

अतः जब मनुष्य हृदय की आवाज सुनता है, हृदय की भावनाओं से प्रभु तक पहुंचने की चाह करता है, तब उसके लिये स्तोत्र आधारभूत बन जाता है ।

प्रश्न—स्तोत्र से संबंधित अपने व्यक्तिगत अनुभव कृपा कर बतायें ।

उत्तर—मैंने स्तोत्र शक्ति में सैकड़ों अनुभव लिखे हैं जो मेरे भी हैं और उन लोगों के भी हैं जो मेरे सम्पर्क में आये हैं या जिन्हें मैंने स्तोत्रपाठ करने की सलाह दी है ।

मेरा यह अनुभव है कि स्तोत्र हमारे जीवन का आधारभूत तथ्य है । हम मूलतः मानव हैं और मानव वही कहला सकता है जिसमें दया, प्रेम करुणा, स्नेह और ममत्व हो । ये सारी प्रवृत्तियां स्तोत्र में निहित हैं या दूसरे शब्दों में स्तोत्र के माध्यम से ही हमारी इन प्रवृत्तियों का विकास हो सकता है और हम सही रूप में मानव कहलाने में समर्थ हो सकते हैं ।

स्तोत्र के द्वारा हम प्रभु के नजदीक होते हैं, उनकी आहट सुन सकते हैं, उनसे बातें कर सकते हैं और भय रहित होकर अपनी बात उसके कानों तक पहुंचा सकते हैं । जब हम स्तोत्रपाठ करते हैं तब सही शब्दों में मानव होते हैं और इस प्रकार हम एक नये वातावरण की सृष्टि उत्पन्न करने में सक्षम हो पाते हैं, जिससे यह संसार ज्यादा सुखी हो सकता है । ●

स्तोत्र पाठ से सम्बन्धित ज्ञातव्य तथ्य

स्तोत्रों से सम्बन्धित प्रस्तुत तथ्य सम्पूर्ण स्तोत्र-दर्शन का सार हैं । अनेक स्तोत्र उपलब्ध हैं परन्तु स्तोत्रों में निहित मूल भावना तथा उनकी पाठ-विधि पर अब तक बहुत कम प्रकाश डाला गया है । इन्हीं विचार-बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए डॉ० श्रीमाली की अमृत-वाणी को प्रस्तुत लेख में संकलित किया गया है ।

शास्त्रों में कहा गया है कि कलियुग में स्तोत्र सबसे अधिक शक्तिशाली और शीघ्र प्रभावकारी हैं । स्तोत्र पाठ करते समय साधक को कुछ विशेष सावधानियां बरतनी चाहिए । नीचे मैं शास्त्रों में वर्णित कुछ तथ्य स्पष्ट कर रहा हूं जो कि स्तोत्र-पाठ करते समय ध्यान में रखने चाहिए—

१—स्तोत्र हिन्दी या संस्कृत में हों तो यथासम्भव मूल पाठ को ही पढ़ना चाहिए । उनका अनुवाद पढ़ने से पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो पाता ।

२—हम ईश्वर के सामने बालक के समान हैं और यही भाव मन में रखकर स्तोत्र पाठ करना चाहिए । बालक यदि त्रुटियां करता है तब भी वह क्षम्य है, अतः हम भी इसी भावना को लेकर पाठ करें ।

३—शुद्ध होकर, शुद्ध आसन बिछाकर सामने उस देवता का विग्रह या मूर्ति रखकर स्तोत्र पाठ करें, यदि यह सम्भव नहीं हो तो आंख बन्द कर संबंधित देवता का ध्यान मानस में करके, फिर पाठ करना चाहिए ।

४—पाठ शुद्धता अति आवश्यक है अतः यथासम्भव स्तोत्र का पाठ शुद्ध रूप में करें, यदि संस्कृत का ज्ञान न हो तो किसी संस्कृत जानने वाले विद्वान् से वह स्तोत्र दो तीन-बार सुनकर शुद्ध पाठ ज्ञात कर लें और इसके बाद ही उसका पाठ करें ।

५—स्तोत्र पाठ गेय रूप में करें, अर्थात् यदि स्तोत्र को गाया जा सके तो गाकर ही पाठ करना चाहिए ।

६—पाठ करते समय क्रोध, आलस्य, निद्रा, तन्द्रा या अन्य व्यवधान नहीं होने चाहिएं । जब हम प्रफुल्लचित्त हो तभी हमें स्तोत्र पाठ करना चाहिए ।

७—स्तोत्र पाठ करते समय हमारे वस्त्र स्वच्छ और पवित्र हों ।

८—स्तोत्र पाठ सात्विक भाव से करें और इस बात का ध्यान रखें कि हम जो कुछ बोल रहे हैं, वह सत्य और प्रामाणिक रूप से बोल रहे हैं ।

९—स्तोत्र पाठ करने वाले साधक को उस स्तोत्र का अर्थ ज्ञात होना चाहिए, बिना अर्थ ज्ञात किये

मात्र तोते की तरह पढ़ने से कोई लाभ नहीं होता।

१०—स्तोत्र पाठ में मधुरता होनी आवश्यक है। उतावली में या समय की न्यूनता के कारण जल्दी-जल्दी स्तोत्र पाठ पूरा करना किसी भी दृष्टि से अनुकूल नहीं है।

११—स्तोत्र पाठ करते समय मुंह में कोई अन्य वस्तु नहीं होनी चाहिए और पाठ करते समय किसी प्रकार का नशा या व्यसन आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

१२—स्तोत्र पाठ प्रारम्भ करने के बाद तब तक आसन से नहीं उठना चाहिए जब तक वह स्तोत्र पूरा न हो जाय।

१३—स्तोत्र पाठ सरल चित्त से करना चाहिए। मन में किसी प्रकार का अहंभाव लेकर स्तोत्र पाठ करना वर्जित है।

१४—यदि हम सही रूप में, सही स्वर में तथा सही भावना से स्तोत्र पाठ करें तो स्तोत्र पाठ का तुरन्त प्रभाव होता है। स्तोत्र पाठ में यद्यपि त्रुटि क्षम्य है फिर भी यथासम्भव त्रुटि न हों, तो ज्यादा अच्छा है।

१५ स्तोत्र पाठ करते समय यदि सामने दीपक और अगरबत्ती प्रज्वलित हो तो अनुकूल रहता है।

१६—स्तोत्र पाठ करते समय उस स्तोत्र की भावना, मधुरता और रम्यता में पूरी तरह डूब जाना चाहिए। एक प्रकार से साधक को उस स्तोत्र का ही एक भाग बन जाना चाहिए। जब तक साधक स्तोत्र और संबंधित देवता से एक रूपता प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक उसका लाभ पूरी तरह प्राप्त नहीं हो पाता।

१७—अधिकतर स्तोत्र संस्कृत में हैं अतः साधक को पहले संस्कृत का सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।

१८—मन ही मन स्तोत्र पाठ करना वर्जित है। स्तोत्र पाठ उच्चारण के साथ करना चाहिए।

१९—नित्य नियमित रूप से स्तोत्र पाठ करने पर वह मन्त्र स्वरूप हो जाता है और उसका प्रत्यक्ष लाभ दिखाई देने लग जाता है, अतः स्तोत्र का चयन सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

२०—स्तोत्र पाठ सुखासन में बैठकर किया जाना चाहिए। इसके अलावा यदि साधक किसी अन्य आसन में बैठकर पाठ करना चाहे तो कोई हानि नहीं है।

२१—स्तोत्र पाठ करते समय सामने संबंधित देवता का चित्र, अगरबत्ती, दीपक व जल का पात्र हो तो ज्यादा अनुकूल रहता है, क्योंकि शास्त्रों के अनुसार अग्नि (दीपक), वरुण (जल पात्र) की साक्षी में ही स्तोत्र पाठ होना चाहिए।

२२—स्तोत्र पाठ प्रातः सायं या रात्रि किसी भी समय किया जा सकता है। इसके लिये कोई विशेष समय निश्चित नहीं होता। जब भी मन में तरंग उठे, जब भी स्तोत्र पाठ करने की इच्छा जाग्रत हो, जब भी प्रभु के समीप बैठने की भावना बने, तभी बैठकर स्तोत्र पाठ किया जा सकता है, परन्तु अपवित्र शरीर से या अपवित्र स्थान पर बैठकर स्तोत्र पाठ करना वर्जित है।

२३—स्तोत्र पाठ करते समय या इससे पूर्व भारी भोजन नहीं करना चाहिए। शरीर को स्वच्छ व हल्का बनाये रखना अनुकूल रहता है।

२४—कलियुग में स्तोत्र पाठ ही श्रेष्ठतम विश्राम माना गया है।

हम प्रार्थनामय बनें

मानव जीवन संघर्ष का जीवन है। जिस क्षण मानव जन्म लेता है उस क्षण से अन्तिम पड़ाव तक वह किसी न किसी के सहारे से जीवित रहता है। बाल्यावस्था में उसे अपने माता-पिता का आश्रय लेना पड़ता है। बड़ा होने पर उसे भाइयों, संबंधियों एवं रिश्तेदारों का सहारा लेकर काम चलाना पड़ता है और वृद्धावस्था में उसे अपने पुत्रों का आश्रय लेकर जीवन-निर्वाह करना पड़ता है। परन्तु ये सब आश्रय क्षणिक हैं। इन सहारों से व्यक्ति अपनी पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता। ये भौतिक आश्रय कुछ क्षणों के लिये भले ही उसे साहस एवं धीरज दे दें परन्तु फिर भी वह अपने आप को असुरक्षित एवं अपूर्ण ही अनुभव करता रहता है। पूर्णता तो उसे तभी मिलती है, जब वह चारों ओर से निराश होकर ईश्वर की शरण में जाता है, और पूर्ण रूप से अपने आपको ईश्वर के प्रति समर्पित कर देता है, तब उसे अनिर्वचनीय सुख एवं सन्तोष प्राप्त होता है।

मानव की यह कमजोरी है कि वह उच्च सत्ता का आश्रय न लेकर क्षणिक आश्रय में विश्वास करता है। वह अपने मित्रों की तरफ दौड़ता है, भाइयों से सहयोग की याचना करता है, पुत्रों से मदद पाने के लिये उनकी तरफ ताकता है। पर जब उसे यह समझ आ जाता है कि ये सहारे व्यर्थ हैं, इनसे मेरे जीवन की पूर्णता सम्भव नहीं, तभी वह प्रभु की शरण में जाता है। होना तो यह चाहिए कि वह प्रारम्भ से ही अपने आपको इस तरह से तैयार करे कि उसे इन क्षणिक आश्रयों में विश्वास ही न रहे, प्रभु को सर्वशक्तिमान समझे और जरा भी विपत्ति आने पर उसीसे प्रार्थना करे।

विश्वास और प्रार्थना का आपस में घनिष्ठ संबंध है। प्रार्थना तभी सफल हो सकती है जब हमें उसके प्रति पूर्ण विश्वास हो। यदि हमें पुत्र के प्रति विश्वास ही नहीं है तो उससे किसी भी प्रकार की प्रार्थना करना कोई अर्थ नहीं रखता।

जीवन में प्रार्थना ही सबसे मुख्य आधार है परन्तु इसके लिये यह जरूरी है कि हम जो प्रार्थना करे वह विश्वास पर आधारित हो। जब तक किसी कार्य में हमारा पूर्ण विश्वास नहीं होगा तब तक उस कार्य में जीवन्तता नहीं आ सकती। इस प्रकार से देखा जाय तो विश्वास और प्रार्थना पर्यायवाची शब्द है।

अमेरिका में फिलमोर दम्पति प्रार्थना के प्रतीक माने जाते हैं। उन्होंने अपने जीवन में अपने कार्यों से यह सिद्ध कर दिया कि यदि सही विश्वास से प्रार्थना की जाय तो असंभव कार्य को भी संभव किया जा सकता है। उन्होंने जीवन में जो कुछ भी किया, विश्वास और प्रार्थना के द्वारा ही किया। विश्वास और प्रार्थना के द्वारा उन्होंने रोगियों को रोग-मुक्त किया, दुखियों को आराम दिया, कठिनाइयों पर विजय पाई तथा वह सब कुछ प्राप्त किया जिसकी जीवन में आवश्यकता होती है।

चार्ल्स फिलमोर ९४ वर्ष तक जीवित रहे और इस अवधि में लगभग ६२ वर्ष प्रार्थना में बिताए।

उनका एक ही उद्देश्य था कि प्रार्थना और स्तुति के द्वारा अपनी आध्यात्मिक शक्ति को जाग्रत करना और इस शक्ति को विकसित कर संसार को सुखी बनाना। दिन रात के कई घंटे प्रभु के चरणों में ही व्यतीत होते थे। अपनी जो भी कठिनाई होती, अथवा जो भी आवश्यकता होती उसे लिख कर प्रभु के चरणों में रख देते और प्रार्थना के द्वारा उनका वह कार्य स्वतः ही हो जाता।

विश्वास उनके जीवन का अवलम्ब था। एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा। उन्होंने एक विद्यालय खोला था जिसमें अपंग और निर्धन बालक शिक्षा प्राप्त करते थे। उनके विद्यालय में लगभग ३०० छात्र थे। छात्रों के रहने, भोजन तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति फिल्मोर दम्पति ही करते थे। प्रातः सभी बालक दैनिक नित्य प्रक्रिया से निवृत्त होकर प्रार्थना सभा में जाते और लगभग दो घण्टे तक प्रार्थना होती। प्रार्थना के पश्चात् हस्त कला का कार्य होता और दिन के ठीक ११ बजे उन्हें भोजन प्राप्त होता। फिल्मोर दम्पति समय के पाबन्द थे। एक मिनट का भी विलम्ब उनकी प्रकृति के अनुकूल नहीं था।

एक दिन प्रातःकाल लगभग नौ बजे विद्यालय के मैनेजर ने देखा कि बच्चों के भोजन के लिये कुछ भी व्यवस्था नहीं है। न आटा है और न अन्य सामग्री। वह बड़ा चिन्तित हुआ। कोष में पैसा भी नहीं था। उसने डरते-डरते लगभग १० बजे फिल्मोर को सूचित किया। फिल्मोर उस समय प्रार्थना में बैठे थे। वे कुछ नहीं बोले। लगभग सवा दस बजे मैनेजर ने पुनः प्रार्थना की कि आज बच्चों के भोजन के लिये कोई व्यवस्था नहीं है। फिल्मोर ने उसे अपनी समस्या लिखकर लाने के लिये कहा। लगभग साढ़े दस बजे मैनेजर प्रार्थना पत्र लेकर पुनः फिल्मोर के पास पहुंचा जिसमें लिखा हुआ था कि आज ग्यारह बजे का भोजन बालकों को दिया जाना सम्भव न होगा क्योंकि किसी भी प्रकार का राशन स्टाक में नहीं है।

फिल्मोर ने वह प्रार्थना पत्र लेकर प्रभु के चरणों में रख दिया और कहा—तुम और हम कौन होते हैं जो बालकों को भोजन करा सकें। बालकों के भोजन की व्यवस्था ईश्वर करता है और उसे इस बात की चिन्ता है। समय पर वह कोई न कोई प्रबन्ध अवश्य कर देगा।

मैनेजर अविश्वास से हल्का सा मुस्कराया और पूछा—तो क्या ग्यारह बजे भोजन की घण्टी लगवा दूं?

फिल्मोर ने कहा—अवश्य! यदि बालक नित्य ग्यारह बजे भोजन करते हैं तो आज भी ग्यारह बजे ही भोजन करेंगे। इसमें पूछने की क्या बात है?

ग्यारह बजने में दस मिनट बाकी रह गये, तो मैनेजर पुनः फिल्मोर के कमरे में आया और पूछा—ग्यारह बजने में मात्र दस मिनट बाकी हैं और अभी तक मेरी नजर में कोई व्यवस्था नहीं हो पाई है। क्या किया जाय?

फिल्मोर ने एक क्षण मैनेजर की तरफ देखा और फिर कहा—तुम्हें ग्यारह बजे भोजन की घण्टी लगा देनी है। क्या करना है और क्या नहीं करना, यह ईश्वर जाने।

मैनेजर अविश्वास से हंसा और लौटकर चला गया। उसने ठीक ग्यारह बजे भोजन की घण्टी लगा दी। बच्चे अपने-अपने कमरों से थालियां ले-लेकर भोजन कक्ष में जाने लगे और पंक्ति-बद्ध बैठने लगे। फिल्मोर अभी तक अपने प्रार्थना कक्ष में ही थे। मैनेजर घबरा कर सोचने लगा—फिल्मोर अभी तक बाहर निकले नहीं है और अब इन बच्चों को मैं क्या परोसूंगा? संभवतः फिल्मोर का दिमाग खराब हो गया है।

तभी उसने देखा कि दरवाजे पर एक गाड़ी आकर रुकी है और उसमें से दो व्यक्ति कुछ टोकरे नीचे उतार रहे हैं। उन व्यक्तियों में से एक व्यक्ति मैनेजर के पास आकर बोला—यह भोजन मिस्टर हेमवुगं ने

भेजा है। उन्होंने आज एक विशाल पार्टी दी थी। काफी खाद्यान्न बच गया था अतः यह बाकी खाद्यान्न उनकी आज्ञा से फिल्मोर विद्यालय के बालकों के लिये लाया हूं।

उन व्यक्तियों ने टोकरों में से मिठाई, पूड़ी, साग इत्यादि खाद्य पदार्थ निकाले और व्यवस्थापक ने बच्चों में वितरित करना शुरू कर दिया। समय पर बच्चों ने भोजन कर लिया, उसके बाद भी काफी खाद्यान्न बचा रहा।

लगभग बारह बजे फिल्मोर ने मैनेजर को अपने कक्ष में बुलाया और पूछा—क्या बालकों ने ग्यारह बजे का भोजन कर लिया है? मैनेजर ने हां भरी तो फिल्मोर ने कहा—अब मेरे विद्यालय को आपकी आवश्यकता नहीं। आप अपना हिसाब आज ही ले लीजिये। जिस व्यक्ति को ईश्वर में विश्वास नहीं है, उसकी आवश्यकता मेरे विद्यालय में नहीं है।

यह घटना उनके जीवन की सच्ची घटना है। इस प्रकार की कई घटनाएं उनके जीवन में घटित हुई हैं जबकि प्रार्थना और विश्वास के बल पर उन्होंने सभी असंभव कार्य संभव कर दिखाये हैं। उनका कहना था कि ईश्वर से मिलने के लिये विधि-विधान पाखण्ड या अन्य सामग्री की आवश्यकता नहीं है। जिस प्रकार एक पुत्र अपने पिता के पास सहज रूप से जाता है, उसी प्रकार हमें भी निःसंकोच और सहज रूप से ईश्वर के पास पहुंचना चाहिए। तुम अपने आपको ईश्वर पर जितना आश्रित करोगे, उतना ही ज्यादा तुम्हारा कल्याण होगा। यदि तुमको वस्त्र की, मकान की, विद्या की अथवा अन्य किसी प्रकार की कोई आवश्यकता है तो तुम अपनी समस्या लेकर तुरन्त ईश्वर के पास पहुंच जाओ। मन में किसी प्रकार की हिचक, संकोच और झिझक रखने की आवश्यकता नहीं।

उनकी मान्यता थी कि ईश्वर संपूर्ण सद्गुणों के भण्डार हैं। वे साहस, शक्ति और सौन्दर्य के सागर हैं। हम ईश्वर की सन्तान हैं, अतः ईश्वर की प्रत्येक वस्तु पर हमारा अधिकार है। हमारे पास वही शक्ति, सौन्दर्य और स्वास्थ्य होना आवश्यक है जो ईश्वर के पास है। यदि ये वस्तुएं हमारे पास नहीं हैं तो इसका तात्पर्य है कि हमारा ईश्वर से सम्पर्क टूट गया है, हम उनसे अपने संपर्क को खो बैठे हैं। हम अभावग्रस्त क्यों हैं? भूखे और परेशान क्यों हैं? रोग हमारे पास आये ही क्यों? जब हम ईश्वर के हैं तो ईश्वर किसी भी प्रकार का अभाव हमारे जीवन में नहीं रख सकता। यदि हमारे पास सुन्दरता की कमी है तो हमें चाहिए कि हम ईश्वर के सौन्दर्य पर पूर्ण विश्वास करें। यदि हमारे पास धन का अभाव है तो हम प्रभु के अखण्ड भण्डार पर विश्वास रखें। उन से प्रार्थना के द्वारा सम्पर्क स्थापित करें और जब सम्पर्क स्थापित हो जायगा तब जीवन में किसी प्रकार का अभाव रह ही नहीं सकता।

श्रीमती फिल्मोर का अत्यधिक प्रभाव चार्ल्स फिल्मोर पर पड़ा। श्रीमती फिल्मोर प्रारम्भ में बहुत बीमार रहती थीं। ४१ वर्ष की आयु में ही वह जर्जर और कृशकाय हो गई थीं। उनका सन्दूक दवाइयों से भरा रहता था। डाक्टरों को समझ में नहीं आ रहा था कि श्रीमती मर्टिल फिल्मोर का इलाज किस प्रकार किया जाय? रोग का सूत्र ही उन्हें समझ में नहीं आ रहा था। कुछ लोगों ने हवा-पानी बदलने की राय दी, कुछ ने अन्य उपाय सुझाये, पर इनसे किसी प्रकार का कोई लाभ मर्टिल फिल्मोर को नहीं हुआ।

एक दिन एक मित्र ने सूचना दी कि आज पास के मैदान में एक संत का भाषण होने वाला है, आप दोनों को भी चलना चाहिए। श्रीमती फिल्मोर ने कहा—मैं मरने के करीब हूं, मेरा मन उदास है, मैं अस्वस्थ हूं, मैं जीवन में कभी भी स्वस्थ नहीं हो सकूंगी। मेरा सारा जीवन, मेरा एक-एक क्षण भार स्वरूप है, आदि आदि......पर फिल्मोर के आग्रह पर वह भाषण सुनने के लिये तैयार हो गईं। दोनों जब भाषण सुनकर लौट रहे थे तो उन्हें जीवन के बारे में एक नवीन

विचार प्राप्त हुआ। उनके तन और मन दोनों को नया आरोग्य मिला। संत के भाषण की उन पर अच्छी प्रतिक्रिया हुई। उन्हें एक विचार मिला, एक नया सम्बल मिला। यही नहीं, अपितु भावी जीवन के लिये उन्हें एक आधार मिला। भाषण से लौटने के बाद श्रीमती फिल्मोर ने सोचा कि यह मेरा शरीर ईश्वर का है। इसे नष्ट करने का मुझे क्या अधिकार है? मैं अस्वस्थ हूं, इसका एक कारण यह, कि मेरा सम्पर्क ईश्वर से टूट गया है। ईश्वर जब इतना सुन्दर और स्वस्थ है तो हम उनकी सन्तानें अस्वस्थ कैसे रह सकती हैं? मैं ईश्वर की सन्तान हूं। अतः मुझ में कोई रोग नहीं हो सकता........। उनका मन बारम्बार इसी प्रकार की आवृत्ति करने लगा। यह आवृत्ति एक प्रकार से नई चिनगारी थी जो उनके हृदय में बैठ गई। दूसरे दिन का प्रभात उनके लिये वरदान स्वरूप था। उन्हें अपने मन में एक नया उल्लास, एक नया आनन्द अनुभव होने लगा। वह एक कमरे में बैठ गईं, और अपने आपको पूर्ण रूप से ईश्वर के चरणों में समर्पित कर दिया—निश्छल रूप से, एकनिष्ठ भाव से।

इस विश्वास से श्रीमती मर्टिल का सारा जीवन ही बदल गया। यह विश्वास उनके हृदय में शरीर के एक-एक कण में व्याप्त होने लगा। परमेश्वर की प्रार्थना में उनका विश्वास प्रबलतम हो गया। इस विश्वास और नित्य प्रार्थना का चमत्कारी फल यह हुआ कि डेढ़ वर्ष के भीतर-भीतर वह पूर्णतः स्वस्थ हो गईं। उनके शरीर में रोग नाम की कोई वस्तु नहीं रही। उनका सन्दूक जो दवाओं से भरा रहता था, खाली हो गया। जब रोग चला गया तो उनके हृदय का भय भी समाप्त हो गया। शरीर में नया निखार आया, चेहरे पर स्वास्थ्य की छाप प्रत्यक्ष दिखाई देने लगी। डाक्टरों के अनुसार यह एक चमत्कार ही था मगर यह चमत्कार प्रार्थना से संभव हो सकता है इसे मानने के लिये वे तैयार नहीं थे। उनके पूरे चिकित्सा विज्ञान में ईश्वर नाम की कोई वस्तु नहीं थी, पर श्रीमती फिल्मोर इसका उदाहरण थीं। उन्होंने पिछले डेढ़ वर्ष में दवा की एक टिकिया तक नहीं ली थी, और इस समय वह जितनी स्वस्थ और निर्मल थीं वैसा उन्हें स्वप्न में भी अनुमान नहीं था। इसके बाद तो पति-पत्नी का जीवन प्रार्थना और विश्वास में ही व्यतीत हुआ। हजारों व्यक्तियों की उन्होंने सेवा की और सैंकड़ों लोगों को कष्टों से छुटकारा दिलाया।

श्री फिल्मोर का एक पड़ोसी था जिसका नाम केस्के था। वह पंगु था। उस समय उसकी अवस्था लगभग ४५ वर्ष की थी। जब वह मात्र १६ वर्ष का था तभी लकवे के कारण उसके दोनों पांव बेकार हो गए थे। चलना उसके लिये असंभव था। एक गाडी पर बैठकर ही वह इधर-उधर जा सकता था। संसार का वास्तविक सौन्दर्य और वास्तविक सुख पाने से वह वंचित था।

एक दिन जब श्रीमती फिल्मोर उसके घर गईं तो उन्होंने केस्के से कहा—तुम प्रार्थना क्यों नहीं करते? निश्चय ही प्रार्थना से तुम स्वस्थ हो सकोगे और अपने पैरों से चल सकोगे। हम ईश्वर की सन्तान हैं। ईश्वर स्वस्थ है तो हम अस्वस्थ रह ही नहीं सकते। ईश्वर ने हमें अस्वस्थ रहने के लिये नहीं भेजा है। धीरे-धीरे केस्के के दिमाग में विश्वास जमने लगा और उसने तथा श्रीमती फिल्मोर ने सामूहिक रूप से प्रार्थना करनी प्रारम्भ की। लगभग छः महीने बाद ही केस्के के पांवों में हरकत होनी प्रारम्भ हो गई और अगले चार महीनों में केस्के अपने पांवों से साधारण व्यक्ति की तरह चलने लगा। यह प्रार्थना का एक प्रत्यक्ष चमत्कार था। लाखों अमेरिकी वासियों ने इस घटना को देखा। डाक्टरों ने केस्के के बारे में कह दिया था कि यह व्यक्ति इस जीवन में अपने पैरों से चल नहीं सकेगा। उनके लिये यह एक महान आश्चर्य था। उन अति बुद्धिवादियों को स्वीकार करना पड़ा कि वास्तव में विश्वास और प्रार्थना से अविश्वसनीय घटनाएं घटित हो सकती हैं।

धीरे-धीरे श्रीमती मर्टिल फिल्मोर तथा चार्ल्स फिल्मोर की ख्याति फैलने लगी। उनकी प्रार्थना सभाओं में ऊँचे समाज के व्यक्ति भी आने लगे। और इस प्रकार उन भौतिक सभ्यता से ग्रस्त लोगों के दिलों में ईश्वर के प्रति आस्था और विश्वास पैदा करने में चार्ल्स दम्पति सफल हुए।

चार्ल्स फिल्मोर स्वयं एक पैर से लंगड़े थे और एक सफल व्यवसायी थे। उन्होंने श्रीमती फिल्मोर के कार्यकलापों को देखा और उन्होंने इसका प्रयोग अपने ऊपर करने का निश्चय किया वे प्रतिदिन ४ से ६ घंटे तक प्रार्थना सभा में बैठते और अपना पूरा ध्यान अपने किसी एक अंग की ओर लगाकर उस अंग के स्वास्थ्य लाभ के लिये ईश्वर से प्रार्थना करते। धीरे-धीरे शरीर के विभिन्न अंगों पर उनका अधिक से अधिक नियंत्रण होने लगा। साथ ही उनके विश्वास और प्रार्थना से शरीर भी स्वस्थ होने लगा, और एक दिन लोगों ने देखा कि १८ वर्षों के बाद एक बार पुनः चार्ल्स फिल्मोर अपने पैरों से चलने में समर्थ हो सके हैं। उनका जो नकली पैर लगाया गया था, वह भी हटा दिया गया और वे एक स्वस्थ व्यक्ति की तरह चलने लगे।

इन दोनों ने जब प्रार्थना का यह चमत्कारी प्रभाव और महत्व देखा तो वे अपने घर में ही नित्य प्रार्थना-सभा आयोजित करने लगे। उनका विश्वास था कि हम ईश्वर के हैं ईश्वर हमारा अवश्य ही ध्यान रखेगा। उनका विश्वास था कि क्या मानव और क्या इतर प्राणी सभी उस परम पिता परमात्मा की पवित्र सन्तान हैं, अतः जो भी सच्चे मन से ईश्वर को स्मरण करता है उसकी प्रार्थना कभी भी निष्फल नहीं जाती।

श्रीमती मर्टिल फिल्मोर ने शान्त प्रार्थना करनी भी आरम्भ की। उनकी शान्त प्रार्थना सभाओं में सभी धर्मों के लोग सम्मिलित होते थे। श्रीमती फिल्मोर के हृदय में सभी लोगों के प्रति एक सा ही भाव रहता था। समय-समय पर उन्होंने साधना कक्षाएं भी चलाईं और इस प्रकार अमेरिका में फिल्मोर दम्पति ने जो आध्यात्मिक ज्योति जलाई वह आज भी अक्षुण्ण है।

प्रार्थना से सभी कार्य सहज ही सिद्ध हो सकते हैं। प्रार्थना के माध्यम से चिकित्सा करने वाले केनेडा निवासी अल्बर्ट ई० विलक का अनुभव है कि चिकित्सा कार्य में प्रार्थना से अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। हम जो कार्य औषधि से नहीं कर सकते उससे कई गुना अच्छा कार्य प्रार्थना के माध्यम से कर सकते हैं।

अमेरिका में एक पुस्तक प्रकाशित हुई है जिसका नाम "टीच अस टु प्रे" है। इस पुस्तक में किस प्रकार से प्रार्थना की जानी चाहिए, इसका विस्तृत वर्णन है। इसमें लेखक ने लिखा है कि चिकित्सक और बीमार दोनों को इस बात में विश्वास होना चाहिए कि प्रार्थना से हम अपने शरीर को सुदृढ़ बना सकते हैं। आरोग्य लाभ के लिये किसी पूजा या पाखण्ड की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि हमारा हृदय निष्कपट और पवित्र हो, तथा हम निश्छल हृदय से प्रभु को स्मरण कर सकें। प्रार्थना का प्रभाव उसी व्यक्ति के लिये संभव है जो बीमारी को भी ईश्वर का वरदान समझता है।

प्रसिद्ध पाश्चात्य चिकित्सक हीलर अलबर्ट ने हजारों लोगों पर परीक्षण करके यह सिद्ध किया है कि दूषित एवं अस्वास्थ्यकर भोजन से शरीर पर उतना अधिक प्रभाव नहीं पड़ता जितना दूषित मनोवृत्ति एवं कुत्सित विचारों से पड़ता है। प्रार्थना के माध्यम से उन्होंने हजारों लोगों के रोगों का निदान किया। अल्बर्ट विलक ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "प्रे" में एक उदाहरण देते हुए बताया है कि एक महिला अपने इकलौते पुत्र की बीमारी से अत्यन्त चिन्तित थी। उसको चिकित्सा पर उसने पानी की तरह पैसा बहाया पर बच्चे की स्थिति दिनों दिन बिगड़ती ही चली गई। जिस समय वह अपने बच्चे को लेकर मेरे पास आई, उस समय बच्चा अत्यधिक रुग्ण तथा कमजोर हो गया था। वह बड़ी उद्विग्न थी और यह आशंका उसे बराबर खाये

जा रही थी कि मेरा पुत्र अब ठीक नहीं हो सकेगा। मैंने उसे बिठाया। पहले इधर-उधर की बातें की, फिर उसके हृदय में ईश्वर के प्रति विश्वास पैदा किया और जब उसके हृदय में ईश्वर के प्रति विश्वास सुदृढ़ हो गया तो मैंने उससे कहा—आओ, अब हम दोनों इस बच्चे के स्वास्थ्य लाभ के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें। हम दोनों ने बैठकर शुद्ध एवं सात्विक रूप से प्रभु को स्मरण किया और बच्चे के स्वास्थ्य लाभ के लिये प्रार्थना की। हमें यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि सुस्त और बेजान सा बालक स्वस्थ होने लगा। उसने आंखें खोलीं और कई दिनों के बाद पहली बार दूध मांगा। उसके बाद हम नित्य केवल पन्द्रह मिनट के लिये उस बच्चे की स्वास्थ्य कामना के लिये प्रार्थना करते और मात्र पन्द्रह दिन में ही वह इतना स्वस्थ हो गया कि आसानी से चलने-फिरने लगा। अन्य चिकित्सकों तथा डाक्टरों के दल को यह विश्वास नहीं हो रहा था कि मात्र प्रार्थना से इतना आश्चर्यजनक परिवर्तन हो सकता है।

गठिया एक भयंकर रोग है। चिकित्सकों के अनुसार यह रोग मन की अशान्ति और परेशानी के कारण होता है। जिस व्यक्ति के चित्त में अत्यधिक चिन्ता होगी उसे गठिया रोग शीघ्र ही हो जायेगा। चिकित्सक मिस्टर बीयर्ड ने बताया है कि मैंने अपने जीवन में दो हजार से अधिक लोगों के गठिया का निदान एवं उपचार प्रार्थना के माध्यम से किया है और इसमें मैंने पूर्णतः सफलता प्राप्त की है। प्रसिद्ध न्यायाधीश लोवर वेन्डेल ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि मनुष्य जितना ज्यादा धन के पीछे उलझता है, हृदय रोग उसे उतने ही ज्यादा होते हैं। यदि व्यक्ति नित्य प्रातः केवल पन्द्रह से पच्चीस मिनट तक समस्त चिन्ताओं को छोड कर अपने स्वास्थ्य के लिये ईश्वर से प्रार्थना करे तो उसे जीवन में कभी भी हृदय रोग नहीं हो सकता और न किसी प्रकार की व्याधि से ग्रस्त होकर परेशान ही रह सकता है। हृदय रोग की अमूल्य औषधि विश्वास और प्रार्थना है।

इसी प्रकार रक्त-चाप, मधुमेह, कैंसर आदि भयंकर बीमारियां मात्र मानसिक चिन्ताओं से होती हैं। हम ज्यों-ज्यों भौतिक सुखों में उलझते जाते हैं त्यों-त्यों उन बीमारियों को भी पालते जाते हैं। चौबीसों घण्टों का हमारा चिन्तन मात्र भौतिक सुख तक ही सीमित रह गया है और इसलिये हमारे मन, मस्तिष्क एवं विचार ईश्वर से दूर हटते जा रहे हैं। यदि हम इन चौबीस घण्टों में केवल आधा घण्टा सांसारिक प्रपंचों से मुक्त होकर प्रभु के चरणों में चित लगायें और उनसे अपनी परेशानियां कहें, तो कोई कारण नहीं कि हम अपनी भौतिक समस्याओं से मुक्ति न पा सकें। पाश्चात्य साधकों और भारतीय साधकों का यह दृढ़ विश्वास रहा है कि प्रार्थना के माध्यम से हम असम्भव से असंभव कार्य को सम्भव कर सकते हैं। अनेक साधकों ने इस पर परीक्षण भी किये हैं और उनका यह विश्वास दृढ़ बना है कि रोग-मुक्ति, सन्तान-प्राप्ति शत्रु पराजय, परीक्षा में सफलता, दुष्ट आत्माओं से छुटकारा, मानसिक शान्ति तथा यश सम्मान की प्राप्ति आदि कार्य प्रार्थना के माध्यम से हम संभव कर सकते हैं और अपनी समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं।

यहां इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि प्रार्थना शुद्ध हृदय से हो और उस समय अपने आस-पास का वातावरण अत्यन्त पवित्र, सौम्य और सुरुचिपूर्ण हो। प्रार्थना का तात्पर्य केवल प्रार्थना है और कोई दूसरा चिन्तन नहीं। अतः प्रार्थना करते समय हम अन्य समस्याओं से मुक्त होकर निश्छल हृदय से ईश्वर के शरण में जायें फिर भले ही हम इसके लिए पन्द्रह मिनट का ही समय दे सकें। हम अपने निश्चय में तथा कार्य में अवश्य ही सफल हो सकेंगे।

महामना मालवीय प्रार्थना में अत्यधिक विश्वास करते थे। एक बार एक महात्मा ने इनसे पूछा कि कोई ऐसा उपाय बताइये कि जिससे मेरे जीवन की परेशानियां और समस्याएं मिट जायें।

मालवीय जी ने उत्तर दिया कि परेशानियां और समस्याएं तुम्हारे जीवन में इसलिये हैं कि तुम अभी तक वाणी से भले ही प्रभु के निकट हो पर मन और आत्मा से उसके निकट नहीं हो। जिस दिन तुम विगलित कंठ से प्रभु को स्मरण करोगे और अपने दुखों से मुक्ति पाने के लिये उससे प्रार्थना करोगे तब एक क्षण भी नहीं लगेगा और तुम प्रभु के सन्निकट पहुंच जाओगे। जब ऐसी स्थिति आ जायगी तब तुम में और प्रभु में किसी प्रकार का कोई भेद नहीं रहेगा और इस प्रकार तुम अपनी समस्याओं से मुक्ति पाकर अपने गन्तव्य स्थल तक पहुंच सकोगे।

महात्मा गांधी का सम्पूर्ण जीवन प्रार्थनामय रहा है। बापू कहते थे कि ईश्वर-प्रार्थना मानव जीवन का अनिवार्य अंग है। मनुष्य खाये बिना एक सप्ताह या इससे भी अधिक जीवित रह सकता है पर प्रार्थना के बिना वह एक क्षण भी कैसे जीवित रह जाता है, इस बात का मुझे आश्चर्य है। जिस दिन उनकी प्रार्थना समय पर नहीं हो पाती उस दिन उन्हें अत्यधिक व्यथा होती थी।

बापू का नियम था कि वे नित्य सोने से पूर्व प्रभु से प्रार्थना करके अपने अपराधों की क्षमा मांग लेते थे। एक बार रात्रि के समय सोते वक्त वे प्रार्थना करना भूल गये और उन्हें नींद आ गई। पन्द्रह मिनट बाद जब उनकी आंख खुली तो हड़बड़ाकर उठ बैठे। उनका सारा शरीर पसीना-पसीना हो गया। चित्त में व्याकुलता बढ़ गई और वे सोचने लगे कि मैं आज प्रभु को भूल कैसे गया। मुझसे ऐसा क्या अपराध बन गया कि प्रभु ने मुझे भुला दिया। हाथ-पैर धोकर उन्होंने प्रार्थना की और उसके बाद ही सुख की नींद सो सके।

बुद्ध ने एशिया में बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय की जो ज्योति जलाई, ईसा ने अपने सत्याचरण के द्वारा जो पथ प्रशस्त किया, बापू ने युग की नाड़ी पहचान कर जो रास्ता बताया उन सबके पीछे एक ही ध्येय है और वह है प्रार्थना। जितने भी महापुरुष हुए हैं उनका जीवन निश्चय ही प्रभु से सम्पर्कित रहा है। जिस क्षण प्रभु का और उनका मानसी तारतम्य टूट जाता, उस समय वे विकल हो उठते और जब तक वापिस वह तार नहीं जुड़ जाता तब तक उनके मन को चैन नहीं मिलता। वस्तुतः प्रार्थना मानव जीवन का अमोघ अस्त्र है और बिना प्रार्थना के व्यक्ति की सत्ता शून्य के बराबर है।

प्रार्थना का अर्थ प्रार्थना है। फिर भले ही यह प्रार्थना किसी भी भाषा और किसी भी राग में गाई जाय। कुछ लोग प्रार्थना को नाम-स्मरण या स्तुति भी कहते हैं। चाहे हम स्तुति करें या प्रार्थना करें इन सबके पीछे एक ही ध्येय है। चौबीसों घण्टे हम जो अपने आप में ही केन्द्रित रहते हैं, उससे परे हटकर कुछ क्षणों के लिये अपना सम्बन्ध परम विराट सत्ता से जोड़ें और इस प्रकार हम अपनी समस्याओं को उनके सामने रखें।

प्रसिद्ध संत मोरेश्वर ने अपने अनुभवों का निचोड़ स्पष्ट करते हुए एक बार बताया था कि जब भी कोई समस्या मेरे जीवन में आती थी तो मैं उस समस्या को लिखकर प्रभु के चरणों में रख देता था। उसके बाद मैं शुद्ध होकर प्रभु के सामने बैठ जाता और उसी समस्या को दो-तीन बार व्यक्त कर देता। जब मैं प्रार्थना से उठता तब मेरा मानस अत्यन्त हल्का होता और मुझे उस समस्या का समाधान प्राप्त हो जाता।

इस प्रकार के परीक्षण कई लोगों ने अपने जीवन में किये। जब भी कोई ऐसी गुत्थी हमारे जीवन में आए, जिसे हम आसानी से न सुलझा सकें या कोई ऐसी समस्या आ जाय जिससे पार पाना कठिन प्रतीत होता हो तो उस समस्या को या गुत्थी को कागज पर लिखकर ईश्वर के चरणों में रख देना चाहिए। इतना करने से आप अपने कर्तव्य से मुक्त हो जाते हैं। इसके आगे का काम प्रभु का है और यह स्वतः ही आपके मानस में कोई ऐसी राह सुझा देता है जिससे कि आप उस समस्या से मुक्ति पा सकें।

प्रभु का एक प्रसिद्ध नाम है—"भक्ताभीष्टफलप्रद"। इसका अर्थ है कि यदि हम शुद्ध हृदय से भगवान की प्रार्थना करें तो निश्चय ही भगवान हमारे अभीष्ट की पूर्ति करता है। इसका कारण यह है कि प्रभु और पुरुष में तात्विक दृष्टि से कोई अन्तर नहीं है। दोनों एक ही विराट सत्ता के दो छोर हैं। यदि तार के एक किनारे पर विद्युत प्रवाहित की जाय तो उसका करेंट दूसरे सिरे पर अवश्य ही पहुंच जाता है! इसी प्रकार जब व्यक्ति के सामने कोई परेशानी आती है और वह अपनी परेशानी को भगवान के सामने रख देता है तो निश्चय ही प्रभु उस समस्या का समाधान प्रस्तुत कर देते हैं। इस प्रकार हम आई हुई विपत्ति को टालकर जीवन में आनन्द-भोग कर सकते हैं। जिस वाणी के द्वारा हम आर्त कंठ से प्रभु को पुकारते हैं वही वाणी प्रार्थना कहलाती है, फिर भले ही यह वाणी गद्य में हो या पद्य में, सुललित कंठ से गाई हुई हो या टूटे-फूटे स्वरों में। आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी बात को आर्त कंठ से प्रभु के सामने पहुंचा दें, जिसमें किसी प्रकार का मैल न हो, द्वेष न हो, छल या कपट न हो और हमारी अति बुद्धिवादिता या चालाकी न हो।

मेरी आंखों देखी घटना है। जोधपुर के एक व्यापारी शक्कर के भाव गिर जाने से दिवालिया स्थिति में आ गए थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे एक दो-दिन में ही दिवाला निकालने वाले हैं। इससे पूर्व सेठजी का व्यापार अत्यन्त बढ़ा-चढ़ा था। उनकी दुकान की साख दूर-दूर तक फैली हुई थी। उन्होंने काफी प्रयत्न किया, इधर-उधर भाग दौड़ की, परन्तु कोई ऐसा रास्ता न निकल सका जिससे दिवालिया होने से बच जायें।

एक दिन जब कर्जदारों ने उन्हें जरूरत से ज्यादा परेशान किया तो वे पूजा गृह में जाकर प्रभु के सामने गिर गये। उनकी आंखों से आंसुओं की धाराएं बहने लगीं। मुंह से बोल फूट नहीं पा रहे थे, गले में हिचकियां भर गई थीं। उन्होंने अपनी व्यथा प्रभु के सामने रख दी और कहा कि या तो मुझे मृत्यु दे दे अथवा मुझे संकट से उबार ले।

यह प्रार्थना सच्चे हृदय से की गई थी। इसमें किसी प्रकार का छल नहीं था और न किसी प्रकार का दुराव-छुपाव। जब एक घण्टे बाद सेठजी पूजा गृह से बाहर आए तो बम्बई निवासी उनके मित्र रामदयालजी उपस्थित थे।

किसी समय सेठजी ने लगभग ढाई लाख रुपया रामदयालजी को उधार दिया था। मगर इसके बाद कुछ कारणों से आपस में गलत-फहमियां पैदा हो गई थीं। सेठजी ने उन पर ढाई लाख रुपयों के लिये मुकदमा दायर कर दिया पर वे हाई कोर्ट तक मुकदमा हार गये। और इस प्रकार सेठजी ने सोच लिया था कि अब यह रुपया मेरे जीवन में वापिस नहीं आ सकेगा।

इधर एक दिन रामदयालजी के दिमाग में आया कि यद्यपि मुकदमा हम जीत गए हैं परन्तु यह बात तो सत्य ही है कि उनसे हमने ढाई लाख रुपया लिया था जिसे हमने लौटाया नहीं है। अब मेरी अन्तिम अवस्था है, मरने के बाद मैं ईश्वर को क्या मुंह दिखाऊंगा? यह विचार आते ही उन्होंने उसी समय जोधपुर जाकर सेठजी को रुपया वापस करने का निश्चय किया और क्षमा मांगने का विचार मन में उत्पन्न किया।

ज्योंही सेठजी पूजा गृह से बाहर निकले, रामदयालजी ने लपक कर उनके चरण छू लिये। सेठजी ने उन्हें उठाकर अपने गले से लगा लिया और कहा—भाई रामदयाल, यह क्या गजब कर रहे हो? तुम आयु में मुझसे बड़े हो। चरण छूने का अधिकार तो मुझे मिलना चाहिए। सेठजी उन्हें अपने व्यक्तिगत कक्ष में ले गये। वहां रामदयाल जी ने थैली में से ढाई लाख के नोट निकाल कर उनके सामने रख दिये और कहा—यद्यपि मुकदमा मैं जीत गया हूं पर नैतिकता की दृष्टि से तुम हमेशा जीते हुए हो। तुम्हारा ढाई लाख मुझ पर बकाया निकलता था और जब तक ढाई

लाख तुम्हें नहीं दे देता तब तक मेरे मन को शान्ति नहीं मिल सकती। अब इन ढाई लाख रुपयों को स्वीकार करो और मुझे क्षमा कर दो।

प्रभु की महान कृपा को देखकर सेठजी गद्गद हो गए और उन रुपयों से उन्होंने अपनी दूकान की प्रतिष्ठा बनाये रखी।

आज सेठजी लाखों-करोड़ों से खेल रहे हैं, पर उस दिन के बाद से आज तक वे प्रभु को भूल नहीं सके हैं। चौबीस घण्टों में एक बार प्रार्थना के माध्यम से प्रभु से अपना सम्बन्ध अवश्य जोड़ लेते हैं। एक दिन बातों ही बातों में सेठजी ने मुझसे कहा था—पण्डित जी! उस दिन के बाद से मैं प्रभु को एक दिन के लिये भी नहीं भूला हूं। इस बीच मेरे जीवन में सैंकड़ों कठिनाइयां आई हैं, प्रभु ने एक दिन भी मुझे नहीं भुलाया और वे समस्याएं अपने आप सुलझती चली गईं।

यह उदाहरण इस बात का साक्षी है कि प्रार्थना में असीमित शक्ति भरी हुई है। यदि हम विश्वास और आस्था के साथ प्रार्थना करें तो कोई कारण नहीं कि हम अपने कार्य में सफलता प्राप्त न कर सकें।

प्रार्थना, कवच, स्तुति या स्तोत्र अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उनमें शब्दों का सगुंफन इस प्रकार से होता है कि वे अपने आप में एक समष्टिगत प्रभाव को उत्पन्न करने में सक्षम हो जाते हैं। सैंकड़ों-लाखों लोगों द्वारा यह प्रयोग अनुभूत है। इसके लिये कोई अन्य विधि-विधान या कर्म काण्ड की आवश्यकता नहीं है। किसी प्रकार के बाह्याचार की जरूरत नहीं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि स्तोत्र या प्रार्थना नियमित रूप से हो, शुद्ध एवं सात्विक रूप से हो, तथा विश्वास का आधार लेकर हो। यदि इस प्रकार से प्रार्थना की जाय तो हमारे जीवन में किसी प्रकार की कोई समस्या रह ही नहीं सकती।

इस अंक में हजारों स्तोत्रों एवं स्तुतियों में से छांटकर केवल उन स्तोत्रों का ही संकलन किया गया है जो कि अपने आपमें अद्वितीय हैं एवं कार्य साधन में सहायक हैं। इनका विधि पूर्वक पाठ करने से मनुष्य अपनी समस्त इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं। *

मंत्र-राज

"मैंने अपने जीवन में लगभग सभी देवताओं की साधनाएं सम्पन्न की है, और उनके प्रत्यक्ष दर्शन किये हैं, पर गणपति-साधना शीघ्र एवं निश्चित फलदायक अनुभव हुई है इसमें भी "गं गणपतये नमः" श्रेष्ठमंत्र है, प्रत्येक विषम परिस्थिति में इसका जप कल्याणकारी है। पति-पत्नी के मध्य मनमुटाव, पारिवारिक कलह, व्यापार में घाटा सरकारी झंझट, भीषण व्याधि आदि सभी लौकिक कष्टों को दूर करने में यह मंत्र रामबाण के समान है। इस मंत्र की नित्य १०८ मालाएं फेरें, और तब तक यह क्रम चालू रक्खें, जब तक कार्य सिद्ध न हो जाय। जो यज्ञोपवीत धारी न हो, उन्हें "ॐ" कार को छोड़कर केवल "गं गणपतये नमः" मंत्र का जप करना चाहिये, यह परम मंगलकारक मंत्र है।

—ना० द० श्रीमाली

गणेश स्तोत्र

स्मार्त पंचदेवोपासक होते हैं। ये पांच देव हैं—१. श्री विष्णु २. श्री शिव ३. श्री शक्ति ४. श्री सूर्य ५. श्री गणपति। इनमें से जो मात्र वैष्णव हैं वे विष्णु को ही मुख्य अंग मानकर पूजा करते हैं, इस प्रकार शैव शिव को, शाक्त शक्ति को, सौर्य सूर्य को और गणपत्य गणेशजी को मुख्य मानते हैं।

गणेश शब्द का मूल अर्थ है समस्त जीव जाति के स्वामी। कुछ लोगों का यह कथन है कि ये अनार्यों के देवता थे और बाद में आर्यों ने इन्हें पंच देवताओं में स्थान दिया। यह भ्रम विदेशियों द्वारा फैलाया हुआ है। हमारी सभ्यता के प्रारम्भ से ही जिन देवताओं की उपासना होती आई है उनमें गणेश सर्व प्रथम पूजनीय रहे हैं।

गणेश का वर्णन कई स्थानों पर आया है और अनुभवों से यह सिद्ध हुआ है कि गणपति की पूजा जीवन में मंगलकारी एवं अत्यन्त अनुकूल रहती है। जो व्यक्ति अन्य किसी देवी-देवताओं की पूजा नहीं कर सकता उसे गणेश पूजन अवश्य ही करना चाहिए। मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह रहा है कि यदि हम नित्य प्रातः उठते समय गणपति का स्मरण कर लें तो सारा दिन प्रसन्नता से बीतता है, और उस दिन विशेष शुभ फलदायक समाचार मिलते हैं।

बाबा हरिदास जी का मेरे जीवन में विशेष स्थान है। वे प्रबल गणेशोपासक थे। गणपति ही उनका इष्ट था और गणपति ही की छोटी सी मूर्ति को वे अपनी आंख की कोर में रखते थे जो कि राई के बराबर बड़ी थी। उन्होंने बताया कि कलियुग में शीघ्रातिशीघ्र फलदायक देव गणपति ही हैं। इसीलिये प्रत्येक कार्य के पूर्व गणपति की पूजा एवं ध्यान किया जाता है। वह कार्य सिद्ध हो ही नहीं सकता जिसके प्रारम्भ में गणपति पूजन न किया गया हो। जिस व्यक्ति को गणपति का इष्ट है, आर्थिक दृष्टि से उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता रह ही नहीं सकती।

आगे के पृष्ठों में मैंने गणपति से सम्बन्धित कुछ स्तोत्र दिये हैं जो संक्षिप्त होते हुए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। प्रातः उठकर यदि व्यक्ति इनमें से किसी एक स्तोत्र का भी पाठ कर ले तो उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। चिन्ता एवं रोग निवारण के लिये "मयूरेश-स्तोत्र" अत्यन्त समर्थ है। यह स्तोत्र मनुष्य को भक्ति मार्ग में लगाने वाला तथा समस्त प्रकार के पापों का नाश करने वाला है। मानसिक रूप से चाहे कितनी ही चिन्ताएं व्यक्ति को परेशान कर रही हों, यदि वह ११ दिन ही प्रातः उठकर "मयूरेश-स्तोत्र" का पाठ कर ले तो वह स्वयं ही आश्चर्यजनक रूप से अनुभव करेगा कि चिन्ताएं एवं समस्याएं स्वतः ही समाप्त हो रही हैं, और उन समस्याओं का सुलझाव अपने अनुकूल हो रहा है। यह शुभ स्तोत्र मानसिक चिन्ता तथा शारीरिक रोग को दूर करने में अत्यधिक सहायक एवं अनुकूल है।

मेरे एक मित्र कई वर्षों से सर्दी-खांसी से पीड़ित थे। उन्होंने सैकड़ों इंजेक्शन लगाये होंगे और न मालूम कितने ही वैद्यों की दवाइयां सेवन की होंगी पर रोग

नियन्त्रण में आ ही नहीं रहा था। एक दिन जब उन्होंने अपनी व्यथा मेरे सामने प्रकट की तो मैंने उन्हें "मयूरेश-स्तोत्र" का नित्य पाठ करने की सलाह दी। उन्होंने दूसरे ही दिन से मेरे बताये हुए तरीके से स्तोत्र का पाठ करना शुरू किया। उनका पुराना रोग मात्र ३० दिन के पाठ से ही समाप्त हो गया और आज लगभग तीन वर्ष बीत गए हैं उस रोग से सम्बन्धित कोई शिकायत उन्हें नहीं है।

मैंने इस स्तोत्र का पाठ करने की सलाह कई रोगियों को दी है और इसका आशाजनक फल प्राप्त हुआ है। कई भयंकर रोगों में भी इस स्तोत्र ने रामबाण की तरह काम किया है और उन्हें असाध्य रोगों से मुक्ति दिलाई है।

नित्य प्रातः स्नान कर शुद्ध रेशमी वस्त्र पहन कर गणपति की मूर्ति या उसके चित्र के सामने बैठकर श्रद्धापूर्वक एक बार "मयूरेश-स्तोत्र" का पाठ करें और इस प्रकार तब तक करते रहें जब तक कि वह कार्य सिद्ध न हो जाय। निश्चय ही इस स्तोत्र का पाठ फलदायक सिद्ध होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं।

संकटनाश के लिये गणपति से संबधित एक अन्य महत्वपूर्ण स्तोत्र 'संकटनाशन स्तोत्र' है। यह स्तोत्र भी अपने आप में महत्वपूर्ण है। व्यक्ति के जीवन में कितना ही भयंकर संकट क्यों न आया हो, यदि इस स्तोत्र का पाठ नित्य श्रद्धापूर्वक करे तो वह उस संकट से मुक्ति प्राप्त करने में सफल हो जाता है। इस स्तोत्र का प्रभाव मैंने यहां तक देखा है कि व्यक्ति जेल से मुक्त हो जाता है तथा मुकदमें में सफलता प्राप्त कर लेता है।

जिन व्यक्तियों पर मुकदमें चल रहे हों या शत्रु परेशान कर रहे हों तो उनके लिये यह स्तोत्र कल्प वृक्ष के समान है। उन्हें चाहिए कि इस स्तोत्र का पाठ नित्य पांच बार करें, और तब तक इस स्तोत्र का पाठ चालू रखें जब तक कि उन्हें अपने कार्य में सिद्धि प्राप्त न हो जाय। शत्रु विजय, मुकदमें में सफलता तथा बाधाओं की शान्ति के लिये इससे बढ़कर कोई अन्य स्तोत्र नहीं है।

गणेश पुराण में समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिये 'गणेशाष्टक' दिया गया है। यह गणेशाष्टक ऋद्धि-सिद्धि के लिये तथा व्यापारिक उन्नति के लिये अत्यन्त फलप्रद है। जिस व्यक्ति का व्यापार भली प्रकार न जम रहा हो या आर्थिक घाटा हो रहा हो अथवा वह आर्थिक दृष्टि से परेशानी अनुभव कर रहा हो तो उसे चाहिए कि वह गणेशाष्टक का पाठ नित्य करे। आर्थिक सम्पन्नता के लिये यह अष्टक अद्भुत चमत्कारी है। बिना कुछ भी व्यय किये केवल मात्र इसका पाठ ही व्यक्ति की सम्पन्नता में सहायक होता है। मैंने जिन-जिन व्यक्तियों को इस स्तोत्र का पाठ करने की सलाह दी है उन्हें आशाजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं। उनके पत्रों से ध्वनित होता है कि इस स्तोत्र का पाठ करने के बाद से उन्हें व्यापार में अद्भुत सफलता मिली है। बेकारी का दौर समाप्त हो गया है तथा आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहा है। मेरी तो यहां तक मान्यता है कि यदि व्यक्ति सभी दृष्टियों से सुखी, सफल एवं सम्पन्न हो तब भी उसे इस गणेशाष्टक का नित्य पाठ करना चाहिए। ऐसा करने से उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रह सकता।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिये मैंने इन्हीं पृष्ठों में गणपति का एक स्तोत्र दिया है जो अपने आप में संक्षिप्त होते हुए भी पूर्ण फलप्रद है। यदि व्यक्ति इस स्तोत्र की नित्य एक माला फेरे अथवा मात्र पांच पाठ ही नित्य करे तो उसे जीवन में पूर्ण लक्ष्मी प्राप्ति होती है, तथा आर्थिक जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता। मेरी स्वयं की दैनिक पूजा में यह स्तोत्र सम्मिलित है।

इसी क्रम में मैंने गणपति के दो अत्यन्त दुर्लभ स्तोत्र दिये हैं जिनमें से एक 'गणाधिप स्तोत्र' है। यह स्तोत्र श्री एवं पुत्र की प्राप्ति के लिये है। दूसरा स्तोत्र पुत्र की प्राप्ति के लिये हैं। ये दोनों ही स्तोत्र अत्यन्त

चमत्कारिक एवं पूर्ण लाभप्रद हैं। श्री एवं पुत्र की प्राप्ति के लिये ये स्तोत्र सुललित कंठ से गाये जाने चाहिये। शंकराचार्य विरचित यह स्तोत्र अत्यन्त दुर्लभ है तथा इसके नित्य पाठ से लक्ष्मी प्राप्त होती है तथा सन्तान सुयोग्य बनती है। यदि सन्तान की उन्नति में कोई बाधा अनुभव होती हो या उसे नौकरी नहीं मिल रही हो या मंद बुद्धि हो अथवा उसकी परीक्षा की सफलता में संदिग्धता हो तो व्यक्ति को चाहिए कि इस स्तोत्र का नित्य पाठ करे। कुछ ही दिनों में वह खुद अनुभव करेगा कि यह स्तोत्र इस प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिये अद्भुत लाभदायक है।

पुत्र की प्राप्ति के लिये जो स्तोत्र दिया गया है वह आकार में भले ही छोटा हो परन्तु उसका प्रभाव विशेष है। यद्यपि सन्तान प्राप्ति के लिये अन्य कई उपाय हैं परन्तु मेरे अनुभव में यह स्तोत्र अपने आप में ही पूर्ण लाभप्रद है। इस स्तोत्र का पाठ स्त्री या पुरुष दोनों में से कोई भी कर सकता है। यदि श्रद्धापूर्वक नित्य पाठ किया जाय तो उनके जीवन में पुत्र का अभाव रह ही नहीं सकता। इस प्रकार का प्रयोग मैंने अपने परिचितों से करवाया है और परिणाम पूर्णरूपेण अनुकूल रहे हैं।

निश्चय ही गणपति समस्त कामनाओं की सिद्धि देने में सहायक हैं। अतः यथासंभव हमें गणपति का पूजन या उनके स्तोत्रों का पाठ नित्य करना चाहिए। हमारे पूजा में चाहे अन्य स्तोत्र सम्मिलित न हों पर गणपति से संबंधित एक स्तोत्र अवश्य ही प्रारम्भ में रहना चाहिये जिससे कि हमारे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव या बाधा न रहे।

मंगल विधान के लिए

गणपतिर्विघ्नराजो लम्बतुण्डो गजाननः। द्वैमातुरश्च हेरम्ब एकदन्तो गणाधिपः ।।
विनायकश्चारुकर्णः पशुपालो भवात्मजः। द्वादशैतानि नामानि प्रातरुत्थाय यः पठेत् ।।

सर्वविध रक्षा के लिए

गणेशन्यास

श्री गणेशायनमः। आचम्य प्राणायामं कृत्वा। दक्षिणहस्ते वक्रतुण्डाय नमः। वामहस्ते शूर्पकर्णाय नमः। ओष्ठेविघ्नेशाय नमः। सम्पुटे गजाननाय नमः। दक्षिणपादे लम्बोदरायनमः। वामपादे एकदन्ताय नमः। शिरसि एकदन्ताय नमः। चिबुके ब्रह्मणस्पतये नमः। दक्षिणनासिकायां विनायकाय नमः। वामनासिकायां ज्येष्ठराजाय नमः। दक्षिणनेत्रे विकटाय नमः। वामनेत्रे कपिलाय नमः। दक्षिणकर्णे धरणीधराय नमः। वामकर्णे आशापूरकाय नमः। नाभौ महोदराय नमः। हृदये धूम्रकेतवे नमः। ललाटे मयूरेशाय नमः। दक्षिणबाहौ स्वानन्दवासकारकाय नमः। वाम बाहौ सच्चितसुखधाम्ने नमः।

चिन्ता एवं रोग निवारण के लिये

मयूरेशस्तोत्रम्

ब्रह्मोवाच

पुराणपुरुषं देवं नानाक्रीडाकरं मुदा। मायाविनं दुर्विभाव्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ।।
परात्परं चिदानन्दं निर्विकारं हृदि स्थितम्। गुणातीतं गुणमयं मयूरेशं नमाम्यहम् ।।
सृजन्तं पालयन्तं च संहरन्तं निजेच्छया। सर्वविघ्नहरं देवं मयूरेशं नमाम्यहम् ।।
नानादैत्यनिहन्तारं नानारूपाणि बिभ्रतम्। नानायुधधरं भक्त्या मयूरेशं नमाम्यहम् ।।
इन्द्रादिदेवतावृन्दैरभिष्टुतमहर्निशम्। सदसद्व्यक्तमव्यक्तं मयूरेशं नमाम्यहम् ।।
सर्वशक्तिमयं देवं सर्वरूपधरं विभुम्। सर्वविद्याप्रवक्तारं मयूरेशं नमाम्यहम् ।।
पार्वतीनन्दनं शम्भोरानन्दपरिवर्धनम्। भक्तानन्दकरं नित्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ।।
मुनिध्येय मुनिनुतं मुनिकामप्रपूरकम्। समष्टिव्यष्टिरूपं त्वा मयूरेशं नमाम्यहम् ।।
सर्वाज्ञाननिहन्तारं सर्वज्ञानकरं शुचिम्। सत्यज्ञानमयं सत्यं मयूरेशं नमाम्यहम् ।।
अनेककोटिब्रह्माण्डनायकं जगदीश्वरम्। अनन्तविभवं विष्णुं मयूरेशं नमाम्यहम् ।।

मयूरेश उवाच

इदं ब्रह्मकरं स्तोत्रं सर्वपापप्रनाशनम्। सर्वकामप्रदं नृणां सर्वोपद्रवनाशनम् ।।
कारागृहगतानां च मोचनं दिनसप्तकात्। आधिव्याधिहरं चैव भुक्तिमुक्तिप्रदं शुभम् ।।

संकटनाश के लिये

संकष्टनाशन स्तोत्रम्

नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्। भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये ।।
प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्। तृतीयं कृष्ण पिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ।।
लम्बोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च। सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टकम् ।।
नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम्। एक द गणपति द्वादशं तु गजाननम् ।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः। न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्। पुत्रार्थी लभते पुत्रान् मोक्षार्थी लभते गतिम् ।।
जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्। संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ।।
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्। तस्य विद्या भवेत् सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ।।

समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिये

गणेशाष्टक

जीवा यतो निर्गुणादप्रमेया गुणास्ते ।
यतोऽनन्तशक्तेरनन्ताश्च
यतो भाति सर्वं त्रिधा भेदभिन्नं सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
यतश्चाविरासीज्जगत्सर्वमेतत्तथाब्जासनो विश्वगो विश्वगोप्ता ।
तथेन्द्रादयो देवसंघा मनुष्याः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
यतो वह्निभानूद्भवो भूर्जलं च यतः सागराश्चन्द्रमा व्योम वायुः ।
यतः स्थावरा जंगमा वृक्षसंघाः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
यतो दानवाः किंनरा यक्षसंघा यतश्चारणा वारणाः श्वापदाश्च ।
यतः पक्षिकीटा यतो वीरुधश्च सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
यतो बुद्धिरज्ञाननाशो मुमुक्षोर्यतः सम्पदो भक्तसंतोषिकाः स्युः ।
यतो विघ्ननाशो यतः कार्यसिद्धिः सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
यतः पुत्रसम्पद् यतो वांछितार्थो यतोऽभक्तविघ्नास्तथानेकरूपाः ।
यतः शोकमोहौ यतः काम एव सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
यतोऽनन्तशक्तिः स शेषो बभूव धराधारणेऽनेकरूपे च शक्तः ।
यतोऽनेकधा स्वर्गलोका हि नाना सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥
यतोवेदवाचो विकुण्ठा मनोभिः सदा नेति नेतीति यत्ता गृणन्ति ।
परब्रह्मरूपं चिदानन्दभूतं सदा तं गणेशं नमामो भजामः ॥

श्री गणेश उवाच

पुनरूचे गणाधीशः स्तोत्रमेतत्पठेन्नरः । त्रिसंध्यं त्रिदिनं तस्य सर्वं कार्यं भविष्यति ॥
यो जपेदष्टदिवसं श्लोकाष्टमिदं शुभम् । अष्टवारं चतुर्थ्यां तु सोऽष्टसिद्धीरवाप्नुयात् ॥
यः पठेन्मासमात्रं तु दशवारं दिने दिने । स मोचयेद्बन्धगतं राजवध्यं न संशयः ॥
विद्याकामो लभेद्विद्यां पुत्रार्थी पुत्रमाप्नुयात् । वांछितांल्लभते सर्वानेक वशंतिवारतः ॥
यो जपेत् परया भक्त्या गजाननपरो नरः । एवमुक्त्वा ततो देवश्चान्तर्धानं गतः प्रभुः ॥

लक्ष्मी प्राप्ति के लिये

ॐ नमो विघ्नराजाय सर्वसौख्यप्रदायिने । दुष्टारिष्टविनाशाय पराय परमात्मने ॥
लम्बोदरं महावीर्यं नागयज्ञोपशोभितम् । अर्धचन्द्रधरं देवं विघ्नव्यूहविनाशनम् ॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हेरम्बाय नमो नमः । सर्वसिद्धिप्रदोऽसि त्वं सिद्धिबुद्धिप्रदो भव ॥
चिन्तितार्थप्रदस्त्वं हि सततं मोदकप्रियः । सिन्दूरारुणवस्त्रैश्च पूजितो वरदायकः ॥
इदं गणपतिस्तोत्रं यः पठेद् भक्तिमान् नरः । तस्य गेहं च देहं च स्वयं लक्ष्मीर्नमुंचति ॥

श्री एवं पुत्र की प्राप्ति के लिये

श्री गणाधिपस्तोत्रम्

सरागिलोकदुर्लभं विरागिलोकपूजितं सुरासुरैर्नमस्कृतं जरादिमृत्युनाशकम् ।
गिरा गुरुं श्रिया हरिं जयन्ति यत्पदार्चका नमामि तं गणाधिपं कृपापयः पयोनिधिम् ॥
गिरीन्द्रजामुखाम्बुजप्रमोददानभास्करं करीन्द्रवक्त्रमानताघसंघवारणोद्यतम् ।
सरीसृपेशबद्धकुक्षिमाश्रयामि संततं शरीरकान्तिनिर्जिताब्जबन्धुबालसंततिम् ॥
शुकादिमौनिवन्दितं गकारवाच्यमक्षरं प्रकाममिष्टदायिनं सकामनम्रपंक्तये ।
चकासनं चतुर्भुजैर्विकासिपद्मपूजितं प्रकाशितात्मतत्त्वकं नमाम्यहं गणाधिपम् ॥
नराधिपत्वदायकं स्वरादिलोक दायकं जरादिरोगवारकं निराकृता सुरव्रजम् ।
कराम्बुजैर्धरन्सृणीन विकारशून्यमानसैर्हृदा सदा विभावितं मुदा नमामि विघ्नपम् ॥
श्रमापनोदनक्षमं समाहितान्तरात्मना समाधिभिः सदार्चितं क्षमानिधिं गणाधिपम् ।
रमाधवादिपूजितं यमान्तकात्मसम्भवं शमादिषड्गुणप्रदं नमामि तं विभूतये ॥
गणाधिपस्य पंचकं नृणामभीष्टदायकं प्रणामपूर्वकं जनः पठन्ति ये मुदायुताः ।
भवन्ति ते विदाम्पुरः प्रगीतवैभवाः जनाश्चिरायुषोऽधिकश्रियः सुसूनवो न संशयः ॥

पुत्र की प्राप्ति के लिये

संतानगणपति स्तोत्रम्

नमोऽस्तु गणनाथाय सिद्धिबुद्धियुताय च । सर्वप्रदाय देवाय पुत्रवृद्धिप्रदाय च ॥
गुरूदराय गुरवे गोप्त्रे गुह्यासिताय ते । गोप्याय गोपिताशेषभुवनाय चिदात्मने ॥
विश्वमूलाय भव्याय विश्वसृष्टिकराय ते । नमो नमस्ते सत्याय सत्यपूर्णाय शुण्डिने ॥
एकदन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः । प्रपन्नजनपालाय प्रणतार्तिविनाशिने ॥
शरणं भव देवेश संततिं सुदृढां कुरु । भविष्यन्ति च ये पुत्रा मत्कुले गणनायक ॥
ते सर्वे तव पूजार्थं निरताः स्युर्वरो मतः । पुत्रप्रदमिदं स्तोत्रं सर्वसिद्धिप्रदायकं ॥

राम रक्षा स्तोत्र

प्रसिद्ध संत स्वामी महेशानन्दजी भारत की दिव्य विभूति हैं। उनसे इस जीवन में कई बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वे उच्च कोटि के साधक एवं योगी हैं। एक बार जब 'राम रक्षा स्तोत्र' की बात चल पड़ी तो उन्होंने अपने अनुभव बताते हुए कहा कि 'रामरक्षा स्तोत्र' इस युग का सर्वश्रेष्ठ स्तोत्र है। मैंने अपने जीवन में इस स्तोत्र का विभिन्न अवसरों पर विभिन्न स्थितियों में प्रयोग किया है और वे सभी प्रयोग शत-प्रतिशत सही रहे हैं। बिच्छू काटने से लेकर भयंकर विष का सेवन कर लेने की परिस्थितियों तक में इस स्तोत्र के पाठ से लाभ पहुंचा है। घोर आर्थिक सकट से ग्रस्त व्यक्ति इसका पाठ करके कुछ ही समय में ऋण से उबर जाते हैं। नौकरी छूटना, बुखार आना, जी मिचलाना, मुसीबत, व्यर्थ की परेशानी तथा संकटकालीन परिस्थितियों में मात्र एक दो पाठ से ही व्यक्ति परेशानी से मुक्त हो जाता है और उसे उसी समय नई राह सूझने लग जाती है।

एक बार महेशानन्दजी के परिचित श्री गंगा-शरण सिंह जी ने बताया कि मैं एक बार भयानक बीमारी से परेशान था और सैंकड़ों उपचार कराकर हार गया था। मन बड़ा उद्विग्न था और उन दिनों मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। साल भर बाद मेरी स्थिति ऐसी हो गई कि मैं आसानी से चल फिर भी नहीं सकता था। कमजोरी तथा बीमारी ने मेरे जीवन का आनन्द तथा प्रसन्नता समाप्त कर दी थी। एक दिन मैंने इसका जिक्र अपने एक मित्र से किया तो उन्होंने मुझे महेशानन्द जी से मिलने का उपाय सुझाया। मैंने जब महेशानन्दजी से मिलकर अपनी समस्या उनके सामने रखी तो उन्होंने मुझे अपने सामने बिठाकर इस स्तोत्र का पाठ किया और दस मिनट में ही मुझे अपूर्व मानसिक बल मिला। लगभग एक महीने बाद मैं इतना अधिक ठीक हो गया था कि मैं आसानी से मील भर टहल सकता था। मेरे जीवन की जिन खुशियों का अन्त हो गया था, वे पुनः लौट आईं।

एक दिन जब मैंने महात्माजी से इस स्तोत्र का रहस्य जानना चाहा तो उन्होंने मुझे बताया कि मैंने केवल मात्र राम रक्षा स्तोत्र का ही पाठ किया है। उन्होंने विस्तार से इसका अर्थ भी मुझे बताया, इसके बाद से 'राम रक्षा स्तोत्र' मेरे जीवन की पेटेन्ट दवाई बन चुकी है। जब भी मैं जीवन की किसी भी परेशानी से ग्रस्त होता हूं तो मैं 'राम रक्षा स्तोत्र' का पाठ करने लग जाता हूं। एक पाठ से ही मुझे अपूर्व मानसिक बल मिलता है तथा एक सप्ताह के भीतर-भीतर मैं उस समस्या पर विजय प्राप्त कर लेता हूं।

अब तो मैं स्वयं इस स्तोत्र का प्रयोग कई व्यक्तियों पर कर चुका हूं। भूत-प्रेत भगाने से लेकर विष उतारने तथा बीमारियों से मुक्ति दिलाने से लेकर ऋण उतारने की बाधाओं में लोगों को इसके पाठ की सलाह देता हूं। वे सदैव इससे लाभ उठाते हैं तथा सफलता प्राप्त करते हैं। इस स्तोत्र के एक-एक शब्द में अपूर्व शक्ति, साहस तथा अमूल्य गुण छिपे हुए हैं। इसके एक-एक शब्द में नई शक्ति है, नई क्षमताएं

हैं। बाधाओं पर विजय प्राप्त करने का यह अमोघ साधन है।

इसी प्रकार की चर्चा ध्वनि विज्ञानी मिस्टर रामानुजम से हुई तो उन्होंने बताया कि मंत्र में शब्दों का गुंफन ही अपने आप में महत्वपूर्ण है। स्तोत्र का प्रभाव या किसी मंत्र का प्रभाव इसलिये होता है कि उसके शब्दों का संयोजन अपने आप में विलक्षण होता है। उन्होंने बताया कि ध्वनि के माध्यम से कई असंभव कार्यों को संभव किया जा सकता है। युद्ध में बम के धमाके से आदमी बहरा हो जाता है, मकान की खिड़कियां टूट जाती है, तथा कई मकान नीचे गिर जाते हैं। अमेरिका में ध्वनि के प्रयोग से बड़े-बड़े तालाब खोद लिये जाते हैं तथा केवल मात्र, ध्वनि से बड़े-बड़े बांध तथा पहाड़ को इधर-उधर खिसकाया जाता है। उन्होंने बताया कि कई बार युद्ध में केवल बम की ध्वनि के आघात से व्यक्तियों को लकवा हो जाता है, उनके मुंह टेढ़े हो जाते हैं, नाड़ी-संस्थान कार्य करना बन्द कर देता है, गर्भवती स्त्रियों के गर्भ गिर जाते हैं, तथा हृदय रोग से पीड़ित व्यक्तियों का देहान्त हो जाता है। तेज आवाज से वायु मण्डल में तीव्र कम्पन्न पैदा होते हैं और जब वे कम्पन हमारे मस्तिष्क को स्पर्श करते हैं तो उसके दुष्प्रभाव से व्यक्ति पागल हो जाता है।

मंत्रों के प्रभाव के मूल में यही ध्वनि-विज्ञान कार्य करता है। मंत्रों के प्रत्येक अक्षरों का आपस में संबंध रहता है और उन अक्षरों के संयोग से एक विशेष ध्वनि का प्रादुर्भाव होता है और यही ध्वनि वायु-मण्डल में फैलकर इच्छित कार्य करने में सफल होती है।

'राम रक्षा-स्तोत्र' के प्रभाव के मूल में भी यही ध्वनि कार्य करती है। इस स्तोत्र में शब्दों का संयोजन अपने आप में विलक्षण एवं अप्रतिम है, जिसकी वजह से एक विशेष ध्वनि का निर्माण होता है और उस ध्वनि के कम्पन, बीमार के अचेतन मन में जाकर उसे साहस एवं दृढ़ता प्रदान करते हैं। इस आत्म बल से ही रोग दूर होते हैं तथा उसे आरोग्य, बल एवं शान्ति मिलती है। जो व्यक्ति जितनी ही पुष्टता तथा विश्वास से इस स्तोत्र का पाठ करता है उसे उतनी ही जल्दी सफलता प्राप्त होती है। यह अपने आप में एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, और यह प्रक्रिया लाखों लोगों ने लाखों बार आजमाई है तथा उन्हें अपने कार्यों में सफलता मिली है।

कई पुस्तकों तथा पत्र पत्रिकाओं में राम रक्षा स्तोत्र के फल के बारे में समाचार सुनने को मिलते रहते हैं। सैंकड़ों लोगों ने मुझे राम रक्षा स्तोत्र की सफलता के बारे में बताया है, उनमें से कुछ संस्मरण नीचे दे रहा हूं।

एक सज्जन को शराब की भयंकर लत लग गई। धीरे-धीरे यह आदत इतनी बलवान हो गई कि उसने अपना सारा धन इसके पीछे स्वाहा कर दिया। यही नहीं अपितु एक दिन ऐसा भी आया जब उसके पास पहनने को पूरे कपड़े तक भी नहीं बचे। उसकी पत्नी बड़ी धर्मपरायण थी, और इस परेशानी को भी प्रभु का प्रसाद समझकर सन्तुष्ट रहती थी, पर जब स्थिति सीमा से बाहर हो गई तो उसने किसी महात्मा से इसका हल पूछा। महात्मा ने उसे शान्त चित्त से 'राम रक्षा स्तोत्र' का पाठ करने की सलाह दी और उसने उसी दिन से इस स्तोत्र का विधि पूर्वक पाठ करना प्रारम्भ कर दिया।

कुछ ही दिनों बाद लोगों ने देखा कि वह व्यक्ति धीरे-धीरे सन्मार्ग पर आ रहा है और एक दिन उसने शराब की बोतल फोड़ कर यह प्रतिज्ञा कर ली कि आज से यदि मैं शराब पीऊंगा तो वह मेरे लिये गो-मांस बराबर होगी।

पता नहीं यह सद्बुद्धि उसे किस प्रकार से मिली, पर लोगों ने देखा कि उस दिन से उसने जो शराब छोड़ी तो वापिस भूलकर भी उसने शराब को मुंह नहीं लगाया और आज वह व्यक्ति अत्यन्त सफल

गृहस्थ-जीवन व्यतीत कर रहा है। उसकी पत्नी आज भी अपने पति के विचारों के परिवर्तित होने का श्रेय इस स्तोत्र को ही देती है।

● आर. सी. मेहता दिल्ली के सफल प्रशासक हैं उन्होंने अपने जीवन में कई खतरों का सामना केवल इस स्तोत्र के माध्यम से किया है।

उन्होंने अपने अनुभव सुनाते हुए बताया—एक बार मैं विमान में यात्रा कर रहा था। अचानक विमान डगमगाने लगा और कुछ ही क्षणों बाद वह विशाल आग के शोलों के रूप में बदल गया। जिस क्षण से वह विमान डगमगाने लगा उसी क्षण से यंत्रवत् मेरे मुँह से राम-रक्षा स्तोत्र प्रारम्भ हो गया था। एकदम ऐसा लगा कि जैसे मुझे किसी ने जोरों से धक्का देकर उछाल दिया हो। मैं जलते हुए विमान से लगभग ४० गज दूर पड़ा था, मेरे मुँह से उस समय भी अनवरत 'राम रक्षा-स्तोत्र' का पाठ चल रहा था। जलते हुए मलबे को मैंने अपनी आंखों से देखा जिसमें केवल मैं ही एक यात्री जीवित बचा था। जिस प्रकार से उस दिन विमान को दुर्घटना हुई थी उससे तो मेरा बचना असंभव सा ही था। पर राम रक्षा स्तोत्र के चमत्कारिक फल ने मेरी प्राण रक्षा की।

● जोधपुर में एक व्यक्ति एक अच्छे पद पर कार्य कर रहा था। एक बार उसके खिलाफ कुछ अभियोग लगाये गये और उसको नौकरी से हटा दिया गया। वह अधिकारी अत्यन्त परेशान था। जब उसने अपनी समस्या के बारे में मुझ से जिक्र किया तो मैंने उसे नित्य प्रातः-सायं राम-रक्षा स्तोत्र के पाठ करने की सलाह दी। उसने उसी दिन से इसका पाठ शुरू कर दिया, और अगले तीस दिनों के भीतर-भीतर उस पर लगाये गए अभियोग निर्मूल साबित हो गये और उसे पुनः ससम्मान बहाल कर दिया गया। उसके बाद से राम रक्षा स्तोत्र उसके जीवन का अभिन्न अंग बन गया।

● इन्दौर के आर. पी. सोनी ने मुझे अपने अनुभव बताते हुए कहा कि मैं और कुछ नहीं जानता केवल राम रक्षा स्तोत्र का पाठ जानता हूं। उसके प्रभाव से आज मैं अपने समाज में सम्मानीय स्थान प्राप्त किये हुए हूं। यद्यपि मेरे जीवन में सैकड़ों परेशानियां और मुसीबतें आई हैं परन्तु मैंने एक दिन के लिये भी राम रक्षा स्तोत्र का पाठ नहीं छोड़ा, और आज मैं अधिकार पूर्ण स्वर से यह कहने को समर्थ हूं कि मेरे जीवन में विपत्तियां और बाधाओं को टालने में इस स्तोत्र ने राम बाण की तरह काम किया है।

उन्होंने बताया कि सन् ६१ में जब अष्ट ग्रही योग था, उन्हीं दिनों मेरा बच्चा सन्निपात में आ गया। डाक्टरों ने हाथ झटक दिये और कहा अब संसार का कोई इंजेक्शन इसकी मृत्यु को नहीं टाल सकता। मैं दवाइयां तथा चिकित्सकों को प्रारम्भ से ही व्यर्थ समझता था, पर घर वालों की हठ के कारण मैंने उन्हें बुलाया जब डाक्टरों ने जवाब दे दिया तो घर में कोहराम सा मच गया परन्तु उन कठिन क्षणों में भी मैं अडिग था और मुझे राम रक्षा स्तोत्र पर पूरा भरोसा था।

मैं उसके सिरहाने सस्वर राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लग गया। मेरे सम्बन्धियों ने मुझे मूर्ख समझा और कहा, यह समय अत्यन्त कीमती है, इसके एक-एक क्षण का उपयोग करना चाहिए। तुम्हें, एक नहीं तो दूसरे अथवा तीसरे डाक्टर से परामर्श करना चाहिए, जबकि तुम इस व्यर्थ के स्तोत्र को लेकर अपना समय बरबाद कर रहे हो।

मैंने कहा—जो कुछ करना है तुम करो, मैं अब यहां से तब तक नहीं उठूंगा जब तक इस बच्चे की सन्निपात अवस्था सुधर नहीं जाएगी। मैंने उसके सिरहाने सुगंधित अगरबत्ती लगा ली, और राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लगा। मेरे मन में पूर्णतः शान्ति थी और भगवान् श्री रामचन्द्र पर पूरा-पूरा भरोसा था।

इस बीच मेरे बड़े भाई ने दो और डाक्टरों को बुलाया मगर उन्होंने भी बताया कि अब कुछ नहीं किया जा सकता। वे दोनों डाक्टर भी अपनी-अपनी फीस लेकर चले गये।

मेरा स्तोत्र पाठ अनवरत रूप से चालू था। मैंने करीब ग्यारह पाठ पूर्ण किये थे कि धीरे-धीरे उसके शरीर की उन्मादावस्था ठीक होने लगी और दूसरे दिन सुबह तक पूर्ण स्वस्थ हो गया।

● कलकत्ते में एक बार भयानक प्लेग फैल गया था। श्री हरीरामजी गोयनका अत्यन्त ही धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनका सारा जीवन ईश्वर-चिन्तन एवं धार्मिक कार्यों में ही व्यतीत होता था। कलकत्ते के अधिकतर धार्मिक संस्थान गोयनका के वजह से ही चलते थे। संयोगवश उस प्लेग की चपेट में गोयनका जी भी आ गये। उन्हें तेज ज्वर चढ़ आया तथा दोनों ओर दो गिल्टियां निकल आई।

घर वाले अत्यन्त चिन्तित हुए और कलकत्ता के प्रसिद्ध डाक्टर प्रमुपद बाबू को बुलाया। उन दिनों प्रमुपद बाबू कलकत्ता में ईश्वर के नाम से जाने जाते थे। गोयनका जी के परिवार से उनका घरेलू सम्बन्ध था। टेलिफोन करने पर वे दौड़े आये, जब उन्होंने गोयनका जी को देखा तो उनके चेहरे पर विषाद की रेखाएं खिच गई। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि प्लेग का आक्रमण इतना भयानक हुआ है कि अब श्री गोयनका किसी प्रकार से नहीं बच सकते। यह रात इनकी अन्तिम रात्रि होगी, यह कह कर वे उल्टे पांव लौट गये।

गोयनका जी यह सब सुन रहे थे। जब उनको पता चला कि आज की रात मेरे जीवन की अन्तिम रात है, तो उन्होंने नौकर कह कर शुद्ध गंगाजल से सारा कमरा धुलवाया और स्वयं स्नान किया। परिवार वालों के मना करने पर भी वे फर्श पर आसन बिछाकर बैठ गये और अन्दर से दरवाजा बन्द कर दिया।

रात्रि को उन्होंने भगवान श्रीराम का एक बड़ा सा चित्र अपने सामने रख लिया और अनवरत रूप से 'राम रक्षा स्तोत्र' का पाठ करने लगे। उन्होंने सोच लिया कि मुझे मरना तो है ही, फिर सांसारिक विषयों में उलझ कर अपने प्राण क्यों विसर्जित करूं? सारी रात वे राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करते रहे। सवेरे लगभग पांच बजे उनको महसूस हुआ कि उनके शरीर में प्लेग की गिल्टियां दब गई हैं, वे अपने आपको पूर्ण स्वस्थ अनुभव करने लगे, ज्वर जाता रहा तथा शारीरिक, मानसिक रूप से अपने आपको काफी तरोताजा अनुभव करने लगे। प्रातः उठते ही उन्होंने नौकर को बुलाकर कहा—मेरी मृत्यु नहीं हुई है। तुम अभी पच्चीस ब्राह्मणों को बुलाकर लाओ, मुझे ब्राह्मण भोजन कराना है।

लगभग ग्यारह बजे डाक्टर प्रमुपद आये। उन्होंने तो यह सोच ही लिया था कि गोयनका जी का दाह-संस्कार हो गया होगा, परन्तु सांत्वना देने के लिये घर जाना जरूरी था। डाक्टर साहब जब उनके घर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि गोयनका जी लड्डू तथा पूड़ी खा रहे हैं और पूर्ण स्वस्थ से दिखाई दे रहे हैं।

डाक्टर साहब अत्यन्त आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने पूछा तुम अभी तक जीवित कैसे हो? और इतना गरिष्ठ भोजन करने की सलाह तुम्हें किसने दी?

गोयनका जी ने उत्तर दिया जिन्होंने मुझे स्वस्थ किया है उनकी आज्ञानुसार ही मैं यह भोजन भी ग्रहण कर रहा हूं।

इस घटना के बाद लगभग तीस वर्ष तक गोयनका जी और जीवित रहे पर उन्होंने राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करना नहीं छोड़ा।

● स्वामी कृष्णानन्द जी का अनुभव भी अपने आप में अद्भुत है। एक बार उन्होंने बताया कि मैं सन् १९३७-३८ में हिमालय की तरफ गया था। कश्मीर में श्रीनगर से आगे अमरनाथ के मार्ग में

आस्थानमर्ग की चढ़ाई आती है, इसे हत्यारा तालाब भी कहते हैं। घूमते घूमते जब मैं इस स्थान पर आया तब तक सांझ घिर आई थी। उस जगह के लिये मैं सर्वथा अपरिचित था, तथा उस भयंकर शीत में विश्राम के लिये मुझे कोई स्थान दिखाई नहीं दे रहा था। मेरा हृदय आशंकित हो उठा। मैंने इधर उधर देखा, ऐसा लगा जैसे मैं रास्ता भूल गया हूं।

चारों तरफ अंधकार घिरता जा रहा था। मेरी हिम्मत जवाब दे गई। उसी समय मन में कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि इस विपत्तिकाल में केवल राम रक्षा स्तोत्र ही मेरी रक्षा कर सकता है, और कोई उपाय नहीं है। मैं वहीं पर रुक गया और मार्ग-दर्शन के लिये जोर-जोर से राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लग गया।

लगभग २५-३० मिनट बीते होंगे और मैंने राम रक्षा स्तोत्र के २-३ पाठ ही किये थे कि मुझे उस बियावान जंगल में एक तरफ से टार्च का प्रकाश आता दिखाई दिया, ऐसा लगा जैसे वह प्रकाश मुझे संकेत से उस दिशा की ओर आने के लिये प्रेरित कर रहा हो। मैं उठा और जिधर से प्रकाश आ रहा था उसी तरफ अपने पांव बढ़ा दिये। ज्यों-ज्यों मैं आगे बढ़ता जाता, त्यों-त्यों वह प्रकाश भी आगे बढ़ता जाता, और मुझे उस तरफ चलने का संकेत करता जाता।

उस अंधेरी रात में लगभग एक मील चलने के बाद मुझे डाक बंगला दिखाई दिया, जो कि उस जंगल में केवल मात्र वही आश्रय स्थल था। जब मैं डाक बंगले के पास पहुंचा तो मुझे प्रकाश दिखाई देना बन्द हो गया।

डाक-बंगले में चौकीदार था। उससे मैंने प्रार्थना की तो उसने मुझे सोने के लिये एक कमरा दे दिया। मैंने उस चौकीदार से पूछा कि क्या इस डाक बंगले के आस-पास कोई और लोग भी रहते हैं तो उसने उत्तर दिया कि इस डाक बंगले के चारों ओर १०-१२ मील तक न तो कोई घर है और न कोई व्यक्ति हो रहता है। जब मैंने उसे टार्च के प्रकाश के बारे में बताया तो उसने कहा, यहां से तो किसी ने टार्च का प्रकाश डाला नहीं, और आस-पास भी कोई व्यक्ति हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। अस्तु।

प्रभु को धन्यवाद कर रात भर मैं आराम से सोया। सुबह उठने पर चौकीदार से पता चला कि रात को भयंकर बर्फीला तूफान आया था, और लगभग १२-१२ इंच बर्फ चारों तरफ गिर चुकी थी। मैं यह सुनकर सिहर उठा और सोचा कि यदि मैं रात को भूलकर जंगल में ही पड़ा रहता तो मैं कभी का समाप्त हो चुका होता, परन्तु प्रभु के हाथ लम्बे हैं और उसने मुझे बचा लिया।

स्वामी जी ने मुझे अपना यह अनुभव बताते हुए कहा कि उस दिन से मुझ पर जब-जब भी कोई समस्या आई है तो मैंने केवल राम रक्षा स्तोत्र का ही पाठ किया है, और इस पाठ के बाद मेरी वह समस्या स्वतः ही सुलझती चली गई है।

● १९४७-४८ की बात है। उन दिनों, जब कि भारत-पाकिस्तान के टुकड़े हो गये थे, तथा चारों तरफ मारकाट मची हुई थी, मैं पाकिस्तान में था। हमारे घर के पास ही एक सोनार रहते थे। जिनका नाम द्वारिका प्रसाद था। उसने एक बार बताया कि जब मुसलमानों ने मेरे घर पर आक्रमण कर दिया तब मैंने यह अच्छी तरह से सोच लिया था कि अब मुझे संसार की कोई भी ताकत नहीं बचा सकती। मैंने बाहर से दरवाजे बन्द कर दिये थे अन्दर मैं, मेरी पत्नी तथा मेरी जवान पुत्री थी। बाहर से धर्मान्ध आततायी दरवाजा तोड़ने में व्यस्त थे। मैं मन ही मन डर रहा था कि अभी ये आततायी कमरे में घुस आयेंगे और मेरी बच्ची का शील भंग मेरे सामने ही हो जायगा, इसके अलावा भी न मालूम किस-किस प्रकार की विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा।

उसी क्षण मेरे हृदय में जैसे प्रकाश सा हुआ। मन के एक कोने से आवाज आई कि आज तक जब श्रीराम ने तुम्हारी मदद की है तो आज वे कैसे तुम्हें भूल सकते हैं?

मैं पूजा गृह में चला गया और पूरा परिवार मेरे पास आकर बैठ गया। मैं आंखें बन्द किये लगातार राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लगा। सोच लिया था कि अब जो भी होगा देखा जायगा। मगर पाठ करते करते लगभग घण्टा बीत गया और कोई आततायी अन्दर नहीं घुसा, तो मुझे आश्चर्य हुआ। पहले तो मैंने चुपचाप कान लगाकर सुनने की चेष्टा की परन्तु जब बाहर किसी प्रकार की हलचल सुनाई नहीं दी तो मैंने धीरे से दरवाजा खोला और बाहर झांका। मुझे एक भी व्यक्ति बाहर दिखाई नहीं दिया। पता नहीं श्री राम ने किस प्रकार से मेरी रक्षा की और किस भय से वे आततायी वहां से भाग गये। मैं कह नहीं सकता परन्तु उस दिन तो मेरा बाल भी बांका नहीं हुआ।

उसी रात को हम लोगों ने किराये पर ऊंट किये और भारत पाक सीमा से होकर जैसलमेर पहुंचे। यदि मैं उस रात राम रक्षा स्तोत्र का पाठ नहीं करता तो मुझे कोई भी बचा नहीं सकता था।

● सन् ७० की बात है। एक दिन मेरी माता जी की हालत अत्यन्त गंभीर हो गई। वे पिछले काफी वर्षों से बीमार चल रही थीं और उन्हें गुर्दों की बीमारी थी। अनेक इलाज करवाये तथा तरह-तरह के वैद्यों और डाक्टरों से उपचार भी करवाया, मगर रोग-नियंत्रण में आ ही नहीं रहा था। वह थोड़ा बहुत इलाज कराने पर स्वस्थ हो जाती थीं, पर जब वह पथ्यापथ्य का ध्यान न रखती तो बीमारी पुनः उन्हें दबोच लेती।

२१ अप्रेल को सुबह जब मैं चाय लेकर उनके पास पहुंचा तब वे लगभग संज्ञा शून्य सी बिस्तर पर पड़ी थी। उनकी नाड़ी अत्यन्त मंद गति से चल रही थी। उन्हें हिलाया-डुलाया तो उनके शरीर में किसी प्रकार की हरकत मुझे दिखाई नहीं दी।

मैं चिन्तित हो उठा। उसी समय अपने लड़के को भेज कर प्रसिद्ध चिकित्सक प्यारे लाल जी को बुलवाया। उन्होंने आकर जब उनकी परीक्षा की तो पता चला कि वह संज्ञा शून्य अवस्था में तीन चार घण्टे से चल रही हैं। नाड़ी स्पन्दन इतना कमजोर हो रहा है कि संभवतः रोगी ३-४ घण्टों से ज्यादा जीवित नहीं रह सकता। मैंने वैद्य जी प्रार्थना की कि क्या इन्हें शहर के बड़े अस्पताल में ले जाना ठीक रहेगा?

उन्होंने उत्तर दिया कि मेरी राय में वहां ले जाना अपने आप में कोई अर्थ नहीं रखता, क्योंकि ऐसा करने से मार्ग में ही प्राण-विसर्जन होने का खतरा है। वैद्य जी अपने घर लौट गये। मैंने आसन पर चौका दिया तथा माताजी को उस पर लिटा दिया। उनके सारे शरीर को गंगाजल से धोया, और पास में रामचन्द्रजी की बड़ी सी तस्वीर लाकर रख दी। सामने घृत का दीपक लगा दिया एवं सुगन्धित अगरबत्ती जला दी। इसके बाद मैं सस्वर राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करने लग गया।

इस प्रकार पाठ करते-करते लगभग तीन घण्टे बीत गए तो मैंने देखा कि मां ने आंखें खोल दी है। वह मुझसे पुनः पलंग पर सोने को कहने लगीं। मैंने उन्हें वहां से उठा कर पलंग पर लिटाया। उन्होंने बताया कि मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे मैं इस देह से मुक्त होकर कहीं दूर जा रही हूं। परन्तु इसके कुछ समय बाद पीछे से श्री राम मुझे वापस बुलाने लगे और ज्यों ही मैं पुनः शरीर में आई, त्यों ही मेरी आंख खुल गई।

राम रक्षा स्तोत्र की अनन्य शक्ति पर मैं श्रद्धा विनीत हो गया और एक प्रकार से इस स्तोत्र के कारण ही माताजी को पुनर्जन्म मिला।

इसके बाद भी अनेक बार विपत्तियां आईं, पर राम रक्षा स्तोत्र ने हमेशा मेरी सहायता की।

मेरी ऐसी धारणा है कि असंभव कार्य में भी राम रक्षा स्तोत्र अत्यन्त सहायक तथा सिद्धिप्रद रहता है।

राम रक्षा स्तोत्रम्

विनियोगः

अस्य श्रीराम रक्षा स्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः श्रीसीतारामचन्द्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः सीता शक्तिः श्रीमान् हनुमान् कीलकं श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ध्यायेदाजानुबाहुँ धृतशरधनुषं बद्धपद्मासनस्थं। पीतं वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धि नेत्रं प्रसन्नम्।
वामांकारूढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं। नानालंकारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम्॥

स्तोत्रम्

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्। एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम्॥१॥
ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्। जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम्॥२॥
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम्। स्वलीलया जगत्त्रातुमाविर्भूतमजं विभुम्॥३॥
रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम्। शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः॥४॥
कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती। घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः॥५॥
जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवन्दितः। स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः॥६॥
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित्। मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः॥७॥
सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः। ऊरू रघूत्तमः पातु रक्षः कुलविनाशकृत॥८॥
जानुनी सेतुकृत्पातु जंघे दशमुखान्तकः। पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः॥९॥
एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्। स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत्॥१०॥
पाताल भूतलव्योमचारिणश्छद्मचारिणः। न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः॥११॥
रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन्। नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति॥१२॥
जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम्। यः कण्ठेधारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः॥१३॥
वज्रपंजरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत्। अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमंगलम्॥१४॥
आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः। तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः॥१५॥

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम्। अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः॥१६॥
तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ। पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ॥१७॥
फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ। पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ॥१८॥
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम्। रक्षः कुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ॥१९॥
आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषंगसंगिनौ। रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम्
संनद्धः कवची खंगी चापबाणधरो युवा। गच्छन्मनोरथान्नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः॥२१॥
रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली। काकुत्स्थः पुरुषःपूर्णः कौसल्येयोरघूत्तमः॥२२॥
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः। जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः॥२३॥
इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः। अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशय॥२४॥
रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम्। स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्नते संसारिणो नराः॥२५॥
रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं। काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्।
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्ति। वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम्
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे। रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥२७॥
श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम, श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कशराम राम। श्रीराम राम शरणं भव राम राम॥२८॥
श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि। श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि। श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये॥२९॥
माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने॥३०॥
दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा। पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम्॥३१॥
लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्। कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये
मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्। वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणंप्रपद्ये
कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम्। आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्॥३४॥
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्। लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥३५॥
भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम्। तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम्॥३६॥
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे। रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं। रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राममामुद्धर
राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे। सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने॥३८॥

गजेन्द्र मोक्ष

गजेन्द्र मोक्ष स्तुति सभी स्तुतियों से अधिक श्रेष्ठ एवं प्रभावकारी मानी गई है। महामना मालवीय इस के परम भक्त थे। एक बार उन्होंने बताया था कि जब-जब भी मेरे जीवन पर समस्याएँ आई हैं, हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के समय आर्थिक संकट से मैं परेशान हुआ हूं तब-तब गजेन्द्र मोक्ष का मैंने पाठ किया है और मैंने विपत्तियों से छुटकारा पाया है।

एक बार मालवीय जी का पुत्र अत्यन्त बीमार पड़ा। उसने तार द्वारा मालवीय जी को सूचना दी। उन दिनों मालवीय जी किसी ऐसे कार्य में उलझे हुए थे कि चाह कर भी उधर नहीं जा सकते थे। उन्होंने पुनः अपने पुत्र को एक लम्बा पत्र लिखते हुए कहा कि तुम्हें अपने स्वास्थ्य के बारे में चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैंने तुम्हें गजेन्द्र मोक्ष के समान अद्भुत औषधि दी है, तुम उस औषधि का सेवन क्यों नहीं करते ?

पुत्र ने गजेन्द्र मोक्ष का पाठ किया और कुछ ही दिनों में वह उस भयानक रोग से बच गया।

एक बार जब मालवीय जी वाराणसी में थे तो एक महात्मा उनसे मिलने के लिये उनके घर आये और पूछा कि आप गृहस्थ होते हुए भी परम तपस्वी कैसे हैं ? आपके पास वह कौन सा मंत्र है जिससे कि आप इस गृहस्थी रूपी कीचड़ में भी कमलवत् खिले रहते हैं।

मालवीय जी ने उत्तर दिया--आज मैं पहली बार आपको इस रहस्य की बात बताता हूं। मेरी माता ने मुझे इस अद्भुत मंत्र की शिक्षा दी थी और कहा था कि जब भी तुझ पर संकट आए या किसी प्रकार की परेशानी महसूस हो तब तुम इसी मंत्र-राज का उपयोग करना। यह मंत्र अपने आपमें अद्भुत है। मेरा जीवन बाधाओं और समस्याओं का घर है, शायद ही कोई ऐसा दिन बीतता होगा जिस दिन मेरे सामने नई समस्या न आती हो मगर जब भी समस्या मेरे सामने आती है तो मैं एक क्षण के लिये भी हिचकिचाता नहीं हूं। मैं जानता हूं कि मेरे पास मेरी पूज्य माताजी द्वारा दिया हुआ एक ऐसा अमोघ मंत्र है जो इस विपत्ति को चुटकी बजाते ही दूर कर देगा। मेरे जीवन में जब-जब भी विपत्ति या कोई समस्या आई है, तभी मैंने इस मंत्र का स्मरण किया है और आज तक भी इस मंत्र का प्रताप व्यर्थ नहीं गया।

महात्मा जी बोले—मालवीय जी मैं वह अद्भुत मंत्र आपसे सीखना चाहूंगा। मुझे विश्वास है कि आप मेरी इस प्रार्थना को ठुकराएंगे नहीं।

मालवीय जी ने अन्दर से गजेन्द्र मोक्ष की पुस्तक लाकर उन्हें दी और कहा—यही वह अद्भुत एवं अमोघ मंत्र है, जिसकी वजह से मैं आज तक अपने प्रत्येक कार्य में सफल होता आया हूं, यद्यपि मैंने अपने जीवन में अन्य कई स्तोत्रों का पाठ किया है, उनका प्रभाव देखा है, परन्तु गजेन्द्र मोक्ष में एक विशेषता है, कि इसका प्रभाव तुरन्त होता है और अपने आप से अद्भुत एवं पूर्ण होता है। मेरी मां ने

मुझे जो अमोघ मंत्र दिया था, वही मैंने आपके सामने रखा है, और आप भी श्रद्धा से यदि इसका पाठ करेंगे तो निश्चय ही आप अपने प्रत्येक कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

दो प्रकार के गजेन्द्र मोक्ष पाठ उपलब्ध हैं। एक पाठ वामन पुराण के अन्तर्गत गजेन्द्र मोक्ष अध्याय से लिया गया है। दूसरा पाठ श्रीमद्भागवत के अष्टम स्कन्ध के द्वितीय अध्याय से लिया हुआ है। यद्यपि दोनों ही पाठ अपने आप में पूर्णतः अनुकूल हैं, पर महामना मालवीय श्रीमद्भागवत् के पाठ को ही फलप्रद समझते थे।

मेरी भी ऐसी धारणा है कि श्रीमद्भागवन्तान्तर्गत गजेन्द्र मोक्ष पाठ ज्यादा अनुकूल तथा सिद्धिप्रद है।

मुझे इस स्तोत्र के प्रभाव से संबंधित कई आख्यान सुनने को मिले हैं, और कई व्यक्तियों से इसकी सिद्धि के बारे में भी जानने का अवसर प्राप्त हुआ है। जयपुर में एक बार इस स्तोत्र की परीक्षा करने का अवसर आया। मेरे परिचित बन्धु श्री हरिराम जी के पुत्र आई. ए. एस. की परीक्षा दे रहे थे। जिस दिन सुबह उनका पेपर था उससे एक दिन पहले ही उन्हें तेज बुखार चढ़ आया। बुखार के साथ-साथ तेज सिर दर्द तथा खांसी भी थी। ऐसी स्थिति में परीक्षा देना संभव ही नहीं था, और यदि परीक्षा दी भी जाती तो उसके लिये भली प्रकार तैयारी नहीं हो सकती थी।

श्री हरीराम जी ने मेरे सामने इस समस्या को रखा। उन्होंने बताया कि डाक्टरों का इन्जेक्शन देने से बुखार तो टूट जायगा पर इससे कमजोरी इतनी अधिक बढ़ जायगी कि यह शान्त चित्त से परीक्षा नहीं देने पाएगा। मैंने उन्हें बताया कि इस समय और कोई उपाय नहीं है, यदि वह लड़का शान्त चित्त से मात्र गजेन्द्र मोक्ष के ११ पाठ कर ले तो मुझे विश्वास है कि वह परीक्षा में अवश्य ही सफलता प्राप्त कर सकेगा। मैं हरीराम जी के साथ उनके घर गया और उनके पुत्र को सारी बात बताई तथा गजेन्द्र मोक्ष के पाठ की विधि भी समझाई।

उसने मेरी बात तुरन्त स्वीकार कर ली। वह उसी समय हाथ पैर धोकर पूजा-कक्ष में आसन पर बैठ गया, तथा गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करने लग गया।

शाम को लगभग सात-आठ बजे उसने ऐसा अनुभव किया जैसे वह पूर्णतः स्वस्थ है तथा बुखार व खांसी का नाम तक नहीं है। रात भर उसने परीक्षा की तैयारी की और दूसरे दिन प्रसन्न चित्त से आई. ए. एस. की परीक्षा दी। इस परीक्षा में वह पूर्णतः सफल भी रहा।

लखनऊ के मंगल प्रसाद जी ने भी इस बारे में मुझे अपना अनुभव बताया था कि जब अधिकारियों के षडयंत्र से उन्हें बैंक की नौकरी से अलग कर दिया गया और उन पर झूठे अभियोग लगाये गये, तो उन्होंने और किसी सिफ़ारिश या अन्य किसी उपाय का आश्रय नहीं लिया। उन्होंने यह निश्चय कर लिया कि मेरी विपत्ति का निवारण गजेन्द्र मोक्ष ही कर सकता है। दूसरा कोई उपाय इसके लिये अनुकूल नहीं है।

वे घर आये और दूसरे दिन से उन्होंने नित्य ११ पाठ करने का प्रण ले लिया। श्री कृष्ण की मूर्ति के सामने श्रीमद्भागवत् के अन्तर्गत आये हुए गजेन्द्र मोक्ष के पाठ का क्रम प्रारम्भ हो गया।

उन्होंने बताया कि मात्र २१ दिन में ही मेरे विरुद्ध जो अभियोग लगाये गये थे वे निर्मूल साबित हुए और मेरे व्यवहार को उचित मानते हुए मुझे अतिरिक्त वेतन वृद्धि देकर स-सम्मान उसी स्थान पर नियुक्त किया जबकि मैंने इसके लिये न तो किसी अधिकारी को कहा था और न किसी प्रकार की सिफ़ारिश ही करवायी थी। इन २१ दिनों में गृहस्थी के कार्यों के अतिरिक्त घर के बाहर भी नहीं निकला

था। आज मैं सभी दृष्टियों से पूर्णतः सुखी और अपने आपको सफल मानता हूं. मेरे जीवन का एकमात्र सहारा गजेन्द्र मोक्ष स्तुति ही है और मैंने कभी भी अपने जीवन में किसी प्रकार की असफलता का सामना नहीं किया है।

● एक बार मैं गीता भवन, ऋषिकेश सत्संग में गया हुआ था। मेरे साथ प्रद्युम्न कुमारजी भी थे जो धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति हैं। प्रति वर्ष वे गीता भवन सत्संग के लिये जाते हैं।

गीता भवन गये मुश्किल से सप्ताह भर बीता होगा कि घर से उनके बच्चे की सख्त बीमारी का तार मिला। उसमें लिखा हुआ था कि बच्चा मृत्यु के निकट है, तुरन्त घर आओ।

मैंने वह तार पढ़ा, प्रद्युम्न कुमार जी ने मुझसे पूछा कि क्या मुझे आज ही घर रवाना हो जाना चाहिए, उनके दिल में अफ़सोस इस बात का था कि इस बार वे सत्संग का पूरा लाभ नहीं उठा सकेंगे।

मैंने उन्हें परामर्श दिया कि आज की रात यहां रुक जाइये। सुबह घर से टेलीफोन कर के वास्तविकता जान लेंगे, और तभी आगे के लिये आवश्यक कदम उठायेंगे। इसके साथ ही मैंने उनसे आग्रह किया कि आज रात भर श्रीकृष्ण मन्दिर में हम दोनों अनवरत गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करेंगे।

सायंकाल गंगा जी में स्नान कर हम दोनों श्रीकृष्ण मन्दिर में बैठ गये और रात भर गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करते रहे। इस बीच हमने न तो किसी प्रकार की कोई बातचीत की थी और न किसी प्रकार का कोई व्यवधान ही आया, सुबह लगभग ८ बजे हम में से प्रत्येक ने १०८ पाठ पूरे कर लिये थे।

प्रातः हमने घर टेलीफोन से संपर्क स्थापित किया तो वहां से समाचार मिला कि बच्चा स्वस्थ है और यहां सभी इस बात के लिये आश्चर्य कर रहे हैं कि कल सायंकाल तक बच्चा भयानक रूप से बीमार था, पर आज काफी स्वस्थ है, ऐसी स्थिति में घर आना कोई आवश्यक नहीं है।

प्रद्युम्न कुमार जो के जी में जी आया और उन्होंने मुझसे कहा कि आज शाम मैं फिर गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करना चाहता हूं। इसके बाद एक एक बार फिर टेलिफोन कर लेंगे और तभी आगे का कार्यक्रम निश्चित किया जायगा।

वे सायंकाल चार बजे तक गजेन्द्र मोक्ष का अनवरत पाठ करते रहे। शाम को लगभग पांच बजे घर से टेलिफोन मिला और उससे ज्ञात हुआ कि बच्चा पूर्णतः स्वस्थ है तथा किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।

गजेन्द्र मोक्ष में अद्भुत प्रभाव है। आध्यात्मिक, भौतिक या दैहिक किसी भी प्रकार की समस्या को सुलझाने में यह स्तुति अपने आप में रामबाण है और इसका प्रयोग जब-जब भी मैंने किया है अपने आप में पूर्ण अनुकूल समाचार प्राप्त हुए हैं।

● एक बार मैं भोपाल अपने परिचित स्वजन के यहां ठहरा था। उनके यहां मेरा तीन-चार दिन रुकने का इरादा था। एक दिन रात को उनकी पत्नी किसी तांत्रिक प्रभाव से अस्वस्थ हो गई। यद्यपि मैं भूत-प्रेतों में विश्वास नहीं करता परन्तु मित्र की पत्नी की ऊल-जलूल बातें सुनकर ऐसा लग रहा था, मानो यह किसी भूत या प्रेत के प्रभाव में है। वह जोर से चीख रही थी और अपने कपड़े फाड़ रही थी।

उसकी नाड़ी ठीक तरह से चल रही थी परन्तु वह अपने होश में नहीं थी। वह अपने आपको एक अन्य स्त्री बता रही थी, जिसकी मृत्यु कुछ समय पहले ही हुई थी।

मुझे आश्चर्य इस बात का हो रहा था कि शाम के पांच बजे तक वह पूर्ण स्वस्थ थी परन्तु आठ बजते-बजते उसकी ऐसी हालत कैसे हो गई!

मेरे परिचित बन्धु ने बताया कि रोग किसी के समझ में नहीं आता। मैं सैंकड़ों डाक्टरों, वैद्यों तथा हकीमों को दिखा चुका हूं, तथा तरह-तरह की दवाइयां दे चुका हूं। परन्तु इस रोग से छुटकारा नहीं मिलता। इस प्रकार का यह आक्रमण कभी भी हो जाता है। कई बार दो-दो महीने तक नहीं होता, और कभी एक ही दिन के अन्तराल से हो जाता है।

मैंने उनसे पूछा कि क्या कोई तांत्रिक प्रयोग तो इस पर नहीं है? मित्र ने जवाब दिया कि मैं सयानों और ओझाओं को भी दिखा चुका हूं।

इधर मैं अपने मित्र से जानकारी प्राप्त कर रहा था और उधर मित्र की पत्नी चण्डिका के समान अपने बाल फैलाकर घर के बर्तन तोड़ रही थी, तथा बच्चों को मारपीट रही थी।

मित्र ने मेरे कहने से पत्नी को जबरदस्ती सामने पलंग पर लिटाल दिया और उसके सामने बैठकर दीपक जलाकर गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करना प्रारम्भ कर दिया।

दो-तीन पाठ के बाद ही पत्नी की उन्मादावस्था शान्त होने लगी। वह धीरे-धीरे पूर्ववत रूप में आने लगी। पांच पाठ के बाद वह बिलकुल शान्त थी।

मैंने गृह स्वामी से अनुरोध किया कि आज रात भर वह इस पाठ को करते रहें और आपकी पत्नी रात भर इस गजेन्द्र मोक्ष पाठ का श्रवण करती रहे। मेरे कहने से पत्नी भी शान्त होकर पलंग के नीचे आसन पर बैठ गई।

सारी रात पाठ चलता रहा और प्रातः लगभग आठ बजे श्रीकृष्ण की आरती करके पाठ को समाप्त किया। रात भर में गजेन्द्र मोक्ष के लगभग १०० पाठ हो चुके थे।

इसके बाद कई बार उनके यहां जाने का मौका मिला। इस बात को लगभग ६ वर्ष बीत गए हैं, परन्तु आज तक वापिस उनकी पत्नी को उन्मादावस्था नहीं हुई और वह पूर्णतः स्वस्थ एवं स्थिर चित्त है। आज भी नित्य दोनों पति-पत्नी गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करते हैं।

● हरिद्वार की बात है जहां मैं ठहरा हुआ था। वहां रात्रि को अपना ध्यान-पूजा-पाठ करता था और इस प्रकार मेरी साधना १० बजे रात से ३ बजे प्रातः तक चलती थी।

एक दिन सुबह चार बजे अपनी साधना समाप्त कर गंगा स्नान के लिये रवाना हुआ तो पूर्वाभ्यास के अनुसार कोने में पड़ी एक छड़ी को अपने हाथ में ले लिया। तुरन्त एक लिजलिजा सा अनुभव हुआ। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मेरा हाथ सांप पर पड़ गया हो।

हुआ यह था कि सांप उस छड़ी से लिपटा हुआ था, और ज्यों ही मैंने उस छड़ी को छुआ, त्यों ही सांप का सिर मेरी मुट्ठी में आ गया। उसने घबरा कर अपने बाकी शरीर से मेरे हाथ पर ऐंठन दे दी। एक प्रकार से उसका सारा शरीर मेरे हाथ पर लिपट गया था।

यद्यपि मैं घबराया नहीं, परन्तु चिन्ता अवश्य हुई कि अगर मैं मुट्ठी खोलता हूं, तो सांप मुझे डस लेगा और व्यर्थ की परेशानी होगी। ऐसे समय में मैंने गजेन्द्र मोक्ष का आश्रय लेना उपयुक्त समझा। मैं मुट्ठी बन्द किए हुए गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करता-करता गंगा तट की ओर रवाना हो गया।

गंगा के किनारे पहुंचते-पहुंचते मेरा पाठ भी समाप्त हो गया था। पाठ समाप्त होते ही श्रीकृष्ण को स्मरण करके मैंने धीरे से अपनी मुट्ठी खोल दी। सांप बिना हिचकिचाहट के अपनी जकड़न को छोड़कर मेरे कंधे पर से होता हुआ पीठ की ओर से नीचे उतर गया, और गंगा की रेती में आगे चलकर कहीं खो गया। इतनी देर तक मैं बिल्कुल निश्चित खड़ा था।

छड़ी को हाथ में लेने के बाद यदि मैंने कुछ भी हरकत की होती तो निश्चय ही सांप मुझे काट लेता और एक नयी परेशानी पैदा हो जाती पर मुझे विश्वास था कि गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करने के बाद इस प्रकार की कोई समस्या मेरे सामने आयेगी ही नहीं। इस प्रकार मैं उस दिन गजेन्द्र मोक्ष के पाठ के फलस्वरूप ही सर्प से बच सका।

ॐ बिहार के राजा सुमन प्रसाद सिंह ने भी गजेन्द्र मोक्ष का अद्भुत चमत्कार मुझे सुनाया था। उन्होंने बताया कि मेरा ३ वर्ष का बच्चा बिल्कुल गूंगा था, मैंने सैकड़ों डाक्टरों को दिखाया पर उसका कोई शुभ फल प्राप्त नहीं हुआ। बच्चा मामूली ध्वनियों के अलावा कोई भी शब्द मुंह से नहीं निकाल सकता था।

हारकर मैंने इस बारे में आपसे जिज्ञासा प्रकट की थी और पत्र में इसका उपाय भी पूछा था। उस समय तक आपका मेरा परिचय इतना घनिष्ट नहीं था। आपने अपने पत्र में यह बताया था कि नित्य गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करने से तुम्हारे पुत्र का गूंगापन दूर हो जायगा। आपका पत्र प्राप्त होने के दूसरे दिन ही से मैंने गजेन्द्र मोक्ष का पाठ करना शुरू कर दिया था।

मैं नित्य प्रातः गजेन्द्र मोक्ष के ११ पाठ करता और मुझे ही नहीं अन्य सभी लोगों को यह जानकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ था कि मात्र ३ महीनों में ही बच्चा बोलने लग गया था, और अब तो वह खूब धड़ल्ले से बोल लेता है।

ॐ पिछली गर्मियों की बात है। मेरे मित्र डाक्टर शिवकृष्ण जी कार से सपरिवार अपने गांव जा रहे थे। वे डाक्टर होते हुए भी भगवान के उपासक हैं, और नित्य प्रातः गजेन्द्र मोक्ष का पाठ अवश्य कर लेते हैं। जब भी उनके जीवन में किसी प्रकार की समस्या आती है तो वे बिना हिचकिचाहट के गजेन्द्र मोक्ष का पाठ आरम्भ कर देते हैं। अभ्यास कुछ ऐसा पड़ गया था कि जब भी कोई मुसीबत आती स्वतः ही उनके मुंह से गजेन्द्र मोक्ष का पाठ प्रारम्भ हो जाता।

जब वे कार से गांव की तरफ जा रहे थे तो मार्ग में तेज वर्षा प्रारम्भ हो गई और ऐसी स्थिति हो गई कि चारों तरफ पानी ही पानी नजर आने लगा।

मार्ग में एक स्थान पर चढ़ाई थी और उसके नीचे ढलान थी। उसके दोनों तरफ बड़े-बड़े खड्ड थे। संयोग की बात कि सामने से आती हुई गाड़ी को रास्ता देने मे उनके हाथ का स्टियरिंग थोड़ा ज्यादा घूम गया और कार तेजी से खड्डे की ओर लपकने लगी।

डाक्टर साहब के हाथ पैर फूल गये और स्वतः ही उनके मुंह से अभ्यासवश गजेन्द्र मोक्ष की स्तुति प्रारम्भ हो गई। डाक्टर साहब ने अपनी आंखें बन्द कर ली थीं। मन में एक क्षण के लिये घूम गया था कि अब मैं तथा मेरा परिवार किसी भी प्रकार से बच नहीं सकता। यह गाड़ी खड्ड में गिरेगी और चकनाचूर हो जायेगी। इसके साथ ही हम लोगों की इहलीला भी समाप्त हो जायेगी।

इस प्रकार दो-तीन मिनट बीत गए। उन्होंने दिमाग को झटका दिया तो ज्ञात हुआ कि गाड़ी का इंजन बन्द है और कार में सारा परिवार सुरक्षित है। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि यह सब किस प्रकार हुआ ?

वे कार से नीचे उतरे और उन्होंने देखा कि कार आधी खड्ड के भीतर और आधी खड्ड के बाहर है। खड्ड के प्रारम्भ में ही एक बड़ा थूहर का झाड़ था और कार का अगला भाग उस झाड़ पर जाकर टिक गया था। एक प्रकार से पूरी कार का आधार वह थूहर का पेड़ ही था, यदि कार एक इंच भी इधर-उधर होती तो कार सैकड़ों फीट खड्डे में जा गिरती

और इससे क्या स्थिति होती इसकी कल्पना ही की जा सकती है।

डाक्टर साहब प्रभु के चमत्कार के आगे श्रद्धा से भर गये। उन्होंने प्रभु को जीवन-दान के लिये धन्यवाद दिया। फिर कार का पिछला हिस्सा खोलकर पूरे परिवार को बाहर निकाला। इससे बाद उधर से जाते हुए कुछ मजदूरों को बुलाकर कार को पीछे से खींच कर खड्ड से बाहर सड़क पर निकाल कर लाया गया। डा. साहब आज भी अपने तथा अपने परिवार के जीवन का श्रेय गजेन्द्र मोक्ष स्तुति को ही देते हैं। उनका विश्वास है कि जीवन में हम किसी भी विपत्ति में उलझ नहीं सकते जब तक कि हमारे पास गजेन्द्र मोक्ष जैसा अमोघ साधन विद्यमान है।

ॐ मेरे बचपन की बात है। मैं अपने पिता के साथ आबू घूमने गया था। पिता जी को गजेन्द्र मोक्ष पर पूर्ण विश्वास था, और उसी संस्कारवश हम सब बालकों के जीवन में भी गजेन्द्र मोक्ष का प्रभाव काम कर रहा था।

आबू में हम सब लोग नक्की तालाब में नाव पर सैर कर रहे थे। अचानक बीच धारा में नाव उलट गई और ऐसा प्रतीत होने लगा कि हम सब लोगों का जीवन इसी झील में समाप्त हो जाएगा।

अभ्यासवश पिता जी के मुंह से गजेन्द्र मोक्ष का पाठ प्रारम्भ हो गया। नाव चलाने वाला मल्लाह इस बीच जल में कूद चुका था। संयोग वश उसी समय एक नाव पास में से गुजरी। हमारी और उस नाव के मल्लाहों ने हम सब बच्चों को उठाकर उस दूसरी नाव में बिठा दिया। इस प्रकार हमारे पूरे परिवार की प्राण रक्षा हुई।

वस्तुतः गजेन्द्र मोक्ष अपने आप में एक अद्भुत स्तुति है। मैंने अपने स्वयं के जीवन में सैकड़ों बार इसका प्रयोग किया है और जब-जब इसका प्रयोग किया है मुझे आशातीत सफलता प्राप्त हुई। विशेषकर नौकरी के संबंध में, ऋण से संबंधित मामलों में, तथा अन्य किसी भी तरह की परेशानियों में यदि इसका प्रयोग किया जाता है, तो कुछ पाठ करने के बाद ही आशाजनक सफलता मिलती दिखाई देती है। कुछ समय के बाद तो पूरी तरह से समस्या से मुक्ति मिल जाती है। मेरी स्वयं की नित्य की पूजा में यह पाठ सम्मिलित है।

मुझे विश्वास है कि यदि व्यक्ति कोई अन्य पाठ या स्तुति न करे तब भी उसे चाहिए कि नित्य उठकर एक बार अवश्य गजेन्द्र मोक्ष का पाठ कर ले। ऐसा करने से उसके जीवन में किसी भी प्रकार की समस्या रह ही नहीं सकती। वस्तुतः कलियुग में इसे एक आश्चर्यजनक स्तुति कह सकते हैं।

गजेन्द्र मोक्ष

एवं व्यवसितो बुद्ध्या समाधाय मनो हृदि।
जजाप परमं जप्यं प्राग्जन्मन्यनुशिक्षितम् ॥१॥
ॐ नमो भगवते तस्मै, यत एतच्चिदात्मकम्।
पुरुषायादिबीजाय परेशायाभिधीमहि ॥२॥

यस्मिन्निदं यतश्चेदं येनेदं य इदं स्वयम् ।
योऽस्मात्परस्माच्च परस्तं प्रपद्ये स्वयम्भुवम् ॥३॥
यः स्वात्मनीदं निजमाययार्पितं क्वचिद्विभातं क्व च तत्तिरोहितम् ।
अविद्धदृक् साक्ष्युभयं तदीक्षते स आत्ममूलोऽवतु मां परात्परः ॥४॥
कालेन पंचत्वमितेषु कृत्स्नशो लोकेषु पालेषु च सर्वहेतुषु ।
तमस्तदाऽऽसीद् गहनं गभीरं यस्तस्य पारेऽभिविराजते विभुः ॥५॥
न यस्य देवा ऋषयः पदं विदुर्जन्तुः पुनः कोऽर्हति गन्तुमीरितुम् ।
यथा नटस्याकृतिभिर्विचेष्टतो दुरत्ययानुक्रमणः स मावतु ॥६॥
दिदृक्षवो यस्य पदं सुमंगलं विमुक्तसंगा मुनयः सुसाधवः ।
चरन्त्यलोकव्रतमव्रणं वने भूतात्मभूताः सुहृदः स मे गतिः ॥७॥
न विद्यते यस्य च जन्म कर्म वा न नामरूपे गुणदोष एव वा ।
तथापि लोकाप्ययसम्भवाय यः स्वमायया तान्यनुकालमृच्छति ॥८॥
तस्मै नमः परेशाय ब्रह्मणेऽनन्तशक्तये ।
अरूपायोरुरूपाय नम आश्चर्यकर्मणे ॥९॥
नम आत्मप्रदीपाय साक्षिणे परमात्मने ।
नमो गिरां विदूराय मनसश्चेतसामपि ॥१०॥
सत्त्वेन प्रतिलभ्याय नैष्कर्म्येण विपश्चिता ।
नमः कैवल्यनाथाय निर्वाणसुखसंविदे ॥११॥
नमः शान्ताय घोराय मूढ़ाय गुणधर्मिणे ।
निर्विशेषाय साम्याय नमो ज्ञानघनाय च ॥१२॥
क्षेत्रज्ञाय नमस्तुभ्यं सर्वाध्यक्षाय साक्षिणे ।
पुरुषायात्ममूलाय मूलप्रकृतये नमः ॥१३॥
सर्वेन्द्रियगुणद्रष्ट्रे सर्वप्रत्ययहेतवे ।
असताच्छाययोक्ताय सदाभासाय ते नमः ॥१४॥
नमो नमस्तेऽखिलकारणाय निष्कारणायाद्भुतकारणाय ।
सर्वागमाम्नायमहार्णवाय नमोऽपवर्गाय परायणाय ॥१५॥
गुणारणिच्छन्नचिदूष्मपाय तत्क्षोभविस्फूर्जितमानसाय ।
नैष्कर्म्यभावेन विवर्जितागमस्वयम्प्रकाशाय नमस्करोमि ॥१६॥
मादृक्प्रपन्नपशुपाशविमोक्षणाय मुक्ताय भूरिकरुणाय नमोऽलयाय ।
स्वांशेन सर्वतनुभृन्मनसि प्रतीतप्रत्यग्दृशे भगवते बृहते नमस्ते ॥१७॥
आत्मात्मजाप्तगृहवित्तजनेष सक्तैर्दुष्प्रापणाय गुणसंगविवर्जिताय ।
मुक्तात्मभिः स्वहृदये परिभाविताय ज्ञानात्मने भगवते नम ईश्वराय ॥१८॥

यं धर्मकामार्थविमुक्तिकामा भजन्त इष्टां गतिमाप्नुवन्ति ।
किं त्वाशिषो रात्यपि देहमव्ययं करोतु मेऽदभ्रदयो विमोक्षणम् ॥१९॥
एकान्तिनो यस्य न कंचनार्थं वांछन्ति ये वै भगवत्प्रपन्नाः ।
अत्यद्भुतं तच्चरितं सुमंगलं गायन्त आनन्दसमुद्रमग्नाः ॥२०॥
तमक्षरं ब्रह्म परं परेशमव्यक्तमाध्यात्मिकयोगगम्यम् ।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममिवातिदूरमनन्तमाद्यं परिपूर्णमीडे ॥२१॥
यस्य ब्रह्मादयो देवा वेदा लोकाश्चराचराः ।
नामरूपविभेदेन फल्ग्व्या च कलया कृताः ॥२२॥
यथार्चिषोऽग्नेः सवितुर्गभस्तयो निर्यान्ति संयान्त्यसकृत् स्वरोचिषः ।
तथा यतोऽयं गुणसम्प्रवाहो बुद्धिर्मनः खानि शरीरसर्गाः ॥२३॥
स वै न देवासुरमर्त्यतिर्यङ् न स्त्री न षण्ढो न पुमान् न जन्तुः ।
नायं गुणः कर्म न सन्न चासन् निषेधशेषो जयतादशेषः ॥२४॥
जिजीविषे नाहमिहामुया किमन्तर्बहिश्चावृतयेभयोन्या ।
इच्छामि कालेन न यस्य विप्लवस्तस्यात्मलोकावरणस्य मोक्षम् ॥२५॥
सोऽहं विश्वसृजंविश्वमविश्वं विश्ववेदसम् ।
विश्वात्मानमजं ब्रह्म प्रणतोऽस्मि परं पदम् ॥२६॥
योगरन्धितकर्माणो हृदि योगविभाविते ।
योगिनो यं प्रपश्यन्ति योगेशं तं नतोऽस्म्यहम् ॥२७॥
नमो नमस्तुभ्यमसह्यवेगशक्तित्रयायाखिलधीगुणाय ।
प्रपन्नपालाय दुरन्तशक्तये कदिन्द्रियाणामनवाप्यवर्त्मने ॥२८॥
नायंवेद स्वमात्मनं यच्छक्त्याहंधिया हतम् ।
तं दुरत्ययमहात्म्यं भगवन्तमितोऽस्म्यहम् ॥२९॥
एवं गजेन्द्रमुपवर्णितनिर्विशेषं ब्रह्मादयो विविधलिंगभिदाभिमानाः ।
नैते यदोपससृपुर्निखिलात्मकत्वात् तत्राखिलामरमयो हरिराविरासीत् ॥३०॥
तं तद्वदार्त्तमुपलश्य जगन्निवासः स्तोत्रं निशम्य दिविजैः सह संस्तुवद्भिः ।
छन्दोमयेन गरुडेन समुह्यमानश्चक्रायुधोऽभ्यगमदाशु यतो गजेन्द्रः ॥३१॥
सोऽन्तस्सरस्युरुबलेन गृहीत आर्तो दृष्ट्वा गरुत्मति हरिं ख उपात्तचक्रम् ।
उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह कृच्छ्रान्नारायणाखिलगुरो भगवन् नमस्ते ॥३२॥
तं वीक्ष्य पीडितमजः सहसावतीर्य सग्राहमाशु सरसः कृपयोज्जहार ।
ग्राहाद् विपाटितमुखादरिणा गजेन्द्रं सम्पश्यतां हरिरमूमुचदुस्त्रियाणाम् ॥३३॥

—श्रीमद्भागवत

नारायण कवच

नारायण कवच अपने आप में अत्यन्त अद्‌भुत एवं शीघ्र फलदायक स्तुति है। कलियुग में जितना शीघ्र फल यह कवच देता है, उतना दूसरा कोई कवच नहीं दे पाता। सबसे बड़ी विशेषता इस कवच में यह है कि इसके लिये न तो कोई पूजा अर्चना है तथा न कोई जटिल विधि-विधान। इसके सीधे-सादे पाठ मात्र से ही सैंकड़ों मनुष्यों की मनोवांछित कामनाएं सिद्ध होते हुए मैंने देखा है।

इस कवच की एक बड़ी भारी विशेषता यह कि जीवन के प्रत्येक पहलू सुलझाने में यह कवच अत्यन्त सहायक है। यदि व्यक्ति की नौकरी नहीं लग रही हो, या नौकरी में किसी प्रकार की बाधा आ गई हो, अथवा उसे सन्तान की तरफ से कोई तकलीफ हो, तो ऐसी घटनाओं या समस्याओं के लिये यह कवच अमोघ औषधितुल्य है। मेरी व्यक्तिगत राय है कि इस कवच का पाठ नित्य प्रत्येक घर में होना ही चाहिए।

इससे सम्बन्धित व्यक्तिगत तथा पाठकों, परिचितों एवं मित्रों से प्राप्त अनुभवों को मैं नीचे दे रहा हूं—

● कलकत्ता के सेठ जौहरी जी अत्यन्त धर्मपरायण व्यक्ति थे। उनके जीवन का अधिकांश समय व्यापारिक कार्यों में अथवा धार्मिक कार्यों में ही व्यतीत होता था। उनके जीवन की सबसे बड़ी विडम्बना यह थी कि उन्हें वृद्धावस्था में मात्र एक पुत्र प्राप्त हुआ था और वह भी मुंह से बोल नहीं सकता था, केवल कुछ ध्वनियां ही मुंह से निकाल पाता था। छः-सात वर्ष का होने के बावजूद भी उसके मुंह से एक शब्द नहीं निकल पा रहा था। डाक्टरों ने उसे गूंगा घोषित कर दिया था। जौहरी जी ने इसके उपचार के लिये काफी प्रयत्न किये थे, सैंकड़ों डाक्टरों को दिखाया था, परन्तु उन्हें कोई सफलता नहीं मिली थी। हार कर सेठ जी ने विधि का विधान समझकर यह निश्चय कर लिया था कि मेरे भाग्य में गूंगे पुत्र का ही सुख है।

उन्हीं दिनों कलकत्ता प्रवास में उनसे मेरा मिलना हुआ। सेठजी अत्यन्त सरल, सौम्य एवं धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे। पुत्र का इतना भारी दुख होने के बावजूद भी उनके मन में किसी प्रकार की मलिनता नहीं थी। वे इसे ईश्वर का प्रसाद ही समझ रहे थे। उनके आग्रह पर मैं उनके घर गया और बच्चे से बातचीत करने का प्रयत्न किया। यद्यपि बच्चा बोलना चाहता था, परन्तु संभवतः कुछ ऐसी विवशता थी, या कोई ऐसा कारण था कि जिससे वह बालक बोलना चाह कर भी नहीं बोल पा रहा था। मैंने सेठ जी को श्री नारायण कवच का नित्य पाठ करने सलाह दी और कहा कि आप नित्य पाठ करने के उपरान्त प्रभु से अपने पुत्र की श्रवण-शक्ति प्राप्त होने की इच्छा प्रकट करें। यथासंभव नित्य इस बालक को सामने बैठाकर ही नारायण कवच का पाठ करें। उन्होंने मेरी आज्ञा शिरोधार्य कर ली, और वे भक्ति पूर्वक नित्य बच्चे को सामने बिठाकर नारायण कवच का पाठ करने लगे।

लगभग ४ महीनों के बाद एक दिन प्रातः उनका टेलीफोन मिला कि पंडित जी ! बालक बोलने लग गया है। वह काफी सही शब्द मुंह से निकाल लेता है। मैंने कवच का पाठ भविष्य में भी करते रहने का आदेश दिया।

एक साल के भीतर-भीतर बालक भली प्रकार से बोलने लग गया और सबसे बड़ी आश्चर्य की बात यह थी कि उस बालक ने एक ही वर्ष में उतने शब्दों का ज्ञान सहज ही प्राप्त कर लिया था जितना कि कोई अन्य बालक सहज गति से विकास करता हुआ प्राप्त करता है।

● ऐसी ही घटना लखनऊ के निवासी देवव्रत जी ने मुझे बताई थी। वे सीधे-सादे सरल प्रकृति के सेवारत कर्मचारी हैं। माता के प्रति उनका सेवा-भाव वन्दनीय है। वे नित्य नारायण कवच का पाठ करते हैं। उन्होंने एक बार नारायण कवच की प्रशंसा करते हुए बताया कि पिछली गर्मियों में मेरी माता जी अत्यन्त बीमार थीं। मैं और बहू उनकी सेवा में लगे हुए थे। रात्रि के लगभग ११ बजे का समय होगा। माता जी जोर से चीखीं। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया कि उन्हें दो काले भयानक यमदूत दिखाई दे रहे हैं। मैंने उनके मुंह में गंगाजल डाला और उनके पास बैठकर नारायण कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया। लगभग १५-२० मिनट के बाद उनके चेहरे पर शान्ति दिखाई दी और उन्होंने बताया कि अब मुझे भयानक यमदूत दिखाई नहीं दे रहे है। पर वे भागते हुए मुझे अवश्य नजर आ रहे हैं। कुछ समय के बाद ही उन्हें यमदूत दिखाई देने बन्द हो गए।

वस्तुतः मरणासन्न रोगी के पास बैठकर नारायण कवच का पाठ किया जाय तो निश्चय ही उस व्यक्ति की सद्‌गति होती है और वह किसी भी स्थिति में यमपुरी नहीं जाता।

● भोपाल के स्वामी कीर्तनानन्द जी ने भी मुझे नारायण कवच के बारे में अपना एक अनुभव सुनाया था। उन्होंने बताया कि मेरे पिता जी अत्यन्त धार्मिक प्रकृति के व्यक्ति थे और मृत्यु से लगभग एक महीने पहले ही उन्होंने हम लोगों को सूचित कर दिया था कि मैं उस तारीख को मृत्यु प्राप्त करूंगा।

आखिर वह दिन भी आ पहुंचा। उन दिनों वे अस्वस्थ थे। हिलने-डुलने की भी उनमें शक्ति नहीं थी। बड़ी मुश्किल से बोल पाते थे। एकाएक उन्हें ऐसा लगा जैसे दो विकराल मुख वाले व्यक्ति उनकी तरफ आ रहे हैं। उनके हाथ में मोटा मुद्‌गल तथा रस्सियां हैं। उन्हें देखते ही पिता जी की चीख निकल गई और उन्होंने नारायण कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया। उस एक मिनट के अन्तराल में मुझे भी उन्होंने नारायण कवच का जोर-जोर से पाठ करने की आज्ञा दी। मेरे द्वारा पाठ का प्रारम्भ करने से पूर्व ही भय से वे अर्द्ध-मूर्छित से हो गये थे।

मैं उनके पास बैठा लगातार नारायण कवच का पाठ करता रहा। लगभग आधे घण्टे के बाद उनकी मूर्छा टूटी। उनके चेहरे पर शान्ति एवं संतोष के चिन्ह थे। उन्होंने बताया कि मैंने दो यमदूतों को अपने गले में रस्सी डालते हुए देखा तो मेरी चीख निकल गई थी। पर मुझे नारायण कवच पर पूरा भरोसा था और इसीलिये मैंने तुम्हें नारायण कवच का पाठ करने को कहा था। अब मुझे वे यमदूत कहीं भी दिखाई नहीं दे रहे हैं और चारों तरफ शान्ति का वातावरण अनुभव हो रहा है।

इसके बाद उन्हें गंगा जल से स्नान कराया गया जनेऊ बदला गया और राम-राम का उच्चारण करते हुए उन्होंने अपना शरीर छोड़ा।

● एक बार मैं किसी कार्य से अपने गांव गया था। वहां एक चौधरी के घर बड़ी परेशानी थी। उसके बड़े पुत्र को भूत लग गया था और पिछले छः महीने से वह बराबर घर वालों को तंग करता रहता था। चौधरी ने कई सयानों को बुलाया, ओझाओं से भी उपचार करवाए पर किसी प्रकार वह भूत निकल नहीं सका। धीरे-धीरे पुत्र कमजोर

होने लगा और छः महीनों के भीतर उसका शरीर पीला पड़ गया, आंखें अन्दर धंस गईं और चलने-फिरने में भी वह अपने आप को असमर्थ सा अनुभव करने लगा।

मेरे गांव जाने पर चौधरी मुझसे मिला और इस घटना का सविस्तार वर्णन किया। उसने बताया कि उसका पुत्र दुबला-पतला होने के बावजूद एक बार में ५०-६० रोटियां खा लेता है मगर फिर भी उसकी भूख शान्त नहीं होती। उसका एक साल पहले ही विवाह किया है। यदि यही स्थिति रही तो वह महीने दो महीने से ज्यादा जीवित नहीं रह सकेगा। यह कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगा।

मैंने उसे सान्त्वना दी और बताया कि यद्यपि इस जगत में भूत-प्रेतों का भी अस्तित्व है, मगर इस बारे में मैं बहुत अधिक नहीं जानता। इतना अवश्य कर सकता हूं कि यदि तुम किसी योग्य ब्राह्मण से अपने पुत्र के सामने नित्य श्री नारायण कवच का पाठ कराते रहें तो समस्या से मुक्ति मिल सकती है। मैंने उसे नारायण कवच की एक प्रति भी दी।

दूसरे दिन से वह गांव के एक ब्राह्मण से अपने घर नित्य नारायण कवच का पाठ कराने लगा। यथा संभव वह यह प्रयत्न करता कि पाठ-स्थल पर उसका पुत्र भी रहे। पुत्र कमजोर था, खाट पर पड़ा रहता था। अतः इच्छा-अनिच्छा से वह नारायण कवच का पाठ सुनता रहता। लगभग १०-१२ दिन बीते होंगे कि एक दिन नारायण कवच का पाठ सुनते-सुनते वह जोरों से उछला और चिल्लाकर बोला कि अब मैं किसी भी दशा में यहां नहीं रह सकता। मुझे समाप्त करने का षडयन्त्र किया जा रहा है। यह कवच मेरी मृत्यु है और ऐसा कहता-कहता वह खाट से उठा, पांच-सात कदम दौड़ा और पृथ्वी पर गिर पड़ा।

घर वालों ने उसे उठाया और अन्दर लाकर पलंग पर सुलाया। इसके बाद से उसका स्वास्थ्य सुधरने लगा तथा अगले तीन-चार महीनों में ही वह पुनः हृष्ट-पुष्ट युवक दिखाई देने लगा। उसके चेहरे पर ललाई छा गई तथा पागलपन का कोई चिन्ह उसके मन तथा मस्तिष्क पर नहीं रहा।

ऐसी ही एक घटना मेरे मित्र गोपाल जी ने सुनाई थी। उन्होंने बताया कि मैं सुबह पूजा में बैठा हुआ था। मेरे बड़े पुत्र ने कहा कि मैं तालाब में स्नान करने जा रहा हूं, मेरे कुछ मित्र भी हैं। पता नहीं क्यों उसकी यह बात सुनते ही मेरा मन किसी अज्ञात आशंका से कांप गया। रह-रह कर मेरे मन में कई प्रकार के तर्क-वितर्क उठने लगे। वह अपने मित्रों के साथ स्नान करने चला गया।

वर्षा ऋतु थी। तालाब लबालब पानी से भरा हुआ था। मेरे घर से तालाब मुश्किल से दो फर्लांग दूर होगा। मैं अपने पूजा कक्ष में बराबर बैठा रहा और नारायण कवच का पाठ करता रहा। यद्यपि नित्य मैं इस कवच का एक ही पाठ करता हूं पर उस दिन किसी अज्ञात प्रेरणा से मैं लगातार इसी का पाठ करता रहा। लगभग २०-२५ मिनट बीते होंगे कि एक लड़का दौड़ता हुआ आया और जोर से चिल्लाया कि रमेश बाबू डूब रहे हैं। रमेश मेरे पुत्र का नाम था। मैं हड़बड़ाकर उठ खड़ा हुआ। मेरे होठों से अभी तक नारायण कवच का पाठ चल रहा था। मैं तालाब की तरफ दौड़ा। तब तक उसके तीन-चार मित्र उसे अपने हाथों में उठाये मेरे घर की तरफ आते दिखाई दिए। मैं तुरन्त रमेश को उसके मित्रों की सहायता से घर लाया। उल्टा करके उसके पेट का पानी निकाला तथा उसके पास बैठकर नारायण कवच का पाठ करने लगा।

होश में आने पर उसने बताया कि मैं तालाब में अचानक फिसल गया और मेरे मुंह में जरूरत से ज्यादा पानी भर गया। मैं एक प्रकार से डूब ही गया था क्योंकि उस समय मैं तालाब के मध्य में था, परन्तु न मालूम किसी ने अपने हाथ से मुझे जोरों से

धक्का दिया और मैंने अपने आपको किनारे पर गिरते हुए अनुभव किया। मित्रों ने यह भी बताया कि डूबते हुए वह अपने आप किनारे की तरफ आया था।

मैं प्रभु की महान् कृपा पर गद्‌गद् हो गया। प्रभु अपने भक्तों की हर प्रकार से रक्षा करते हैं। प्रभु के अलावा ऐसा कौन हो सकता है जिसने डूबते हुए बालक को सहारा देकर किनारे पर लाकर डाल दिया और उसकी जान बचाई।

उस दिन के बाद से इस नारायण कवच पर मेरी अनन्य श्रद्धा हो आई है। जब भी मैं किसी परेशानी का अनुभव करता हूं तो नारायण कवच का पाठ प्रारंभ करता हूं। इससे मुझे अपने कार्य में शीघ्र सफलता मिल जाती है।

प्रभुपाद ब्रह्मचारी मेरे गुरुभाई हैं। उन्होंने एक बार नारायण कवच के प्रभाव का वर्णन मेरे सामने किया था। उन्होंने बताया कि श्रावण का महीना था। गंगा के किनारे मेरा घर था। नित्य की भांति उसमें स्नान करने के लिये मैं घुसा। मेरे साथ तीन-चार मित्र थे। अन्दर घुसने के बाद मेरे दूसरे मित्र तो तैर कर किनारे पर जा लगे, पर मेरा पैर फिसल गया और मैं बीच धारा में चला गया। धारा वेगवती थी और मैं अत्यन्त तीव्रता से धारा के साथ बह रहा था। मेरे मुंह में कसैला पानी घुस रहा था। धीरे-धीरे मैं बेहोश होने लगा। मेरे पिताजी ने मुझे नारायण कवच सिखाया था और नित्य पाठ करने की उनकी आज्ञा थी। इस समय भी मेरे मुंह से अनायास नारायण कवच का पाठ प्रारम्भ हो गया। एक प्रकार से मैंने मृत्यु को निकट समझ लिया था। साथी दूर किनारे पर खड़े चिल्ला रहे थे पर उनमें से किसी को धारा में घुसने का साहस नहीं हो रहा था। अपने आपको प्रभु के हवाले कर मैं नारायण कवच का पाठ कर रहा था और धीरे-धीरे संज्ञा-शून्य होता जा रहा था। अचानक ऐसा लगा कि जैसे किसी ने मुझे धक्का दिया हो, और मैं किसी वस्तु से जा टकराया। आंखें खोलीं तो मैंने देखा कि मैं किनारे पर पड़ा हुआ हूं।

दो-तीन मिनट किनारे की रेती पर उल्टा पेट के बल पड़ा रहा। मेरे अन्दर का पानी बाहर निकल आया। मेरी नाक में सांस आई। उठकर खड़ा हो गया और प्रभु को अनेक धन्यवाद दिये। वस्तुतः उस दिन मेरे पास यह नारायण कवच न होता तो मेरी मृत्यु अवश्यम्भावी थी और दुनिया की कोई ताकत मुझे बचा नहीं सकती थी।

बिहार के रमेशचन्द्र जी मेरे शिष्य हैं। उनके दो पुत्र और एक पुत्री है। पति-पत्नी ईश्वर परायण हैं और वर्ष में एक बार मुझसे मिलने के लिये अवश्य आ जाते हैं।

कुछ समय पहले मैंने रमेश जी को नारायण कवच की प्रति दी थी और यह कहा था कि जब भी तुम्हें किसी प्रकार की असुविधा हो या कोई परेशानी अनुभव हो तो तुम ईश्वर को स्मरण कर इस कवच का पाठ प्रारम्भ कर देना। अवश्य ही तुम उस समस्या से मुक्ति पाने में सफल हो सकोगे। उन्होंने मेरी आज्ञा स्वीकार कर ली।

इसके तीन-चार महीने बाद की ही बात है। वे अपने गांव में शाम के समय अपने पुत्र-पुत्री तथा पत्नी के साथ भोजन करने के लिए बैठे थे कि इतने में जोर का अन्धड़ और तूफान आया। उन सबके उठते-उठते ही पीछे की कच्ची दीवार भहरा कर उन पर गिर पड़ी। रमेश जी तो बच गए, परन्तु पत्नी तथा पुत्र दीवार के नीचे दब गये। तूफान बहुत वेग से चल रहा था। उन्हें और कुछ नहीं सूझा तो उन्होंने उच्च स्वर से नारायण कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया।

लगभग-तीन चार मिनट ही बीते होंगे कि कुछ ग्रामीण घर के पास से गुजरे। वे दीवार गिरी देखकर अन्दर आए, सबने मिलकर ईंटें हटाईं।

रमेश जी को यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि पत्नी तथा तीनों ही सन्तान सकुशल हैं। दीवार गिरने के बावजूद उन चारों के कहीं खरोंच तक नहीं आई थी। वे प्रेम से गद्‌गद हो गये। उसी समय घुटनों के बल बैठकर प्रभु को अनेकानेक धन्यवाद देने लगे। महीनों तक उस गांव में इस घटना की चर्चा होती रही कि दीवार गिरने के बाद भी वह कौन सी शक्ति थी, जिसके कारण बालकों को खरोंच तक नहीं थी और सभी सकुशल निकल आये।

उनके जीवन में नारायण कवच एक अभिन्न अंग बन गया। जब भी वे किसी प्रकार की मुसीबत अनुभव करते हैं तो नारायण कवच ही उनके लिये सहायक रहता है। इसका उन्होंने कई बार अनुभव किया है।

वस्तुतः नारायण कवच अपने आप में एक अद्‌भुत स्तुति है। यदि मैं इससे संबंधित घटनाएं लिखूं तो एक पूरा ग्रंथ बन सकता है। सैकड़ों लोगों ने सैकड़ों घटनाएँ मुझे सुनाई हैं और बताया है कि नारायण कवच के प्रभाव से ही वे अपनी समस्याओं से मुक्ति पा सके हैं।

जब स्वामी सेवानन्दजी से मुझे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ तो मैंने उनसे पूछा था कि आपके पास वह कौन-सी शक्ति या आराधना है जिसके बल आप अत्यन्त समर्थ एवं योग्य बन सके हैं। अत्यन्त रहस्य भरी वाणी वे में बोले कि इस सब के पीछे केवल नारायण कवच ही है। यदि मैं यह कहूं कि नारायण कवच प्रत्येक प्रकार के कार्य में सहायक है, प्रत्येक प्रकार की समस्याओं को सुलझाने में सक्षम है, तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। जीवन में यदि साधना के बल पर ऊँचा उठना है तो सबसे पहले नारायण कवच को कंठस्थ करना ही होगा। जब इस नारायण कवच पर अधिकार हो जाता है तो उसे जीवन में दैहिक, दैविक तथा भौतिक ताप नहीं व्याप्त होते।

मेरा स्वयं का अनुभव है कि श्री नारायण कवच अपने आप में अत्यन्त सक्षम है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने पूजा क्रम में इस कवच को स्थान देना चाहिए।

अथ श्रीनारायणकवचम्

राजोवाच

यया गुप्तः सहस्राक्षः सवाहान् रिपुसैनिकान्। क्रीडन्निव विनिर्जित्य त्रिलोक्य बुभुजे श्रियम् ॥१॥
भगवंस्तन्ममाख्याहि वर्म नारायणात्मकम्। यथाऽऽततायिनः शत्रून् येन गुप्तोऽजयन्मृधे ॥२॥

श्री शुक उवाच

वृतः पुरोहितस्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते। नारायणाख्यं वर्माह तदिहैकमनाः शृणु ॥३॥

विश्वरूप उवाच

धौताङ्‌घ्रिपाणिराचम्य सपवित्र उदङ्‌मुखः। कृतस्वांगकरन्यासो मन्त्राभ्यां वाग्यतः शुचिः ॥४॥
नारायणमयं वर्म संनह्येद भय आगते। पादयोर्जानुनोरूर्वोरुदरे हृद्यथोरसि ॥५॥
मुखे शिरस्यानुपूर्व्यादोंकारादीनि विन्यसेत्। ॐ नमो नारायणायेति विपर्ययमथापि वा ॥६॥

करन्यासं ततः कुर्याद द्वादशाक्षरविद्यया। प्रणवादियकारान्तमंगुल्यंगुष्ठ पर्वसु ॥७॥
न्यसेद्धृदय ओंकारं विकारमनु मूर्धनि। षकारं तु भ्रुवोर्मध्येणकारं शिखया दिशेत् ॥८॥
वेकारं नेत्रयोर्युंज्यान्नकारं सर्वसंधिषु। मकारमस्त्रमुद्दिश्य मन्त्रमूर्तिर्भवेद बुधः ॥९॥
सविसर्गं फडंतं तत्सर्वदिक्षु विनिर्दिशेत्। ॐ विष्णवे नम इति ॥१०॥
आत्मानं परमं ध्यायेद् ध्येयं षट्शक्तिभिर्युतम्। विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमं मन्त्रमुदाहरेत् ॥११॥

ॐ हरिर्विदध्यान्मम सर्वरक्षां न्यस्तांघ्रिपद्मः पतगेन्द्र पृष्ठे।
दरारिचर्मासिगदेषुचापपाशान् दधानोऽष्टगुणोऽष्टबाहुः ॥१२॥
जलेषु मां रक्षतु मत्स्य मूर्तिर्यादोगणेभ्यो वरुणस्य पाशात्।
स्थलेषु मायावटुवामनोऽव्यात् त्रिविक्रमः खेऽवतु विश्वरूपः ॥१३॥
दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषु प्रभुः पायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः।
विमुंचतो यस्य महाट्टहासं दिशो विनेदुर्न्यपतंश्च गर्भाः ॥१४॥
रक्षात्वसौ माध्वनि यज्ञकल्पः स्वदंष्ट्रयोन्नीतधरो वराहः।
रामोऽद्रिकूटेष्वथ विप्रवासे सलक्ष्मणोऽव्याद भरताग्रजोऽस्मान् ॥१५॥
मामुग्रधर्मादखिलात् प्रमादान्नारायणः पातु नरश्च हासात्।
दत्तस्त्वयोगादथ योगनाथः पायाद्गुणेशः कपिलः कर्मबन्धात् ॥१६॥
सनत्कुमारोऽवतु कामदेवाद्धयशीर्षा मां पथि देवहेलनात्।
देवर्षिवर्यः पुरुषार्चनान्तरात् कूर्मो हरिर्मां निरयादशेषात् ॥१७॥
धन्वन्तरिर्भगवान् पात्वपथ्याद द्वन्द्वाद भयादृषभो निर्जितात्मा।
यज्ञश्च लोकादवतांजन्नाताद बलो गणात् क्रोधवशादहीन्द्रः ॥१८॥
द्वैपायनो भगवानप्रबोधाद बुद्धस्तु पाखण्डगणात् प्रमादात्।
कल्किः कलेः कालमलात् प्रपातु धर्मावनायोरुकृतावतारः ॥१९॥
मां केशवो गदया प्रातरव्यात् गोविन्द आसंगवमात्तवेणुः।
नारायणः प्राह्णउदात्तशक्तिर्मध्यंदिने विष्णुररीन्द्रपाणिः ॥२०॥
देवो पराह्णे मधुहोग्रधन्वा साय त्रिधामावतु माधवो माम्।
दोषे हृषीकेश उतार्धरात्रे निशीथ एकोऽवतु पद्मनाभः ॥२१॥
श्रीवत्सधामापररात्र ईशः प्रत्यूष ईशोऽसिधरो जनार्दनः।
दामोदरोऽव्यादनुसंध्यं प्रभाते विश्वेश्वरो भगवान् कालमूर्तिः ॥२२॥
चक्रं युगान्तानलतिग्मनेमि भ्रमत् समन्ताद् भगवत्प्रयुक्तम्।
दंदग्धि दंदग्ध्यरिसैन्यमाशु कक्षं यथा वातसखो हुताशः ॥२३॥

गदेऽशनिस्पर्शनविस्फुलिंगे निश्पिण्ढि निष्पिड्ढ्यजितप्रियासि ।
कूष्माण्डवैनायकयक्षरक्षोभूतग्रहांश्चूर्णय चूर्णयारीन् ।।२४।।
त्वं यातुधानप्रमथप्रेतमातृपिशाचविप्रग्रहवीरघोरदृष्टीन् ।
दरेन्द्र विद्रावय कृष्णपूरितो भीमस्वनोऽरेर्हृदयानि कम्पयन् ।।२५।।
त्वं तिग्मधारासिवरारिसैन्यमीशप्रयुक्तो मम छिन्धि छिन्धि ।
चक्षूंषि चर्मञ्छतचन्द्र छादय द्विषामघोना हर पापचक्षुषाम् ।।२६।।
यन्नोभयं ग्रहेभ्योऽभूत् केतुभ्यो नृभ्य एव च ।
सरीसृपेभ्यो दंष्ट्रिभ्यो भूतेभ्योंऽहोभ्य एव वा ।।२७।।
सर्वाण्येतानि भगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात् । प्रयान्तु संक्षयं सद्यो ये नः श्रेयः प्रतीपकाः ।।२८।।
गरुडो भगवान् स्तोत्रस्तोभश्छन्दोमयः प्रभुः । रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्यो विष्वक्सेनः स्वनामभिः ।।२९।।
सर्वापद्भ्यो हरेर्नामरूपयानायुधानि नः । बुद्धीन्द्रियमनःप्राणान् पान्तु पार्षदभूषणाः ।।३०।।
यथा हि भगवानेव वस्तुतः सदसच्च यत् । सत्येनानेन नः सर्वेयान्तु नाशमुपद्रवाः ।।३१।।
यथैकात्म्यानुभावानां विकल्परहितः स्वयम् । भूषणायुधलिंगाख्या धत्ते शक्तिः स्वमायया ।।३२।।
तेनैव सत्यमानेन सर्वज्ञो भगवान् हरिः । पातु सर्वैः स्वरूपैर्नः सदा सर्वत्र सर्वगः ।।३३।।
विदिक्षु दिक्षूर्ध्वमधः समन्तादन्तर्बहिर्भगवान् नारसिंहः ।
प्रहापयंल्लोकभयं स्वनेन स्वतेजसा ग्रस्तसमस्ततेजाः ।।३४।।
मघवन्निदमाख्यातं वर्म नारायणात्मकम् । विजेष्यस्यंजसा येन दंशितोऽसुरयूथपान् ।।३५।।
एतद्द धारयमाणस्तु यं यं पश्यति चक्षुषा । पदा वा संस्पृशेत् सद्यः साध्वसात् स विमुच्यते ।।३६।।
न कुतश्चिद् भयं तस्य विद्यां धारयतो भवेत् । राजदस्युग्रहादिभ्यो व्याघ्रादिभ्यश्च कर्हिचित् ।।३७।।
इमां विद्यां पुरा कश्चित् कौशिको धारयन द्विजः । योगधारणया स्वांग जहौ स मरुधन्वनि ।।३८।।
तस्योपरि विमानेन गन्धर्वपतिरेकदा । ययौ चित्ररथः स्त्रीभिर्वृतो यत्र द्विजक्षयः ।।३९।।
गगनान्न्यपतत् सद्यः सविमानो ह्यवाक्शिराः । स वालखिल्यवचनादस्थीन्यादाय विस्मितः ।
प्रास्य प्राची सरस्वत्यां स्नात्वा धाम स्व मन्वगात् ।।४०।।

श्रीशुक उवाच

य इदं श्रृणुयात् काले यो धारयति चादृतः । तं नमस्यन्ति भूतानि मुच्येत सर्वतो भयात् ।।४१।।
एतां विद्यामधिगतो विश्वरूपाच्छतक्रतुः । त्रैलोक्यलक्ष्मीं बुभुजे विनिर्जित्य मृधेऽसुरान् ।।४२।।

इति नारायण कवचं सम्पूर्णम्

———

सुदर्शन कवच

सुदर्शन कवच रक्षा से सम्बन्धित कार्यों में अत्यधिक फलप्रद माना गया है। यदि सुदर्शन कवच का पाठ नित्य किया जाये तो जीवन में किसी प्रकार की समस्या देखनी नही पड़ती। मैंने स्वयं सुदर्शन कवच का कई बार पाठ किया है। जब-जब भी मैं मानसिक परेशानियों से जूझा हूं इसने ढाल की तरह रक्षा की है, और मैं उन यंत्रणाओं से शीघ्रातिशीघ्र मुक्त हो सका हूं।

पूरे भारत और विदेशों में फैले मेरे मित्रों, परिचितों एवं भक्तों के पास जाते रहने का मौका मुझे मिलता ही रहता है। कई स्थानों पर मैंने इस कवच की प्रशंसा सुनी, और जिन-जिन लोगों ने इस कवच से लाभ उठाया है उनकी संख्या अत्यधिक है। मैंने जब भी किसी व्यक्ति या परिचित को परेशान या दुखी देखा है, उसे सुदर्शन कवच का पाठ करने की सलाह दी है, और कुछ ही दिनों के बाद उसने राहत का अनुभव किया है। सुदर्शन कवच की प्रशंसा के बारे में जितना भी लिखा जाय वह कम है। मैं नीचे कुछ ऐसी सत्य घटनाएं दे रहा हूं जिन्हें विश्वस्त व्यक्तियों ने मुझे सुनाई है —

ॐ पटना के मेरे परिचित बन्धु हरीराम जी ने अपने पुत्र का किस्सा सुनाते हुए बताया कि मेरा पुत्र सोलह-सत्रह साल का है। वह और तो कुछ पूजा या विधि-विधान नहीं करता पर सुदर्शन कवच का पाठ नित्य एक बार अवश्य कर लेता है। धीरे-धीरे कुछ अभ्यास ऐसा बन गया है कि जब भी वह किसी भी परेशानी में होता है या किसी प्रकार की बाधा अनुभव करता है तो उसके मुंह से स्वतः ही सुदर्शन कवच का पाठ आरम्भ हो जाता है।

एक दिन वह आम के पेड़ की ऊंची डाल पर बैठा हुआ था। आम पके हुए थे और वह आम को तोड़ने के लिये और ऊंचा चढ़ रहा था। एकाएक उसका पैर फिसला और धड़ाम से नीचे आ गिरा, यद्यपि वह कमर के बल गिरा था परन्तु गिरते ही बेहोश सा हो गया था, मैं दौड़ा हुआ गया और उसे तुरन्त अस्पताल पहुंचाया, मेरी बुद्धि उस समय कुछ भी काम नहीं कर रही थी। मेरे मुंह से केवल सुदर्शन कवच का पाठ हो रहा था और मुझे कोई राह दिखाई नहीं दे रही थी। डाक्टर ने देखा और निर्णय सुनाया कि बच्चे के सिर में गहरी चोट लगी है. अतः अड़तालीस घंटों से पहले होश में नहीं आ सकता। यह सुनते ही मेरी हालत पर कटे पक्षी की तरह हो गई। उसे ग्लूकोज चढ़ाया जा रहा था. पर मेरा अन्तर-मन कह रहा था कि यदि इसके पास बैठकर कवच का पाठ करूं तो अवश्य ही इसके प्राण बच सकते हैं, और यह शीघ्रातिशीघ्र होश में आ सकता है। मैं अस्पताल में ही उसके बिस्तर के पास ही बैठ गया और धीरे-धीरे सुदर्शन कवच का पाठ प्रारम्भ कर दिया।

मैंने उसके पास बैठकर केवल ११ बार सुदर्शन कवच का पाठ किया था, तभी उसने आंखें खोलीं और मुझे अच्छी तरह पहचाना, तुरन्त डाक्टर को टेलीफोन

किया गया, वे आए। उन्होंने जब बच्चे को होश में आया हुआ देखा तो आश्चर्य चकित रह गए। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था कि सिर में इतनी सांघातिक चोट लगने के बाद भी बालक इतनी जल्दी होश में आ गया। तब उन्हें बताया गया कि मैंने इसके पास बैठकर सुदर्शन कवच का पाठ किया था। उस समय डाक्टर साहब को विश्वास नहीं हुआ कि इस कवच के पाठ के कारण ही रोगी होश में आया। बाद में जब उन्होंने इसी प्रकार के प्रयोग और भी कई रोगियों पर किये तो उन्होंने पाया कि वस्तुतः यह कवच इस प्रकार के मामलों में अद्भुत है और प्रत्येक बार इसका परिणाम अनुकूल ही रहता है। आज भी डाक्टर इस कवच के अनन्य भक्त हैं और पूर्ण वैज्ञानिक होते हुए भी इस प्रकार के कार्यों में रोगियों पर इस कवच का प्रयोग करते हैं।

● ऐसी ही एक घटना मुझे मेरे भक्त महेश कुमार ने बताई थी। उसने बताया कि एक बार मैं कश्मीर गया था। केसरवाड़ी से होता हुआ मैं अपने मित्रों के साथ ग्लैशियर की तरफ जा रहा था। प्रातःकाल का समय था। उस समय ग्लैशियर का बहाव कम होता है, अतः सुविधा से उस पानी के बहाव को पार किया जा सकता है। यद्यपि सूर्य की किरणें चमकने लग गई थी, और पानी का बहाव भी बढ़ गया था पर इतना अधिक बहाव नहीं था कि उसे पार न किया जा सके। मैंने ईश्वर का नाम लेकर उसको पार करने का निश्चय कर लिया। मैं बहाव के साथ-साथ बहने लगा। तेज बहाव और उस पर ठंडा बर्फ का पानी मेरे शरीर को सुन्न किये जा रहा था। घबराहट में मुझे कुछ भी नहीं सूझा और मुंह से अनायास ही सुदर्शन कवच का पाठ प्रारम्भ हो गया। ३-४ मिनट के बाद मैं संज्ञा शून्य सा हो गया जब होश में आया तो मैंने देखा कि मैं अपने मित्रों से घिरा हूँ और मेरे मित्र मेरे सिर की तथा सीने की मालिश कर रहे है। पूछने पर उन्होंने बताया कि तुम्हें बहाव में बहते हुए देखकर हमारे तो हाथ-पांव फूल गये। यह विश्वास हो गया कि अब महेश किसी भी प्रकार से बच नहीं सकता। परन्तु कुछ ही गज बहाव में बहने के बाद तुम एक चट्टान से टकरा गए थे और तुम्हारा शरीर उस चट्टान पर टिक गया था। बड़ी कठिनता से उस चट्टान से तुम्हें किनारे तक ला सके हैं। भगवान को लाख-लाख धन्यवाद है कि उसने तुम्हारी जान बचा ली। वे भगवान को धन्यवाद दे रहे थे और मैं सुदर्शन कवच को धन्यवाद दे रहा था जिसकी वजह से मैंने एक बार पुनः नया जन्म पाया था।

इसके बाद मैं जब-जब भी इस प्रकार की परेशानियों या समस्याओं से उलझा हूं तो मेरा एक-मात्र सहारा सुदर्शन कवच ही रहा है और मैं हर बार संकटों से बचता रहा हूँ।

● मेरे गांव की ही घटना है। किसन लाल कुम्हार अत्यन्त धर्मपरायण व्यक्ति है। एक बार उसने मुझसे कोई स्तोत्र सीखने की जिद् की। मैंने कुछ दिनों के प्रयत्न से उसे सुदर्शन कवच मौखिक याद करवा दिया, वह कुछ पढ़ा लिखा भी था और उसका शिक्षा क्रम में संस्कृत भी एक विषय रहा था, अतः आसानी से वह सीख गया।

उसने मुझे अपना संस्मरण सुनाते हुए बताया, कि एक दिन वर्षा में उसने दिन भर के थके-मांदे बैलों को चराने के लिये रात को छोड़ दिया था। एक बैल अंधेरे की वजह से एक खड्डे में कुछ इस प्रकार गिरा कि प्रयत्न करने के बावजूद भी उसको निकालना आसान न रहा।

चरवाहे ने मुझे यह सूचना दी कि एक बैल गायब है। मेरी खेती का एक मात्र आधार ही मेरे बैल थे। उनमें से भी यदि एक बैल को कुछ हो जाता है तो मेरी दुनिया निश्चय ही अंधकारमय हो जायेगी। मैंने हाथ में लालटेन ली, प्रभु से प्रार्थना की कि उस मूक पशु की रक्षा करना, ऐसा न हो कि मैं इस वर्ष अपनी खेती से वंचित हो जाऊं। उस समय मुझे आप द्वारा बताई गई स्तुति याद आ गई। मैं लालटेन लिये

नये मार्ग पर बढ़ रहा था, और मेरे होठों से सुदर्शन कवच का पाठ चल रहा था।

जंगल में मैं काफी घूमा पर मुझे वह बैल कहीं दिखाई नहीं दिया। वर्षा ऋतु होने से रास्ता भी भूल गया। तीन चार-घण्टे भटकने बाद जब मुझे बैल नहीं मिला तो मैं घर लौट आया। मैं सारी रात सुदर्शन कवच का पाठ करता रहा। सुबह जब मैं गौशाला गया तो वहां पर भी मेरा बैल नहीं था, पर उस समय मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा, जब मैं वापिस घर लौटा तो मेरे घर के दरवाजे पर वही बैल खड़ा था। उसके शरीर पर किसी भी प्रकार के चोट के निशान नहीं थे। भयानक वर्षा की अंधेरी रात में खड्डे में गिर जाने के बाद भी वह बैल बाहर निकल आया, और गिरने के बावजूद भी उसे किसी प्रकार की चोट नहीं लगी, यह सुदर्शन कवच का ही प्रभाव था। इसी ने उस दिन मेरे बैल की रक्षा की और इस प्रकार मैं एक गंभीर हानि से बच गया।

उसके बाद से कुम्हार का यह पक्का नियम बन गया कि वह तब तक भोजन नहीं करता था जब तक कि वह एक बार सुदर्शन कवच का पाठ नहीं कर लेता था।

● इसी प्रकार की एक घटना ठाकुर बलभद्र सिंह जी ने मुझे सुनाई थी। एक बार भाद्रपद की अंधेरी रात में मूसलाधार वर्षा हो रही थी, बिजली जोरों से कड़क रही थी, और ठाकुर साहब अपने दो बच्चों तथा पत्नी को लेकर अपनी पुरानी हवेली में सो रहे थे। अचानक उन्हें कुछ झटका सा महसूस हुआ और ऐसा अनुभव हुआ जैसे यह पुरानी हवेली इस भयानक तूफान का सामना नहीं कर सकेगी। रात के लगभग दो बजे होंगे और उन्हें यह विचार आया कि मुझे अपनी पत्नी तथा बच्चों को लेकर पूजा गृह में जाकर बैठ जाना चाहिए। वे उठे, उनके मुंह से सुदर्शन कवच का पाठ चल रहा था, ज्योंही वे अपनी पत्नी तथा पुत्र को लेकर कमरे से बाहर निकले कि वह कमरा तूफान के चोटों से भहरा कर गिर पड़ा। यदि एक क्षण भी विलम्ब होता तो ठाकुर साहब का पूरा परिवार उसी में दब कर हमेशा-हमेशा के लिये समाप्त हो जाता।

इसके बाद वे सारी रात पूजा गृह में बैठे रहे जो कि उसी कमरे से सटा हुआ था, पर पूजा गृह का बाल भी बांका नहीं हुआ था। वे आज भी इस बात पर आश्चर्य प्रकट कर रहे हैं, कि वह कौनसी शक्ति थी जिसने मुझे रात को दो बजे अपना कमरा छोड़ने के लिए बाध्य किया और पत्नी तथा बच्चों के साथ कमरे से बाहर निकलने की प्रेरणा दी? यदि मैं पांच मिनट और कमरे में बिताता तो आज मैं यह अनुभव सुनाने के लिये जीवित नहीं रहता।

ठाकुर साहब ने अपनी पूजा में केवल सुदर्शन कवच का पाठ ही सम्मिलित किया है। इसके अलावा वे किसी प्रकार की कोई पूजा या विधि-विधान नहीं रखते। उन्होंने इस कवच से सम्बन्धित सैकड़ों घटनाएं मुझे बताई। उन्होंने कहा कि यदि आज मैं जीवित हूं तो केवल इस कवच के प्रभाव से ही। उन्होंने अपने जीवन की एक और घटना मुझे सुनाई थी।

एक बार ठाकुर साहब अपनी पत्नी, माता जी तथा बहिन को लेकर अपने ससुराल जा रहे थे। उस समय बैलगाड़ियों से आवागमन होता था। बैल-गाड़ियां रात के ठंडे मौसम में ही चला करती थी।

ठाकुर साहब ने किस्सा बताते हुए कहा कि मेरी पत्नी तथा बहिन के शरीर पर काफी गहने थे। जब बैलगाड़ी मेरे गांव से लगभग ८-१० मील दूर निकल गई तो मार्ग में सुस्ताने के लिये हमने पांच-सात मिनट रुकने का निश्चय किया। अभी हम भली प्रकार से ठहर भी नहीं पाये थे कि चार-पांच लट्ठधारी न मालूम किधर से आये और हम लोगों को चारों ओर से घेर लिया। निश्चय ही उनका विचार

हमें लूटने का था और यदि हम जोर-जबरदस्ती करते तो प्राण भी ले लेने की उनकी नीयत थी। गाड़ी वाला अलग खड़ा थर-थर कांप रहा था। मेरे पास तलवार के अलावा कोई ऐसा शस्त्र नहीं था कि जिससे उन पांच-छः लाठीधारियों से मुकाबला कर सकूं। मैंने अपने आपको भगवान के भरोसे छोड़ दिया। मुंह से सुदर्शन कवच का पाठ स्वतः ही प्रारम्भ हो गया।

पंडित जी! आपको आश्चर्य होगा कि दो-तीन मिनट भी नहीं बीते होंगे कि सामने वाले रास्ते से तेजी से दौड़ते हुए दो घुड़सवार आए, और उन्होंने उन लाठीधारियों से बिना कुछ कहे सुने ही मुकाबला करना शुरू कर दिया। मामूली से प्रतिरोध के बाद लट्ठधारी भाग खड़े हुए।

घुड़सवार बोले, ठाकुर साहब आपको रात में बिना पूरी रक्षा के नहीं निकलना चाहिए था। आप तो हमें शायद नहीं पहचानते पर हम आपको जानते हैं। अब आप जाइये, आपको मार्ग में कोई तकलीफ नहीं होगी।

उस दिन से आज तक उन घुड़सवारों के दुबारा दर्शन नहीं हुए न मैं उन्हें पहचान सका कि वे कौन थे और न यह जान सका कि मेरी मदद करके किधर चले गए? उस दिन इस सुदर्शन कवच ने ही मेरी इज्जत, धन तथा प्राणों की रक्षा की थी।

● बाबू राम सहाय ने भी इसी प्रकार की एक घटना मुझे बताई थी। एक बार बाबू राम सहाय व्यापार के कार्य से चौबीस हजार रुपये लेकर बम्बई गये उन्हें किसी कार्य से योगेश्वरी जाना था। सेन्ट्रल स्टेशन पर उतर कर उन्होंने टैक्सी किराये पर की और अपने गन्तव्य स्थल की ओर बढ़ गए।

टैक्सी ड्राइवर को कुछ ऐसा अनुभव हो गया था कि इस आसामी के पास भारी रकम है, अतः मार्ग में एक स्थान पर जान बूझकर उसने टैक्सी रोक दी और बताया कि टैक्सी में कुछ खराबी हो गई है। उस समय रात्रि के लगभग साढ़े दस-ग्यारह बजे थे। थोड़ी देर बाद ड्राइवर ने मुंह से सीटी बजाई एक व्यक्ति तहमद बांधे मेरे सामने आ खड़ा हुआ और एक लम्बा चाकू दिखाते हुए मुझसे बोला—तुरन्त पास में जो रुपया-पैसा है वह निकाल कर दे दो, अन्यथा यह पूरा का पूरा चाकू सीने में घुस जाएगा। मेरे हाथ में अटैची थी और उस अटैची में चौबीस हजार रुपये के नोट थे। मैंने उस अटैची को कस कर पकड़ लिया, प्रभु को सहायता के लिये पुकारा और मुंह से स्वतः ही सुदर्शन कवच का पाठ आरम्भ हो गया।

अचानक मेरे हाथ को झटका लगा और मैंने देखा कि तहमद वाला व्यक्ति मेरे हाथ से अटैची छीन-कर भाग रहा है, संभवतः टैक्सी ड्राइवर तथा उस व्यक्ति में कोई गुप्त समझौता था, पर उस समय टैक्सी ड्राइवर को ऐसा लगा कि वह अकेले ही सारा रुपया लेकर भाग रहा है। अतः वह भी उसके पीछे भागा और आठ दस कदम पर ही उसे दबोच लिया। दोनों आपस में गुत्थम गुत्था हो गये। अटैची हाथ से छिटक कर एक तरफ जा गिरी और मैंने देखा कि दोनों ने चाकू निकाल लिये हैं। मैं सांस रोके इस घटना को देख रहा था, अचानक मैंने देखा कि ड्राइवर के हाथ का चाकू उस तहमद वाले व्यक्ति के सीने में पूरा का पूरा घुस गया है। इस बीच तहमद वाले व्यक्ति का चाकू भी ड्राइवर के पेट में दो तीन बार घुस चुका था। दोनों अशक्त होकर गिर पड़े और कुछ ही मिनटों में तड़फ कर शान्त हो गये।

इसी समय एक पुलिस मैन वहां आ गया। मैंने उसे सारी बात बताई। वह भला व्यक्ति था उसने अटैची उठाकर चुपचाप चले जाने को कहा नहीं तो व्यर्थ में और समस्याएँ पैदा हो जाती। मैंने भगवान को लाख-लाख धन्यवाद दिया और तुरन्त वहां से अटैची लेकर रवाना हो गया, उस दिन

सुदर्शन कवच के प्रभाव से ही मैं अपने प्राण और धन की रक्षा कर सका।

वस्तुतः सुदर्शन कवच अपने आप में अद्भुत प्रभावकारी स्तुति है। मैंने सैंकड़ों व्यक्तियों को इसका पाठ करने की सलाह दी है और उन लोगों ने यह अनुभव किया है कि विपत्ति के समय इस कवच की कुछ पंक्तियों का ही पाठ हो जाये तो वह तुरन्त प्रभाव देने लग जाता है। आवश्यकता इस बात की है कि इस कवच का पाठ नित्य एक बार अवश्य हो, जिससे कि विपत्ति पड़ने पर यह कवच उसके लिये स्वतः सिद्ध हो सके और इसका लाभ मिल सके।

वस्तुतः इस कवच का नित्य पाठ करना आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति के लिये अनुकूल एवं श्रेष्ठकर है।

सुदर्शन कवच

ॐ अस्य श्री सुदर्शनकवचमालामन्त्रस्य। श्रीलक्ष्मीनृसिंहः परमात्मा देवता। मम सर्व-कार्यसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ॐ क्ष्रौं अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ श्रीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ सहस्रार अना-मिकाभ्यां नमः। ॐ हुं फट् कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ स्वाहा करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः। एवं हृदयादि।

ध्यानमः उपास्महे नृसिंहाख्यं ब्रह्मवेदान्त गोचरम्। भूयो लालितसंसारच्छेदहेतुं जगद्-गुरुम्।

मानस पूजाः लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। यं वायवात्मकं धूपं समर्पयामि। रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि। वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि। सं सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि। नमस्करोमि।

ॐ सुदर्शनाय नमः। आं ह्रीं क्रों नमो भगवते प्रलयकालमहाज्वालाघोर-वीर-सुदर्शन-नारसिंहाय ॐ महाचक्रराजाय महाबलाय सहस्रकोटिसूर्यप्रकाशाय सहस्रशीर्षाय सहस्राक्षाय सहस्रपादाय संकर्षणात्मने सहस्रदिव्यास्त्र-सहस्र-हस्ताय सर्वतोमुखज्वलन-ज्वालामालावृताय विस्फुलिंगस्फोटपरिस्फोटित ब्रह्माण्ड भाण्डाय महापराक्रमाय महोग्रविग्रहाय महावीराय महा-विष्णुरूपिणे व्यतीतकालान्तकाय महाभद्ररौ-द्रावताराय मृत्युस्वरूपाय किरीटहार केयूर-ग्रैवेय कटकांगुलीय कटिसूत्र-मंजीरादिकनकमणिखचित दिव्यभूषणाय महाभीषणाय महाभीक्षया व्याहततेजोरूपनिधये रक्तचण्डान्तकमण्डित-मदोरुकुण्डादुर्निरीक्षमाण प्रत्यक्षाय ब्रह्मचक्र-विष्णुचक्र कालचक्र-भूमिचक्र तेजोरूपाय आश्रितरक्षाय।

ॐ सुदर्शन विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् इति स्वाहा-स्वाहा (दो बार) भो भो सुदर्शन नारसिंह मां रक्षय रक्षय।

ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्। (दो बार)

मम शत्रुन्नाशय नाशय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्॥ (दो बार)

ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल चंड चंड प्रचंड प्रचंड स्फुर स्फुर प्रस्फुर प्रस्फुर घोर घोर घोरतर घोरतर चट चट प्रचट प्रचट प्रस्फुट दह कहर भग भिधि हंधि खटट प्रचट फट जहि जहि पय सस प्रलयवायुरूपाय रं रं नेत्राग्नि-रूपाय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् दो बार)।

भो भो सुदर्शन नारसिंह मां रक्षय रक्षय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्।। (दो बार)

एहि एहि आगच्छ आगच्छ भूतग्रह प्रेतग्रह-पिशाचग्रह-दानवग्रह कृतिमग्रह-प्रयोगग्रह-आवेश-ग्रह-आगतग्रह-अनागतग्रहान् ब्रह्मग्रह-रुद्रग्रह-पाताल-निराकारग्रह-आचार अनाचरग्रह-नानाजातिग्रह- भूचरग्रह-खेचरग्रह - वृक्षचरग्रह-पक्षिचरग्रह-गिरिचरग्रह-श्मशानचरग्रह-जलचर-ग्रह-कूपचरग्रह- देगारचरग्रह - शून्यागारचरग्रह स्वप्नग्रह-दिवामनोग्रह-बालग्रह-मूकग्रह-मूर्खग्रह-वधिरग्रह-स्त्रीग्रह - पुरुषग्रह-यक्षग्रह-राक्षसग्रह-प्रेतग्रह - किन्नरग्रह-साध्यचरग्रह - सिद्धचरग्रह-कामिनीग्रह-मोहिनीग्रह-पद्मिनीग्रह--यक्षिणीग्रह पक्षिणीग्रह-संध्याग्रह - मार्गग्रह - कलिंगदेवीग्रह-भैरवग्रह-वेतालग्रह-गंधर्वग्रह प्रमुखसकलदुष्ट-ग्रहरातान् आकर्षय आकर्षय आवेशय ड ड ठ ठ ह्रय वाचय दह्य भस्मीकुरु उच्चाटय उच्चाटय।

ॐ सुदर्शन विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्।। (दो बार)

भो भो सुदर्शन नारसिंह मां रक्षय रक्षय।

ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्र प्रचोदयात।। (दो बार)

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षौं क्षः भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रें भ्रौं भ्रः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रौं ह्रः घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रें घ्रौं घ्रः श्रां श्रीं श्रूं श्रें श्रौं श्रः। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्।। (दो बार)

एहि एहि सालवं संहारय शरभं क्रंदय रुद्रं विद्रावय विद्रावय भैरवं भीषय भीषय प्रत्यंगिरं मर्दय मर्दय चिदम्बरं बन्धय बन्धय विडम्बरं ग्रासय ग्रासय शांभवीं निवर्तय निवर्तय कालीं दह दह महिषासुरीं छेदय छेदय दुष्टशक्ति निर्मूलय निर्मूलय रूं रूं हूं हूं मुरु मुरु परमंत्र-परयंत्र-परतंत्र कटुपर वादुपर जपपर होमपर सहस्रदीप-कोटिपूजां भेदय-भेदय मारय-मारय खंडय-खंडय परकर्तृकं विषं निर्विषं कुरु कुरु अग्निमुख-प्रकाण्ड नानाविधकर्तृ मुख-वन-मुख्यग्रहान् चूर्णय-चूर्णय मारीं विदारय-विदारय कूष्मांडवैनायक-मारीचगणान् भेदय-भेदय मंत्रापरस्मांकं विमोचय विमोचय अभिशूल-कुक्षिशूल-गुल्मशूल पार्श्वशूल-पादशूल सर्वाबाधां निवारय निवारय पांडुरोगं संहारय संहारय विषमज्वरं त्रासय त्रासय एकाहिकं द्वाहिकं त्र्याहिकं चातुर्थिकं पंचाहिकं षष्ट्ज्वरं सप्तमज्वरं अष्टमज्वरं नवमज्वरं भूतज्वरं प्रेत-ज्वरं पिशाचज्वरं दानवज्वरं महाकालज्वरं दुर्गाज्वरं ब्रह्मविष्णुज्वरं माहेश्वरज्वरं चतुःषष्ठीयोगिनी ज्वरं गंधर्वज्वरं वेताल-ज्वरं एतान् ज्वरान्नाशय नाशय दोषं मंथय मंथय दुरितं हर हर अनंतवासुकि-तक्षक-कालीय-

पद्म-कुलिक-कर्कोटक-शंख-पालाद्यष्टनागकुलानां विषं हन हन खें खें घें घें पाशुपतं नाशय नाशय शिखण्डिं खंडय खंडय ज्वालामालिनीं निवर्तय निवर्तय सर्वेन्द्रियाणि स्तंभय स्तंभय खण्डय खंडय प्रमुखदुष्टतंत्रं स्फोटय स्फोटय भ्रामय भ्रामय महानारायणस्त्राय पंच-शद्वर्णरूपाय लल लल शरणगतरक्षणाय हुँ हुँ गं त्रं गं वं शं शं अपृतमूर्तये तुभ्यं नमः।

ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रचोदयात्।। (दो बार)

भो भो सुदर्शन नारसिंह मां रक्षय रक्षय। ॐ सुदर्शनाय विद्महे महाज्वालाय धीमहि। तन्नश्चक्रः प्रयोदयात्।। मम सर्वारिष्टशांति कुरु कुरु सर्वतो रक्ष रक्ष ॐ ह्रीं हूं फट् स्वाहा। ॐ क्षौं ह्रीं सहस्रार हूं फट् स्वाहा।

नित्य आरती के पश्चात पढ़ने योग्य समर्पण-स्तुति

श्री राम-स्तुति

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं।
नवकंज-लोचन, कंजमुख, कर-कंज, पद कंजारुणं।।
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुंदरं।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं।।
भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं।
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदनं।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं।
आजानुभुज शर-चाप-धर, संग्राम-जित-खरदूषणं।।
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनं।
मम हृदय-कंज निवास कुरु, कामादि खलदल-गंजनं।।
मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हिय हरषीं अली।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली।।

सो०—जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे।।

सियावर रामचन्द्रकी जय।।

बगलामुखी कवच

बगला मुखी कवच अपने आप मे विश्व-विख्यात है, इसकी उपासना और साधना सभी प्रकार के व्यक्ति करते हैं, और इसका फल उठाते हैं। बगला मुखी कवच की बड़ी भारी विशेषता यह है कि यह कवच मुख्यतः शत्रुहन्ता है। शत्रुओं को दमन करने, शत्रुओं को परास्त करने तथा मुकदमें आदि में विजय प्राप्त के लिये इससे बढ़कर कोई कवच नहीं है। यदि कोई व्यक्ति किसी षड़यंत्र का शिकार हो गया हो तो उसे अवश्य ही बगलामुखी कवच का पाठ करना चाहिए। यों भी मेरी धारणा तो यह है कि शत्रु चाहे वह व्यक्ति के रूप में हो, चाहे रोग के रूप में और चाहे मानसिक परेशानियों के रूप में हो, उनको शान्त करने एवं परास्त करने के लिये इससे बढ़कर कोई उपाय नहीं है। सामान्यतः कोई न कोई शत्रु हमारे जीवन में बना ही रहता है, चाहे वह शत्रु दैहिक हो, दैविक हो अथवा भौतिक हो, हमारे लिये यह जरूरी है कि हम नित्य एक बार बगला मुखी कवच का पाठ करें।

नीचे मैं कुछ ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण दे रहा हूँ जिनको बगलामुखी कवच से लाभ हुआ है और उनके जीवन में बगला मुखी कवच ने महत्वपूर्ण हिस्सा अदा किया है।

● दिल्ली के एक प्रसिद्ध बैंक के मैनेजर एक षडयंत्र के शिकार हो गये थे। उनकी कोई गलती न होने पर भी वे षड्यन्त्र में उलझ गये। इसका तुरन्त प्रभाव यह हुआ कि उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया। उन दिनों उनकी प्रतिष्ठा तथा सामाजिक स्थिति डांवाडोल हो रही थी। ऐसे ही दिनों में उनका टेलीफोन मेरे पास आया और उन्होंने बताया कि मैं व्यर्थ में ही उलझ गया हूँ जबकि इस प्रकार की कोई बात मेरे जीवन में नहीं रही है। न तो मैंने किसी प्रकार का गबन किया है और न इस षड्यन्त्र में किसी रूप में शामिल हूं। पर पता नहीं ऐसी कौन-सी ग्रह स्थिति मेरे जीवन में आ गई है कि जिससे मैं इस चक्रव्यूह में उलझ गया हूं। अब आप ही मेरे रक्षक हैं। कोई ऐसा उपाय मुझे बताइये जिससे कि इस चक्रव्यूह से छुटकारा पा सकूं।

मैंने उसी समय टेलीफोन पर सूचित किया कि तुम्हें नित्य बगला मुखी कवच का पाठ करना चाहिए। इस कवच का ज्यादा प्रभाव तब होता है जब पाठ करते समय हम पीले वस्त्र ही धारण करें। ज्यादा अच्छा यही रहता हैं कि धोती तथा अंगोछा पीले रंग में रंगे हुए हों।

दूसरे ही दिन से उसने मेरी आज्ञा को मानते हुए मेरे निर्देशों के अनुसार बगला मुखी कवच का पाठ आरम्भ कर दिया। उनको तथा उनके मित्रों को यह देखकर अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि उसी दिन से उनकी स्थिति में सुधार होना प्रारम्भ हो गया, तथा मात्र एक महीने के भीतर-भीतर उनके ऊपर जितने अभियोग थे, वे वापस ले लिये गए तथा ससम्मान उन्हें पुनः नौकरी में ले लिया गया।

उस दिन से वे बगला मुखी कवच के अनन्य भक्त बन गये हैं और जब भी वे अपने किसी मित्र

को किसी भी प्रकार की मुसीबत में देखते हैं तो उन्हें इसी कवच के पाठ करने की सलाह देते हैं इस प्रकार उन्होंने अपने सैकड़ों मित्रों की सहायता की है. तथा इस कवच के माध्यम से उनकी समस्याओं को दूर करने में सहायक हुए हैं।

इन्दौर के रामसहाय जी मेरे अच्छे परिचितों में से हैं। एक बार उनके ही एक रिश्तेदार ने उन पर झूठा मुकदमा दायर कर दिया। धीरे-धीरे स्थिति इतनी विकट हो गई कि ऐसा लगने लगा कि इसका फैसला राम सहाय जी के विरुद्ध हो जायेगा और उन्हें अवश्य ही जेल हो जायेगी।

जब वे इस प्रकार की गम्भीर मानसिक यन्त्रणाओं से ग्रस्त थे तो वे जोधपुर मेरे पास आए और उन्होंने मुझे अपनी सारी स्थिति से अवगत कराया। साथ ही मुझे कहा कि यदि मैं इस मुकदमे में सफल नहीं हुआ तो मुझे जेल अवश्य हो जायेगी और जेल जाने की अपेक्षा मैं आत्म-हत्या को ज्यादा श्रेयस्कर समझता हूं। ऐसा कहते-कहते उनकी आंखों से टप-टप आंसू बहने लगे।

मैंने उन्हें सान्त्वना दी और विश्वास दिलाया कि यदि आप सही रास्ते पर हैं तो आपका बाल भी बांका नहीं हो सकता, अच्छा हो आप बगला मुखी कवच का एक पाठ नित्य करने लग जांय। मैंने उन्हें बगला मुखी कवच की एक प्रति दी और किस प्रकार से पाठ किया जाना चाहिये इसकी विधि भी समझाई।

लगभग महीने भर बाद उनका पत्र आया कि पंडित जी! आपने जो मुझे अद्भुत कवच दिया था उसी का यह प्रभाव है कि आज मैं मुकदमें में पूर्णतः सफल हो गया हूं और एक बार पुनः मुझ में जीने की उमंग बढ़ गई है। यह कवच अपने आप में अद्भुत है। इस मुकदमें में जीतने का एक प्रतिशत चान्स मेरा नहीं था, परन्तु जिस दिन से मैंने इस कवच का पाठ प्रारम्भ किया उस दिन से स्थिति मेरे अनुकूल होती चली गई और एक महीने के अन्दर ही अन्दर इसने मुझे चमत्कार दिखा दिया। मैं अपने कार्य में पूर्णतः सफल हो गया हूं।

इसके बाद उन्होंने अपने कई मित्रों एवं परिचितों को इस स्तोत्र के बारे में बताया है और अन्य लोगों ने भी इस स्तोत्र से पूरा-पूरा लाभ उठाया है।

जैसलमेर के खीची हरीसिह ने भी इस स्तोत्र के बारे में एक आश्चर्यजनक किस्सा बताया था।

एक बार वे अपने भानजे की बारात से लौट रहे थे। बैलगाड़ियों में उनके परिवार की स्त्रियां तथा सामान लदा हुआ था। जैसलमेर की तरफ लुटेरे घूमते ही रहते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति साथ में शस्त्र रखता ही है। खीची जी के पास में एक बन्दूक थी। जब वे बीच मार्ग में थे तो लगभग १४-१५ डाकुओं ने उन्हें घेर लिया और चारों तरफ से बन्दूकें उठा ली। यह सब इतने अप्रत्याशित रूप में हुआ कि उन्हें तथा गाड़ीवालों को अपने शस्त्र उठाने का अवसर ही नहीं मिल सका।

खीची जी के पास और कोई साधन तो नही था। उन्होंने उस समय प्रभु को स्मरण करना ही उचित समझा और अनवरत रूप से बगलामुखी कवच का पाठ करना प्रारम्भ कर दिया। गाड़ी वाले तथा खीची जी ने लगभग पांच सात मिनट के बाद ही देखा कि वे डाकू एक स्थान पर एकत्रित होकर कुछ विचार विमर्श कर रहे हैं. और दो तीन मिनट बाद ही वे वहां से भाग खड़े हुए न तो उन्होंने खीचीं जी को ललकारा और न किसी प्रकार की मार-काट ही की आश्चर्य की बात तो यह है कि उस समय स्त्रियों के गहने आदि मिलाकर एक लाख से ज्यादा का सामान गाड़ियों में लदा हुआ था, यदि मारकाट भी होती तो डाकू संख्या में ज्यादा थे, अतः उस दिन किसी का बचना संभव नहीं था, यह इस कवच का ही प्रभाव था कि वे सकुशल डाकुओं से बच सके।

अथः बगलामुखी कवचं प्रारभ्यते

श्रुत्वा च बगला पूजां स्तोत्रं चापि महेश्वर ॥ इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं वद मे प्रभो ॥१॥ वैरिनाशकरं दिव्यं सर्वाऽशुभ-विनाशनम् ॥ शुभदं स्मरणात्पुण्यं त्राहि मां दुःख-नाशनम् ॥२॥ श्री भैरव उवाच ॥ कवचं शृणु वक्ष्यामि भैरवीप्राणवल्लभम् ॥ पठित्वा धारयित्वा तु त्रैलोक्ये विजयी भवेत् ॥३॥

ॐ अस्य श्री बगलामुखीकवचस्य नारद ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीबगलामुखी देवता । लं बीजम । ऐं कीलकम् । पुरुषार्थचतुष्टयसिद्धये जपे विनियोगः ॥ शिरो मे बगलां पातु हृदयैकाक्षरी परा । ॐ ह्लीं ॐ मे ललाटे च बगला वैरिनाशिनी ॥१॥ गदाहस्ता सदापातु मुखं मे मोक्षदायिनी । वैरिजिह्वाधरा पातु कण्ठं में बगलामुखी ॥२॥ उदरं नाभिदेशं च पातु नित्यं परात्परा ॥ परात्परतरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी ॥३॥ हस्तौ चैव तथा पादौ पार्वती परिपातु मे ॥ विवादे विषमे घोरे संग्राम रिपुसंकटे ॥४॥ पीताम्बरधरा पातु सर्वांग शिवनर्तकी । श्रीविद्या समयं पातु मातंगी पूरिता शिवा ॥५॥ पातु पुत्र सुतश्चैव कलत्रं कालिका मम ॥ पातु नित्यं भ्रातरं मे पितरं शूलिनी सदा ॥६॥ रंध्रे हि बगलादेव्याः कवचं मन्मुखोदितम् ॥ न वैदेयममुख्याय सर्वसिद्धि प्रदायकम् ॥७॥ पठनाद्धारणादस्य पूजनाद्वांछितं लभेत् ॥ इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगला-मुखीम् ॥८॥ पिबन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य सादराः ॥ वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा ॥९॥ महाभये विपत्तौ च पठेद्वा पाठयेत्तु यः । तस्य सर्वार्थसिद्धि स्याद्भक्ति-युक्तस्य पार्वति ॥१०॥

॥ अथ बगलामुखी स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीबगलामुखीदेव्यै नमः ॥ ॐ अस्य श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य भगवान् नारद ऋषिः । बगलामुखी देवता । मम सन्निहितानां दुष्टानां विरोधिनां वाङ्मुख-पदजिह्वाबुद्धीनां स्तम्भनार्थे श्रीबगलामुखीवर-प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ बगलामुखी तर्जनीभ्यां स्वाहा ॥ ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट् ॥ ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम् ॥ ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॥ ॐ बुद्धि नाशय ॐ ह्लीं स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ॥ एवं हृदयादिषु ॥

अथ ध्यानम् ॥ सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं हेमाभांगरुचि शशांकमुकुटां स्रक्चम्पकस्रग्युताम् ॥ हस्तै-मुंद्गरपाशबद्धरशनां संबिभ्रतीं भूषणैर्व्याप्तांगी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तये ॥१॥

अथ मन्त्रः ॥ॐ॥ ह्लीं बगलामुखि सर्व-दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ॥

अथ स्तोत्रम् ॥ ॐ मध्ये सुधाब्धि-मणिमण्डपरत्नवेद्यां सिंहासनोपरिगतां परि-पीतवर्णाम् ॥ पीताम्बराभरणमाल्यविभूषि-

तांगीं देवीं भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ।।१।। जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रुं परिपीडयन्तीम् ।। गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां भजामि ।।२।। ॐ चलत्कनककुण्डलोल्लसितचारुगंडस्थलीं लसत्कनकचम्पकद्युतिमदिन्दुबिम्बाननाम् गदाहतविपक्षिकांकलितलोलजिह्वांचलां स्मरामि बगलामुखींविमुखवाङ्मुखस्तम्भिनीम् ।।३।। पीयूषोदधिमध्यचारुविलसद्रक्तोत्पले मण्डपे तत्सिंहासनमौलिपातितरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम् ।। स्वर्णाभां करपीडितारिरसनां भ्राम्यद्गदां बिभ्रतीमित्थं ध्यायति यान्ति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापद: ।।४।। देवि त्वच्चरणाम्बुजार्चनकृते य: पीतपुष्पांजलिम् भक्त्या वामकरे निधाय च पुनर्मन्त्रं मनोज्ञाक्षरम् । पीठध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद् बीजं स्मरेत्पार्थिवं तस्यामित्रमुखस्य वाचिहृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात् ।।५।। वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानर: शीतति क्रोधी शाम्यति दुर्ज्जन: सुजनति क्षिप्रानुग: खंजति ।। गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणायन्त्रित: श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नम: ।।६।। मन्त्रस्यात्मबलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते यन्त्रं वादिनियन्त्रणं त्रिजगतां जैत्रं च चित्रं च ते ।। मात: श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे त्वन्नामग्रहणेन संस द मुखस्तम्भो भवेद्वादिनाम् ।।७।। दुष्टस्तम्भनमुग्रवैरिशनं दारिद्र्यविद्रावणं भूभृद्भीशमनं चलन्मृगदृशां चेत:समाकर्षणम् ।। सौभाग्यैकनिकेतनं यमदृश: कारुण्यपूर्णामृतं मृत्योर्मारणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपु: ।।८।। मातर्भंजय मे विपक्षवदनं जिह्वां च संकीलय ब्राह्मी मुद्रय मुद्रयाशु धिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय ।। शत्रूंश्चूर्णय देवि तीक्ष्णगदया गौरांगि पीताम्बरे विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे ।।६।। मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामाक्षि वामे रमे ।। मातंगि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे दासोऽहं शरणागत: करुणया विश्वेश्वरि त्राहि माम् ।।१०।। संरम्भे चौरसंघे प्रहरणसमये बन्धने वारिमध्ये विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम् ।। वश्यत्वे स्तम्भने वा रिपुवधसमये दुर्विवादे रणेवा गच्छंस्तिष्ठंस्त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीर: ।।११।। नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्या: पठत्यादराद् धृत्वान्यत्र इदं तथैव समरे बाहौ करे वा गले ।। राजानोऽप्यरयो मदान्धकरिण: सर्पा मृगेन्द्रादिकास्ते वै यन्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मी: स्थिरा सर्वत: ।।१२।। त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघसंश्छेदिनी योषाकर्षणकारिणी त्रिजगतामानन्दसंवर्द्धिनी ।। दुष्टोच्चाटनकारिणी जनमन:संमोहसंदायिनी जिह्वां कीलय भैरवो विजयते ब्रह्मास्त्रविद्या परा ।।१३।। विद्या लक्ष्मी: सर्वसौभाग्यमायु: पुत्रै: पौत्रै: सर्वसाम्राज्यसिद्धि: ।। मानं भोगो वश्यमारोग्यसौख्यं प्राप्ते तत्तद्भूतलेऽस्मिन्नरेण ।।१४।। यत्कृतं जपसन्नाहं गदितं परमेश्वरि ।। दुष्टानां निग्रहार्थाय तद्गृहाण नमोऽस्तुते ।।१५।। ब्रह्मास्त्रमिति विख्यातं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम ।। गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ।।१६।। पीताम्बरांच द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोज्जवलाम् ।। शिलामुद्गरहस्तां च स्मरेत्तां बगलामुखीम् ।।१७।।

●

सौभाग्याष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र

सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्र मुख्य रूप से स्त्रियों के लिये है। इसके बारे में शास्त्रों में लिखा है कि जो स्त्री अपने सौभाग्य को अक्षुण्ण देखना चाहती है या जिसे अपना पति प्रिय है, या जो पूर्ण गृहस्थ सुख देखना चाहती है, उसे इस स्तोत्र का पाठ अवश्य करना चाहिए, क्योंकि यह स्तोत्र उसके सुख-सौभाग्य की रक्षा के लिए तथा पति के स्वास्थ्य के लिए पूर्णत: प्रभावकारी है। जब भी कोई महिला अपने पति को परेशानी में देखे या किसी समस्या से ग्रस्त देखे तो उसे इस स्तोत्र का पाठ नियमित रूप से प्रारम्भ कर देना चाहिए। कुछ समय बाद ही वह देखेगी कि उसके पति तत्कालिक समस्या से मुक्त हो गए हैं और काफी लाभदायक स्थिति में हैं।

इससे सम्बन्धित सैकड़ों घटनाएं मेरे मानस में घूम रही हैं। यद्यपि मैं उन सभी घटनाओं को यहां लिपिबद्ध नहीं कर सकता परन्तु उनमें से कुछ घटनाएं पाठकों के सामने रखना आवश्यक समझता हूं।

● इलाहाबाद की तरफ मैं यात्रा पर था। उन्हीं दिनों एक महिला मुझे मिला और उसने करुणा भरे स्वर में मुझे बताया कि मैं संसार में सबसे अधिक दुखी महिला हूं क्योंकि मुझे अपने पति का सुख नहीं के बराबर मिल रहा है। इस समय मेरे तीन बच्चे हैं फिर भी मेरे पति किसी अन्य स्त्री के सम्पर्क में हैं जिसके कारण वे न तो समय पर घर आते हैं और न मुझसे बातचीत ही करते हैं। लगभग एक साल बीत गया है। मैं सब तरीकों से उन्हें समझा कर हार चुकी हूं। मेरे पीहर की तरफ से भी दबाव डाला गया है। मेरे ससुराल वालों ने भी उन्हें कई तरीकों से समझाने की चेष्टा की है पर उन पर किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है। अब तो वे मुझे मारने-पीटने भी लग गये हैं।

वस्तुत: उस महिला का सौभाग्य खतरे में पड़ गया था। वह यह अनुभव कर रही थी कि उसके बच्चे इस प्रकार की घटनाओं को देखकर क्या सोचते होंगे? उनके कोमल हृदय पर इसका क्या प्रभाव पड़ता होगा? इसके साथ ही जब वह देखती कि मुझे पति का सुख नहीं के बराबर है तो उसकी आत्मा का क्रन्दन क्या स्वाभाविक नहीं था?

मैंने उसकी सारी करुण गाथा को सुनकर सलाह दी कि इसके लिये तांत्रिकों अथवा साधुओं के चक्कर में पड़ने से कोई फायदा नहीं है। अच्छा तो यह हो कि आप सौभाग्याष्टोत्तरशतनाम स्तोत्र का एक पाठ नित्य करें। मैंने बाजार से लाकर एक प्रति भी उसे भेंट की। साथ ही किस प्रकार से पाठ किया जाना चाहिए इसकी विधि भी समझाई। पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि वह जिन समस्याओं से जूझ रही थी उनसे वह मात्र एक महीने में मुक्त हो गई। उसके पति ने जिस स्त्री से सम्पर्क किया हुआ था, किसी कारण वश उन दोनों में लड़ाई हो गई और हमेशा-हमेशा के लिये उनका सम्पर्क टूट गया। जब उससे सम्पर्क समाप्त हो गये तो उसका रुझान अपनी पत्नी की तरफ बढ़ा। वह अपनी पत्नी में रुचि लेने लगा और गृहस्थी की तरफ ध्यान देने लगा। और

महीने भर के अन्दर-अन्दर उस महिला का खोया हुआ सौभाग्य उसे वापस मिल गया।

वह आज भी इस स्तोत्र को संसार के सबसे अच्छे स्तोत्रों में मानती है। इस स्तोत्र के माध्यम से कई दुखी बहिनों की उसने सहायता की है।

अहमदाबाद की घटना है। जब मैं अहमदाबाद में था तो एक दिन एक गुजराती महिला मुझसे मिलने के लिए आई। वह करीब पांच दिनों तक मुझसे मिलने आती रही पर मुंह से कुछ भी नहीं कहा। एक दिन मैंने पूछा कि आप क्या पूछने आई हैं ? क्या कोई आपको तकलीफ है ? आपके पति का स्वास्थ्य तो अच्छा है न ? अपने पति का नाम सुनते ही उसकी आंखों से जलधारा बरसने लगी। थोड़ी देर बाद उसकी हिचकियां बंध गई और बताया कि वस्तुतः मेरे पति एक असाध्य रोग से ग्रस्त हैं। मेरा विवाह हुए अभी तीन ही वर्ष बीते हैं विवाह से पूर्व वे पूर्णतः स्वस्थ थे परन्तु उसके बाद न जाने क्यों बीमार पड़ गए और आज तीन साल से खाट में पड़े हुए हैं। मेरे ससुराल वालों ने और अन्य लोगों ने मुझे बदनाम करना शुरू कर दिया है कि मैं जिस दिन से इस घर में आई हूं उसी दिन से मेरे पति बीमार हैं और यह बीमारी मेरे ही कारण है। मैंने एक दिन भी अपने पति का सुख नहीं भोगा। दुखी होकर आज से छः महीने पहले मैंने आत्म-हत्या करने की भी सोची पर उसमें मैं सफल नहीं हो सकी। इस बीच मैं कई तांत्रिकों के पास तथा साधुओं के पास भटक चुकी हूं और लगभग सभी ने मुझसे रुपया ही ऐंठना अच्छा समझा, मेरी मदद किसी ने नहीं की। अब मैं अन्तिम रूप से आपके पास आई हूं क्योंकि आपका नाम काफी सुना है। अब भी यदि मेरे लिए कुछ अनुकूल नहीं हो सका तो मैं निश्चय ही अपने प्राणों को समाप्त कर दूंगी।

मैंने उसका हाथ देखा, उसके पति की आयु काफी थी। मैंने उसे उसी स्तोत्र का पाठ करने की सलाह दी और बताया कि शीघ्र ही आपको अनुकूलता मिलेगी। आज से ही आप यह अनुभव करेंगी कि आपके पति पहले की अपेक्षा अधिक स्वस्थ होते जा रहे हैं।

उसने उसी दिन से इस स्तोत्र का पाठ आरम्भ कर दिया। मैं इस घटना को लगभग भूल ही चुका था कि छः-सात महीनों के बाद एक दिन सुबह वे दोनों पति-पत्नी जोधपुर मेरे घर बिना किसी पूर्व सूचना के आ गये। मैंने उन्हें तुरन्त पहचान लिया और पूछा कि अब कैसी स्थिति है। उन्होंने बताया कि इनके इलाज पर लगभग पचास हजार रुपये व्यय कर चुकी थी पर उससे किसी प्रकार का कोई फायदा नहीं हुआ था। आपने मुझे जो स्तोत्र दिया था वह अपने आप में अद्भुत है। उस स्तोत्र का पाठ मैंने उसी दिन से प्रारम्भ कर दिया था जिस दिन आपने मुझे दिया था। आज लगभग छः महीने बीते हैं, मेरे पति पूर्णतः स्वस्थ हैं और इसका प्रमाण आपके सामने है कि मैं और मेरे पति आपकी सेवा में प्रस्तुत हैं।

मैंने उन्हें आशीर्वाद दिया और सलाह दी कि इस स्तोत्र का एक पाठ नित्य करती रहें। आपके पारिवारिक जीवन में कभी कोई परेशानी नहीं आएगी।

वस्तुतः स्त्रियों के लिए इससे बढ़कर कोई स्तोत्र या पाठ अथवा विधान नहीं है। पति का स्वास्थ्य ठीक नहीं हो, उसकी उन्नति में बाधा आ रही हो, आर्थिक दृष्टि से परेशान हो, स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया हो, पत्नी से प्रेम न रहा हो, किसी दूसरी स्त्री के सम्पर्क में हो, या अन्य किसी प्रकार की बीमारी या बुरी आदत हो अथवा उसके गृहस्थ सुख में कोई बहुत बड़ी बाधा आ रही हो तो उस महिला को मेरा परामर्श है कि इस स्तोत्र का पाठ प्रारम्भ कर दे और तब तक नित्य एक पाठ करती रहे जब तक कि उसे मनोवांछित अवसर न मिल जाये या जैसा वह चाहती हैं वैसा न हो जाय। प्रत्येक सौभाग्यवती स्त्री के लिये इस स्तोत्र का पाठ आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है।

अथ सौभाग्याष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्

निशम्येतज्जामदग्न्यो माहात्म्यं सर्वतो धिकम्।
स्तोत्रस्य भूयः प्रपच्छ दत्तात्रेयं गुरूत्तमम् ॥१॥
भगवंस्त्वन्मुखाम्भोनिर्गमद्वाक्सुधारसम् ।
पिबतः श्रोतमुखतो वर्धते नुक्षणं तृषा ॥२॥
अष्टोत्तरशतं नाम्नां श्रीदेव्या यत्प्रसादतः।
कामः सम्प्राप्तवांल्लोके सौभाग्य सर्वमोहनम् ॥३॥
सौभाग्यविद्यावर्णानामुद्धारो यत्र संस्थितः।
तत्समाचक्ष्य भगवान् कृपया मयि सेवके ॥४॥
निशम्येवं भार्गवोक्ति दत्तात्रेयो दयानिधिः।
प्रोवाच भार्गवं रामं मधुराक्षरपूर्वकम् ॥५॥
शृणु भार्गव यत्पृष्ठं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
श्रीविद्यावर्णरत्नानां निधानमिव संस्थितम् ॥६॥
श्री देव्या बहुधा सन्ति नामानि शृणु भार्गवः।
सहस्रशतसंख्यानि पुराणेष्वागमेषु च ॥७॥
तेषु सारतरं ह्येतत् सौभाग्याष्टोत्तरात्मकम्।
यदुवाच शिवः पूर्वं भवान्ये बहुधार्थितः ॥८॥
सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य भार्गव।
ऋषिरक्तः शिवश्छन्दो नुष्टुप् श्रीललिताम्बिका ॥९॥
देवता विन्यसेत् कूटत्रयोणावर्त्य सर्वतः।
ध्यात्वा सम्पूज्य मनसा स्तोत्रमेतदुदीरयेत् ॥१०॥

अथ नाममन्त्राः

ॐ कामेश्वरी कामशतिः कामसौभाग्यदायिनी।
कामरूपा कामकला कामिनी कमलासना ॥११॥
कमला कल्पनाहीना कमलनीयकलावती।
कमलाभारतीसैव्या कल्पिताशेष संस्कृतः ॥१२॥
अनुत्तरानघानन्ताद्भूतरूपानलोद्भवा ।
अतिलोकचरित्रातिसुन्दर्यातिशुभप्रदा ॥१३॥
अघहन्त्यतिविस्तारार्चनतुष्टामितप्रभा ।
एकरूपैकवीरैकनाथै कान्तर्चनाप्रिया ॥१४॥

एकैकभावतुष्टैकरसैकान्तजनप्रिया ।
एवमानप्रभावैवदभक्तपातकनाशिनी ॥१५॥
एतमोदमुखेनो दिशकायुधसमस्थितिः ।
इहाशून्येप्सितेशादिसेव्येशानवरांगना ॥१६॥
ईश्वराज्ञापिकेकारभाव्येप्सितफलप्रदा ।
ईशानेतिहरेक्षेवदरुणाक्षीश्वरेश्वरी ॥१७॥
ललिता ललनारूपा लयहीना लयहीना लसतनुः ।
लयसर्वा लयक्षाणिर्लयकर्त्री लयात्मिका ॥१८॥
लघिमा लघुमध्याढ्या ललमाना लघुद्रुता ।
हयारूढा हतामित्रा हरकान्ता हरिस्तुता ॥१९॥
हयग्रीवेष्टदा हालप्रिया हर्षसमुद्धता ।
हर्षणा हल्लकाभांगी हस्त्यन्तैश्वर्यदायिनी ॥२०॥
हलहस्तार्चितपदा हविर्दानप्रसादिनी ।
रामा रामार्चिता राज्ञी रम्या रवमयी रतिः ॥२१॥
रक्षिणी रमणी राका रमणीमण्डलप्रिया ।
रक्षिता खिललोकेशा रक्षोगणनिषूदिनी ॥२२॥
अम्बान्तकारिण्यभोजस्त प्रियान्तकभयंकरी ।
अम्बुरूपाम्बुजकराम्बुजजातवरप्रदा ॥२३॥
अतः पूजाप्रियान्तः स्थरूपण्यिन्तर्वचोमयी ।
अन्तकारातिवामांकस्थितान्तस्सुखरूपिणी ॥२४॥
सर्वज्ञा सर्वगा सारा समा समसुखा सती ।
संततिः संतता सोमा सर्वा सांख्या सनातनी ॥२५॥

फलश्रुतिः

एतत्ते कथितं राम नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
अतिगोप्यमिदं नाम्नः सर्वतः सारमुद्धृतम् ॥२६॥
एतस्य सदृशं स्तोत्रं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
अप्रकाश्यमभक्तानां पुरतो देवताद्विषम् ॥२७॥
एतत् सदाशिवो नित्यं पठन्त्यन्ये हरादयः ।
एतत्प्रभावात् कन्दर्पस्त्रैलोक्यंजयति क्षणात् ॥२८॥

सौभाग्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं मनोहरम् ।
यस्त्रिसन्ध्यं पठेन्नित्यं न तस्य भुवि दुर्लभम् ॥२९॥
श्रीविद्योपासनवताभेदावश्यंक अव्यतम् ।
सकृतेतत् प्रपठतां नान्यत् कर्म विलुप्यते ॥३०॥
अपठित्वा स्तोत्रमिदं नित्यं नैमित्तिकं कृतम् ।
व्यर्थीभवति नग्नेन कृतं कर्म यथा तथा ॥३१॥
सहस्रनामपाठादावशक्तस्त्वेतदीरयेत् ।
सहस्रनामपाठस्य फलं शतगुणं भवेत् ॥३२॥
सहस्रधा कठित्वा तु वीक्षणान्नाशयेद्रिपून् ।
करवीररक्तपुष्पैस्त्वा लोकान् च वशं नयेत् ॥३३॥
स्तम्भयेत् पीतकुसुमैर्नीलेरुच्चाटयेद रिपुन् ।
मरिचैर्विद्वेषणाय लवंगैर्व्याधिनाशने ॥३४॥
सुवासिनीर्ब्राह्मणान् व भोजयेद् यस्तु नामभिः ।
यश्च पुष्पैः फले र्वापि पूजयेत् प्रतिनामभिः ॥३५॥
चक्रराजे थवान्यत्र स वसेच्छ्रीपुरे चिरम् ।
यः सदा वर्तयन्नास्ते नामाष्टशतमुत्तमम् ॥३६॥
तस्य श्रीललिता राज्ञी प्रसन्ना वांछितप्रदा ।
एतत्ते कथितं राम श्रृणु त्वंप्रकृतं ध्रुवे ॥३७॥

इति श्रीत्रिपुरा रहस्ये श्रीसौभाग्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

स्तोत्र

स्तोत्र की शक्ति अतुलनीय है, जो कार्य मंत्र और तंत्र के माध्यम से नहीं हो सकते, वह स्तोत्र के माध्यम से संभव है। सीधे सादे शब्दों में कही गई बात हृदय पर गहरा असर करती है।

—शंकराचार्य

अन्य महत्वपूर्ण स्तोत्र

पिछले पृष्ठों में हमने स्तोत्रों के मूलपाठ देने के अतिरिक्त उन घटनाओं और परिस्थितियों का भी वर्णन किया है जिनसे संबंधित स्तोत्रों के चमत्कारिक प्रभाव का पता चलता है। इन पृष्ठों में हम स्तोत्रों, कवचों आदि के मूलपाठ ही दे रहे हैं। हमारा मुख्य उद्देश्य स्तोत्र-पाठ में रुचि रखने वाले साधकों को महत्वपूर्ण स्तोत्रों के मूलपाठ उपलब्ध कराना है अतः उनसे लाभान्वित होने वाले व्यक्तियों का वर्णन यहां नहीं दिया जा रहा है।

अमोघशिवकवचम्

अस्य श्रीशिवकवचस्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, श्री सदाशिवरुद्रो देवता, ह्रीं शक्तिः, वं कीलकम, श्रीं ह्रीं क्लीं बीजम्, सदाशिव प्रीत्यर्थे शिवकवचस्तोत्रजपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे। श्री सदाशिव रुद्रदेवतायै नमः हृदि। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। वं कीलकाय नमः नाभौ। श्रीं-ह्रीं-क्लीमिति बीजाय नमः गुह्ये। विनियोगाय नमः सर्वांगे।

अथ करन्यासः

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ नं रीं नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहा॥

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने मध्यमाभ्यां वषट।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ शि रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां हुम्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ वां रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने कनिष्ठकाभ्यां वौषट।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ रः अनादिशक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतलकर-पृष्ठाभ्यां फट्।

हृदयाद्यन्यासः

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ ह्रीं रां सर्वशक्तिधाम्ने ईशानात्मने हृदयाय नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामलिने ॐ मं नं रीं नित्यतृप्तिधाम्ने तत्पुरुषात्मने शिरसे स्वाहा॥

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ मं रूं अनादिशक्तिधाम्ने अघोरात्मने शिखायै वषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ शि रैं स्वतन्त्रशक्तिधाम्ने वामदेवात्मने कवचाय हुम्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ वां रौं अलुप्तशक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ यं रः अनादि शक्तिधाम्ने सर्वात्मने अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्

वज्रदंष्ट्रं त्रिनयनं कालकण्ठमरिंदमम्। सहस्रकरमप्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम्॥

ऋषभ उवाच

अथापरं सर्वपुराणगुह्यं निःशेषपापौघहरं पवित्रम्
जयप्रदं सर्वविपद्विमोचनं वक्ष्यामि शैवं कवचं हिताय ते॥

नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरम्। वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्वरक्षाकरं नृणाम॥१॥

शुचौ देशे समासीनो यथावत्कल्पितासनः। जितेन्द्रियो जितप्राणश्चिन्तयेच्छिवमव्ययम्॥२॥

हृत्पुण्डरीकान्तसंनिविष्टं स्वतेजसा व्याप्तनभोऽवकाशम्।
अतीन्द्रियं सूक्ष्ममनन्तमाद्यं ध्यायेत्परानन्दमयं महेशम्॥३॥

ध्यानावधूताखिलकर्मबन्धश्चिरं चिदानन्दनिमग्नचेताः ।
षडक्षरन्याससमाहितात्मा शैवेन कुर्यात कवचेन रक्षाम् ॥४॥
मां पातु देवोऽखिलदेवतात्मा संसारकूपे पतितं गभीरे ।
तन्नाम दिव्यं वरमन्त्रमूलं धुनोतु मे सर्वमघं हृदिस्थम् ॥५॥
सर्वत्र मां रक्षतु विश्वमूर्तिर्ज्योतिर्मयानन्दघनश्चिदात्मा ।
अणोरणीयानुरुशक्तिरेकः स ईश्वरः पातु भयादशेषात् ॥६॥
यो भूस्वरूपेण बिभर्ति विश्वं पायात् स भूमेर्गिरिशोऽष्टमूर्तिः ।
योऽपां स्वरूपेण नृणां करोति संजीवनं सोऽवतु मां जलेभ्यः ॥७॥
कल्पावसाने भुवनानि दग्ध्वा सर्वाणि यो नृत्यति भूरिलीलः ।
स कालरुद्रोऽवतु मां दवाग्नेर्वात्यादिभीतेरखिलाच्च तापात् ॥८॥
प्रदीप्तविद्युत्कनकावभासो विद्यावराभीतिकुठारपाणिः ।
चतुर्मुखस्तत्पुरुषस्त्रिनेत्रः प्राच्यां स्थितं रक्षतु मामजस्रम् ॥९॥
कुठारवेदाङ्कुशपाशशूलकपालढक्काक्षगुणान् दधानः ।
चतुर्मुखो नीलरुचिस्त्रिनेत्रः पायादघोरो दिशि दक्षिणस्याम् ॥१०॥
कुन्देन्दुशंखस्फटिकावभासो वेदाक्षमालावरदाभयांकः ।
त्र्यक्षश्चतुर्वक्त्र उरुप्रभावः सद्योऽधिजातोऽवतु मां प्रतीच्याम् ॥११॥
वराक्षमालाभयटंकहस्तः सरोजकिंजल्कसमानवर्णः ।
त्रिलोचनश्चारुचतुर्मुखो मां पायादुदीच्यां दिशि वामदेवः ॥१२॥
वेदाभयेष्टांकुशपाशटंककपालढक्काक्षकशूलपाणिः ।
सितद्युतिः पंचमुखोऽवतान्मामीशान ऊर्ध्वं परमप्रकाशः ॥१३॥
मूर्द्धानमव्यान्मम चन्द्रमौलिर्भालं ममाव्यादथ भालनेत्रः ।
नेत्रे ममाव्याद् भगनेत्रहारी नासां सदा रक्षतु विश्वनाथः ॥१४॥
पायाच्छ्रुती मे श्रुतिगीतकीर्तिः कपोलमव्यात् सततं कपाली ।
वक्त्रं सदा रक्षतु पंचवक्त्रो जिह्वां सदा रक्षतु वेदजिह्वः ॥१५॥
कण्ठं गिरीशोऽवतु नीलकण्ठः पाणिद्वयं पातु पिनाकपाणिः ।
दोर्मूलमव्यान्मम धर्मबाहुर्वक्षःस्थलं दक्षमखान्तकोऽव्यात् ॥१६॥
ममोदरं पातु गिरीन्द्रधन्वा मध्यं ममाव्यान्मदनान्तकारी ।
हेरम्बतातो मम पातु नाभिं पायात् कटी धूर्जटिरीश्वरो मे ॥१७॥
उरुद्वयं पातु कुबेरमित्रो जानुद्वयं मे जगदीश्वरोऽव्यात् ।
जंघायुगं पुंगवकेतुरव्यात् पादौ ममाव्यात् सुरवन्द्यपादः ॥१८॥

महेश्वरः पातु दिनादियामे मां मध्ययामेऽवतु वामदेवः ।
त्रियम्बकः पातु तृतीययामे वृषध्वजः पातु दिनान्त्ययामे ॥१९॥
पायान्निशादौ शशिशेखरो मां गंगाधरो रक्षतु मां निशीथे ।
गौरीपतिः पातु निशावसाने मृत्युंजयो रक्षतु सर्वकालम् ॥२०॥
अन्तःस्थितं रक्षतु शंकरो मां स्थाणुः सदा पातु बहिःस्थितं माम् ।
तदन्तरे पातु पतिः पशूनां सदाशिवो रक्षतु मां समन्तात् ॥२१॥
तिष्ठन्तमव्याद्भुवनैकनाथः पायाद् व्रजन्तं प्रमथाधिनाथः ।
वेदान्तवेद्योऽवतु मां निषण्णं मामव्ययः पातु शिवः शयानम् ॥२२॥
मार्गेषु मां रक्षतु नीलकण्ठः शैलादिदुर्गेषु पुरत्रयारिः ।
अरण्यवासादिमहाप्रवासे पायान्मृगव्याध उदारशक्तिः ॥२३॥
कल्पान्तकाटोपपटुप्रकोपः स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोशः ।
घोरारिसेनार्णवदुर्निवारमहाभयाद् रक्षतु वीरभद्रः ॥२४॥
पत्त्यश्वमातंगघटावरूथसहस्रलक्षायुतकोटिभीषणम् ।
अक्षौहिणीनां शतमाततायिनां छिन्द्यान्मृडो घोरकुठारधारया ॥२५॥
निहन्तु दस्यून् प्रलयानलार्चिर्ज्वलत् त्रिशूलं त्रिपुरान्तकस्य ।
शार्दूलसिंहर्क्षवृकादिहिंस्रान् संत्रासयत्वीशधनुः पिनाकम् ॥२६॥
दुःस्वप्नदुश्शकुनदुर्गतिदौर्मनस्यदुर्भिक्षदुर्व्यसनदुस्सहदुर्यशांसि ।
उत्पाततापविषभीतिमसद्ग्रहार्तिव्याधींश्च नाशयतु मे जगतामधीशः ॥२७॥

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकलतत्वात्मकाय सकलतत्वविहाराय सकललोकैककर्त्रे सकललोकैकभर्त्रे सकललोकैकहर्त्रे सकललोकैकगुरवे सकललोकैकसाक्षिणे सकलनिगमगुह्याय सकलवरप्रदाय सकलदुरितार्तिभंजनाय सकलजगदभयंकराय सकललोकैक शंकराय शशांकशेखराय शाश्वतनिजाभासाय निर्गुणाय निरुपमाय नीरूपाय निराभासाय निरामयाय निष्प्रपंचाय निष्कलंकाय निर्द्वन्द्वाय निस्संगाय निर्मलाय निर्गमाय नित्यरूपविभवाय निरुपमविभवाय निराधाराय नित्यशुद्धबुद्धपरिपूर्णसच्चिदानन्दाद्वयाय परमशान्तप्रकाशतेजोरूपाय जय जय महारुद्र महारौद्र भद्रावतार दुःखदावदारण महाभैरव कालभैरव कल्पान्तभैरव कपाल-मालाधर खट्वांगखड्गचर्मपाशांकुशडमरुशूलचापबाणगदाशक्तिभिन्दिपालतोमरमुसलमुद्गरपट्टिशपर-शुपरिघभुशुण्डीशतघ्नीचक्राद्यायुधभीषणकर सहस्रमुख दंष्ट्राकराल विकटाट्टहासविस्फारितब्रह्माण्ड-मण्डल नागेंद्रकुण्डल नागेन्द्रहार नागेन्द्रवलय नागेन्द्रचर्मधर मृत्युञ्जय त्र्यम्बक त्रिपुरान्तक विरूपाक्ष विश्वेश्वर विश्वरूप वृषभवाहन विषभूषण विश्वतोमुख सर्वतो रक्ष रक्ष मां ज्वल ज्वल महामृत्युभयमपमृत्युभयं नाशय नाशय रोगभयमुत्सादयोत्सादय विषसर्पभयं शमय शमय चोरभयं

मारय मारय मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय शूलेन विदारय विदारय कुठारेण भिन्धि भिन्धि खड्गेन छिन्धि छिन्धि खट्वाङ्गेन विपोथय विमोथय मुसलेन निष्पेषय निष्पेषय बाणैः संताडय संताडय रक्षांसि भीषय भीषय भूतानि विद्रावय विद्रावय कूष्माण्डवेतालमारीगणब्रह्मराक्षसान् संत्रासय संत्रासय ममाभय कुरु कुरु वित्रस्तं मामाश्वासयाश्वासय नरकभयान्मामुद्धारयोद्धारय संजीवय संजीवय क्षुत्तृड्भ्यां मामाप्यायय्याप्यायय दुःखातुरं मामानन्दयानन्दय शिवकचेन मामाच्छादयाच्छादय त्र्यम्बक सदाशिव नमस्ते नमस्ते नमस्ते ।

ऋषभ उवाच

इत्येतत्कवचं शैवं वरदं व्याहृतं मया । सर्वबाधाप्रशमनं रहस्यं सर्वदेहिनाम् ॥२८॥
यः सदा धारयेन्मर्त्यः शैवः कवचमुत्तमम् । न तस्य जायते क्वापि भयं शम्भोरनुग्रहात ॥२९॥
क्षीणायुर्मृत्युमापन्नो महारोगहतोऽपि वा । सद्यः सुखमवाप्नोति दीर्घमायुश्च विन्दति ॥३०॥
सर्वदारिद्र्यशमनं सौमंगल्यविवर्धनम । यो धत्ते कवचं शैवं स देवैरपि पूज्यते ॥३१॥
महापातकसंघातैर्मुच्यते चोपपातकैः । देहान्ते शिवनाप्नोति शिववर्मानुभावतः ॥३२॥
त्वमपि श्रद्धया वत्स शैवं कवचमुत्तमम् । धारयस्व मया दत्तं सद्य श्रेयो ह्यवाप्स्यसि ॥३३॥

लिङ्गाष्टकम्

ब्रह्ममुरारि सुरार्चितलिङ्गं निर्मल भासित शोभित लिङ्गम् ॥
जन्मदुःख विनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥१॥
देव मुनि प्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकर लिङ्गम् ॥
रावणदर्प विनाशनलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥२॥
सर्वसुगंधिसुलेपित लिङ्गं बुद्धि विवर्धन कारण लिङ्गम् ॥
सिद्ध सुरासुर वंदित लिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥३॥
कनक महामणि भूषित लिङ्गं फणिपति वेष्टित शोभित लिङ्गम् ॥
दक्षसुयज्ञ विनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिव लिङ्गम् ॥४॥
कुंकुम चंदन लेपित लिङ्गं पंकज हार सुशोभितलिंगम् ॥
संचित पाप विनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥५॥
देवगणार्चित सेवित लिंगं भावैर्भक्तिभिरेव च लिंगम् ॥
दिनकर कोटि प्रभाकर लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥६॥

अष्टदलोपरि वेष्टितलिंगं सर्वसमुद्भव कारण लिंगम् ॥
अष्टदरिद्र विनाशित लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥७॥
सुरगुरु सुरवर पूजित लिंगं सुरवन पुष्प सदार्चित लिंगम् ॥
परात्परं परमात्मकलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥८॥
लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ॥
शिव लोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥९॥

इति श्री लिंगाष्टक स्तोत्र संपूर्णम् ।

अमोघ मृत्युञ्जय स्तोत्र

चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर पाहिमाम् । चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर रक्षमाम् ।
चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर, मामव । चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर, चन्द्रशेखर मा स्मर ॥१॥
रत्नसानुशरासनं रजताद्रि श्रृंगनिकेतनं । शिंजिनीकृतपन्नगेश्वर मच्युतानलसायकम् ।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं । चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥२॥
पंचपादप पुष्पगन्धि पदाम्बुजद्वयशोभितं । भाललोचन जातपावकदग्धमन्मथ विग्रहम् ।
भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशिनं भवमव्ययं । चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥३॥
मत्तवारण मुख्य चर्मकृतोत्तरीयमनोहरं । पंकजासनपद्मलोचनपूजिताऽङ्घ्रि सरोरुहम् ।
देवसिद्धतंरगिणी करसिक्तशीत जटाधर । चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥४॥
कुण्डलीकृत कुण्डलीश्वरकुण्डलं वृषवाहनं । नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम् ।
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं । चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥५॥
यक्षराज सखं भगाक्षिहरं भुजंगविभूषणं । शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवाम कलेवरम् ।
क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं । चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥६॥
भेषजं भवरोगिणामखिला पदामपहारिणं । दक्षयज्ञ विनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम् ।
भुक्तिमुक्ति फलप्रदं निखिलापदामपहारिणं । चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥७॥
भक्तवत्सलमर्चतां निधिसक्षरं हरिदम्बरं । सर्वं भूतपतिं परात्परमप्रमेयमनूपमम् ।
भूमिवारिनभोहुताशनसोमपालितस्याकृतिं । चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥८॥
विश्वसृष्टिविधायि पुनरेवनं पालनतत्परं । संहरन्तमय प्रपंचमशेषलोकनिवासिनम् ।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथ समावृतं । चन्द्रशेखर माश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥९॥
मृत्युभीतमृकण्ड-सूनुकृतस्तवं शिव सन्निधौ । यत्र कुत्र च यः पठेन्नति तस्य मृत्युभयं भवेत ।
पूर्णमायुर रोगिता मखिलार्थ सम्पद मादरम् । चन्द्रशेखर एव तस्य ददाति सिद्धि मलौकिकीम् ॥१०॥

रूद्रं पशुपतिं स्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम् । नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥११॥
नीलकण्ठं विरुपाक्षं निर्मलं निरुपद्रवम् । नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१२॥
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम् । नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१३॥
देवदेवं जगन्नाथं देवेश वृषभध्वजम् । नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१४॥
अनन्तमव्ययं शान्तमक्षमालाधरं हरम् । नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१५॥
आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यापदकारणम् । नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१६॥
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणिम् । नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥१७॥

दारिद्र्यदहनशिवस्तोत्रम्

विश्वेश्वराय नरकार्णवतारणाय, कर्णामृताय शशिशेखर धारणाय ॥
कर्पूरकांतिधवलाय जटाधराय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥१॥
गौरि प्रियाय रजनीश कलाधराय कालान्तकाय भुजगाधिपकंकणाय ॥
गंगाधरायगजराजविमर्दनाय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥२॥
भक्तप्रियाय भवरोग भयापहाय उग्राय दुर्गभव सागर तारणाय ॥
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥३॥
चर्माम्बराय भवभस्मविलेपनाय भालेक्षणाय मणि कुंडलमंडिताय ॥
मंजीर पादयुगलाय जटाधराय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥४॥
पञ्चाननाय फणिराज विभूषणाय हेमांशुकाय भुवनत्रय मंडिताय ॥
आनन्दभूमि वरदाय तपोमयाय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥५॥
भानुप्रियाय भवसागर तारणाय कालान्तकाय कमलासनपूजिताय ॥
नेत्रत्रयाय शुभलक्षणलक्षिताय दारिद्र्यदुःख दहनाय नमः शिवाय ॥६॥
रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय ॥
पुण्येषुपुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥७॥
मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय गीतप्रियाय वृषभेश्वर वाहनाय ॥
मातंगचर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥८॥
वसिष्ठेन कृतं स्तोत्रं सर्वरोगनिवारणं ॥ सर्वसंपत्करं शीघ्रं पुत्रपौत्रादिवर्धनम् ॥
त्रिसंध्यं यः पठेनित्यं स हि स्वर्गमवाप्नुयात् ॥९॥

इति श्री वसिष्ठ विरचितं दारिद्रयदहन स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

श्री सूक्त

श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्रीमहालक्ष्म्यै नमः ॥ हिरण्यवर्णामिति पंचदशर्चस्य आनंदकर्दम चिक्लीतेंदिरासुता ऋषयः ॥ श्रीरग्निश्चेत्युभे देवते ॥ आद्यास्तिस्रोऽनुष्टुभः ॥ चतुर्थी बृहती ॥ पंचमी षष्ठ्यौ त्रिष्टुभौ ॥ ततोऽष्टावनुष्टुभः । अंत्याप्रस्तार पंक्तिः ॥ जपेविनियोगः ॥

हरिः ॐ ॥ हिरण्यवर्णांहरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ॥ चंद्रांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोम आवह ॥ तांमआवहजातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यांहिरण्यंविदेयंगामश्वंपुरुषानहम् ॥ अश्वपूर्वांरथमध्यांहस्तिनादप्रबोधिनीम् ॥ श्रियंदेवीमुपह्वये श्रीमदिवीजुषताम् ॥ कांसोस्मितां-हिरण्यप्राकारा माद्रांज्वलंतींतृप्तांतर्पयंतीम् ॥ पद्मेस्थितांपद्मवर्णांता मिहोपह्वयेश्रियम् ॥ चंद्रां-प्रभासांयशसाज्वलंतींश्रियं लोकेदेवजुष्टामुदाराम् ॥ तापंद्मिमनीमींशरणमहंप्रपद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्य-तांत्वांवृणे ॥१॥

आदित्यवर्णेतपसोविजातोवनस्पतिस्तववृक्षोथबिल्वः ॥ तस्यफलानितपसानुदंतुमायांतराया-श्चबाह्याअलक्ष्मीः ॥ उपैतुमांदेवसखःकीर्तिश्चमणिनासह ॥ प्रादुर्भूतोसुराष्ट्रेस्मिन्कीर्ति-मृद्धिददातुमे ॥ क्षुत्पिपासामलांज्येष्ठामलक्ष्मींनाशयाम्यहम् ॥ अभूतिमसमृद्धिंचसर्वांनिर्णुद-मेगृहात् ॥ गंधद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टांकरीषिणीम् ॥ ईश्वरींसर्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ मनसःकाममाकूतिवाचःसत्यमशीमहि ॥ पशूनांरूपमन्नस्यमयिश्रीः श्रयतांयशः ॥२॥

कर्दमेनप्रजाभूतामयिसंभवकर्दम ॥ श्रियंवासयमेकुलेमातरंपद्ममालिनीम् ॥ आपः स्रजंतु-स्निग्धानिचिक्लीतवसमेगृहे ॥ निचदेवींमातरंश्रियंवासयमेकुले ॥ आर्द्रांपुष्करिणींपुष्टिंपिंगलांपद्म मालिनीम् ॥ चन्द्रांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोमआवह ॥ आर्द्रांयःकरिणींयष्टिंसुवर्णांहेममालिनीम् ॥ सूर्यांहिरण्मयींलक्ष्मींजातवेदोम आवह ॥ तांमआवहजातवेदोलक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यांहिरण्यं-प्रभूतंगावोदास्योश्वान्विदेयंपुरुषानहम् ॥३॥

यः शुचिः प्रयतोभूत्वाजुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ सूक्तंपंचदशर्चंचश्रीकामः सततंजपेत् ॥

नवग्रह स्तोत्रम्

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतम् ॥ तमोरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥१॥
दधिशङ्खतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ॥ नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुटभूषणम् ॥२॥
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ॥ कुमारं शक्तिहस्तं तं मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥३॥
प्रियङ्गुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ॥ सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥४॥

देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चनसंनिभम् ।। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ।।५।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम् ।। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ।।६।।
नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।। छाया मार्तण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम् ।।७।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।। सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ।।८।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।९।।
इति व्यास मुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः ।। दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति ।।१०।।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम् ।। ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।।११।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडास्तस्कराग्निसमुद्भवाः ।। ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।१२।।

इति व्यासविरचितं नवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

बजरंग बाण

दोहा—निश्चय प्रेम प्रतीत ते विनय करे सनमान ।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान ।।

चौपाई

जय हनुमंत संतहितकारी । सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी ।।
जन के काज विलंब न कीजे । आतुर दौर महासुख दीजै ।।
जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा । सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ।।
आगे जाइ लंकिनी रोका । मारेहु लात गई सुर लोका ।।
जाय विभीषण को सुखदीन्हा । सीता निरखि परमपद लीन्हा ।।
बाग उजारि सिन्धु महं बोरा । अति आतुर यमकातर तोरा ।।
अक्षय कुमार को मारि संहारा । लूम लपेटि लंक को जारा ।।
लाह समान लंक जरि गई । जय जय धुनि सुरपुर मंह भई ।।
अब विलंब केहि कारन स्वामी । कृपा करहु उर अन्तरयामी ।।
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता । आतुर होइ दुख करहु निपाता ।।
जय गिरधर जय जय सुख-सागर । सुर समूह समरथ भटनागर ।।
ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले । बैरिहिं मारु बज्र के कीले ।।
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो । महाराज प्रभु दास उबारो ।।

ॐकार हुंकार महावीर धावो । वज्रगदा हनु विलंब न लावो ।।
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीशा । ओम् हुं हुं हुं हनु अरि उर शीशा ।।
सत्य होहु हरि शपथ पाय के । रामदूत धरु मारु जाय के ।।
जय जय जय हनमंत अगाधा । दुख पावत जन केहि अपराधा ।।
पूजा जप तप नेम अचारा । नहि जानत हौं दास तुम्हारा ।।
वन उपवन मम गिरिगृह माहीं । तुहरे बल हम डरपत नाहीं ।।
पांय परौं कर जोरि मनावौं । यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ।।
जय अंजनि कुमार बलवन्ता । शंकर सुवन बीर हनुमंता ।।
बदन कराल काल कुल घालक । राम सहाय सदा प्रतिपालक ।।
भूत प्रेत पिशाच निशाचर । अग्नि बैताल काल मारीमर ।।
इन्हें मारु तोहि शपथ राम की । राखु नाथ मरजाद नाम की ।।
जनक सुता हरिदास कहावो । ताकि शपथ विलंब न लावो ।।
जय जय जय धुनि होत अकाशा । सुमिरत होत दुसह दुखनाशा ।।
शरण शरण कर जोरि मनावौं । यहि अवसर अब केहि गोहरावौं ।।
उठु-उठु चलु तोहिं राम दोहाई । पांय परौं कर जोरि मनाई ।।
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता । ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता ।।
ॐ हं हं हांक देत कपि चंञ्चल । ॐ सं सं सहमि पराने खलदल ।।
अपने जन को तुरत उबारो । सुमिरत होय आनन्द हमारो ।।
यहि बजरंग बाण जेहि मारे । ताहि कहो फिरि कौन उबारे ।।
पाठ करै बजरंग-बाण की । हनुमंत रक्षा करैं प्राण की ।।
यह बजरंग बाण जो जापै । तेहि ते भूत-प्रेत सब कांपै ।।
धूप देय अरु जपै हमेशा । ताके तन नहि रहे कलेशा ।।

दोहा

प्रेम प्रतीतिहिं कपि भजे, सदा धरे उर ध्यान ।
तेहिके कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान ।।

विश्व की दुर्लभ आश्चर्यजनक वस्तुएं

इस संसार में प्रभु ने सब कुछ दिया है पर बिना भाग्य के वह सब कुछ संभव नहीं, परन्तु संसार में कुछ वस्तुएं ऐसी हैं जिससे भाग्य को चार चांद लगाये जा जा सकते हैं, भाग्यहीन भी गौरवयुक्त भाग्यशाली बन कर देश और समाज में प्रतिष्ठा, यश, धन, वैभव, सम्पदा प्राप्त कर सकता है।

ये वस्तुएं दुर्लभ हैं, प्राप्य नहीं, जो वास्तव में ही श्रेष्ठ हैं उनके घरों में ही ऐसी दुर्लभ वस्तुएं संग्रहित हो सकती हैं, धन तो कल भी कमाया जा सकता है, पर ये दुर्लभ वस्तुएं कल प्राप्त हो ही जाय, यह संभव नहीं है।

पत्रिका कार्यालय ने हजारों पाठकों की मांग पर यह बीड़ा उठाया है और इन दुर्लभ वस्तुओं को प्राप्त कराने में योगदान देने की सेवा प्रस्तुत की है, न तो ये व्यापारिक वस्तुएं हैं और न इसे व्यापार समझा है, इसलिये ज्यों-ज्यों इस प्रकार की दुर्लभ वस्तुएं साधु-सन्तों महर्षियों, वनवासियों से प्राप्त होती रहेंगी, पत्रिका पाठकों को परिचित कराते रहेंगे।

ये वस्तुएं भी सैकड़ों की संख्या में नहीं हैं, किसी का एक नग है तो कोई चार-पांच हैं। जो शीघ्र प्राप्त करने का प्रयत्न करेगा, वही सौभाग्यशाली होगा, वही प्राप्त कर सकेगा, उसी के संग्रहालय में ये दुर्लभ वस्तुएं एकत्र हो सकेंगी।

ये वस्तुएं स्वयं मंत्र सिद्ध हैं, चैतन्य हैं, दुर्लभ हैं, संग्रहणीय हैं, उपयोगी हैं, और भाग्य-संयोजन में सहायक हैं।

● श्वेतार्क गणपति

आक तो होते हैं, पर सफेद आक अत्यन्त दुर्लभ है, पूरे भारत में कुछ ही पौधे होंगे, और वे भी घने जंगलों में। इस श्वेतार्क की विशेषता यह है कि इस की जड़ खोदने पर स्वतः जड़ों से निर्मित गणपति प्राप्त होते हैं, देखने में भव्य, गौरवशाली जड़ों से स्वतः निर्मित गणपति। देखने पर लगता है जैसे साक्षात् गणपति सामने हों।

शास्त्रों में कहा गया है, कि जिसके घर में श्वेतार्क गणपति हों, उसके जीवन में यश, मान, पद, प्रतिष्ठा और अतुल ऐश्वर्य स्वतः प्राप्त होता है, उसे ही नहीं, उसकी कई पीढियों तक को। दुर्लभ भव्य प्रकृति निर्मित गणपति विग्रह........

न्यौछावर—८००)

● दक्षिणावर्ती शंख

बाईं ओर से खुलने वाले शंख तो सहज प्राप्य हैं, पर हजारों लाखों शंखों में एक दो शंख ही ऐसे पाये जाते हैं जो दाहिनी ओर से खुले होते हैं, जिन्हें दक्षिणावर्ती शंख कहा गया है।

तांत्रिक-मांत्रिक ग्रन्थों में इसे एक स्वर से कुबेरवत् सम्पदा देने वाला बताया है, कहा गया है कि वे नर वास्तव में ही सौभाग्यशाली होते हैं जिनके घर में दक्षिणावर्ती शंख हो। इस पर कई प्रयोग किये जाते हैं। इनमें भी नर दक्षिणावर्ती शंख तो दुर्लभ ही है।

नर दक्षिणावर्ती शंख—न्यौछावर—८५०)

● एकाक्षी नारियल

नारियल तो सहज प्राप्य है, पर जब नारियल की जटा उतारते हैं, तो नीचे से एक कठोर गोला प्राप्त होता है, जिस पर दो आखें सी बनी होती हैं।

पर हजारों नारियलों में एक आध नारियल ही ऐसा होता है जिस पर एक आंख ही होती है, ऐसा नारियल साक्षात् लक्ष्मी का स्वरूप माना जाता है, इस पर कई प्रयोग दीपावली पर किये जाते हैं।

जिसके घर में ऐसा नारियल होता है वह साक्षात् कुबेरवत् माना जाता है।

दुर्लभ संग्रहणीय, आश्चर्यजनक....न्यौछावर—५४०)

● सियार सिंगी

तंत्र मंत्र ग्रन्थों में इस पर विविध प्रयोग बताये हैं, सामान्यतः सियार के सींग नहीं होते, पर प्रकृति के चमत्कार से कुछ सियारों के सिर पर सींग उग आते हैं, ऐसी सियार सिंगी दुर्लभ ही नहीं, कठिनता से प्राप्य होती है, धनप्राप्ति, शत्रुओं पर विजय, मुकदमें में सफलता आदि के लिये श्रेष्ठतम विधान है।

दुर्लभ....आश्चर्यजनक....न्यौछावर—५१०)

● हत्था जोड़ी

यह भी प्रकृति का एक चमत्कार ही है। जो स्वतः दोनों हाथ जुड़े हुए से प्रकृति स्वरूप होता है। यह पास होने पर दुर्घटना का भय नहीं रहता, एक्सीडेंट नहीं होता, उस पर कोई तांत्रिक प्रयोग सफल नहीं हो पाता....अचल सम्पति प्राप्त करने में बेजोड़........

न्यौछावर—५१०)

● एकमुखी रुद्राक्ष

अन्य वस्तुएं तो प्रयत्न करने पर फिर भी प्राप्त हो सकती हैं, पर एकमुखी रुद्राक्ष तो दुर्लभ क्या, लगभग असंभव ही है, जिसके घर में या गले में एक मुखी रुद्राक्ष हो तो क्या उसे जीवन में किसी बात का अभाव रह सकता है?

श्रेष्ठतम अद्भुत संग्रहणीय....न्यौछावर—२४००)

● गौरी शंकर रुद्राक्ष

रुद्राक्ष तो मिल जाते हैं, पर गौरीशंकर रुद्राक्ष दुर्लभ होता है। इसमें शिव और मां पार्वती का जुड़ा हुआ विग्रह रुद्राक्ष होता है। पूजा स्थान में रखने योग्य, गले में पहिनने योग्य। शास्त्रों के अनुसार ऐसा रुद्राक्ष एक साथ भोग और मोक्ष, सम्पदा और ज्ञान देने में सहायक होता है।

न्यौछावर—१८०)

● पारद शिवलिंग

विश्व का श्रेष्ठतम शिवलिंग। पारे को ठोस बनाना दुर्लभ है, पर फिर भी पूरे भारत में कुछ ही साधक योगी........ऐसा करने में समर्थ है।

ठोस पारे से निर्मित शिवलिंग........अद्भुत फलदायक, आश्चर्यजनक सफलतादायक.......

न्यौछावर —१५००)

● स्फटिक शिवलिंग

शास्त्रों में कहा गया है, कि जो व्यक्ति एक साथ भोग और मोक्ष की इच्छा रखते हों, जो जीवन में अतुलनीय सम्पदा के साथ यश और सम्मान चाहते हों, जो जीवन में विजयी रहना चाहते हैं, जो शिवभक्त हैं, उन्हें तो अवश्य ही अपने घर में स्फटिक शिवलिंग स्थापित करना ही चाहिए।

प्रभायुक्त, दिव्य, तेजयुक्त शुभ्र स्फटिक-शिवलिंग।

न्यौछावर—६००)

● लघु नारियल

प्रकृति की महिमा अपरम्पार है, बड़े नारियल तो सहज ही पाये जाते हैं पर कभी-कभी सुपारी के

आकार के छोटे नारियल भी देखने को मिल जाते हैं, पर ये होते हैं दुर्लभ, अप्राप्य।

लक्ष्मी प्राप्ति हेतु इस पर प्रयोग किये जाते हैं, यह स्वतः ही "लक्ष्मी प्रदाता" कहा जाता है।

न्यौछावर—८०)

● आभायुक्त शालिग्राम

सामान्य शालिग्राम (भगवान विष्णु का विग्रह) तो प्रत्येक हिन्दू के पूजाघर में देखने को मिल जाते हैं, पर बहुत ही कम दुर्लभ गोल शालिग्राम भी होते हैं, जिन्हें धूप में देखने पर लाल झांई सी दिखाई देती है। ऐसे शालिग्राम विग्रह गृहस्थ सुख के लिये अत्युत्तम हैं।

दुर्लभ आभायुक्त शालिग्राम विग्रह।

न्यौछावर—१५०)

● नर्मदेश्वर

जो शिव भक्त हैं, जिनका इष्ट शिव है, उन्हें अपने घर में अवश्य ही मंत्र सिद्ध नर्मदेश्वर स्थापित करना चाहिए।

न्यौछावर—१३२)

● गोमती चक्र

यह प्रकृति का मानव को श्रेष्ठ वरदान है, जिस पर तांत्रिक-मांत्रिक ग्रन्थों में कई प्रयोग बताये हैं, जो स्वतः ही व्यापार एवं लक्ष्मी का पर्याय है—

न्यौछावर—३०)

● मूंगा

वशीकरण, उच्चाटन आदि कार्यों में यह श्रेष्ठतम सहायक है, इसे अंगूठी में जड़ा जा सकता है।

न्यौछावर—६०)

● कामरूप मणी

संसार में और सब कुछ प्राप्त हो सकता है, पर यह दुर्लभ कामरूप मणि प्राप्य नहीं। प्रकृति का यह अनोखा चमत्कार है, कि इसे गले में धारण करने से स्वतः ही कार्य सम्पन्न होने लगते हैं, बाधाएं दूर होने लगती हैं, सहज ही उन्नति, प्रमोशन, यश, सम्मान ऐश्वर्य प्राप्त होने लगता है।

मंत्रसिद्ध, चैतन्य दुर्लभ कामरूप मणि।

न्यौछावर—२४०)

● शूकर दन्त

शूकर एक भयानक जंगल का प्राणी है, जिसके अक्षत दांत कठिनाई से प्राप्त होते हैं। तांत्रिक क्रियाओं एवं महाविद्या साधना में इनका प्रयोग होता है।

न्यौछावर—३५०)

● बिल्ली की नाल

जो तंत्र क्रिया में निष्णात है, वे जानते हैं कि यह कितनी कठिनाई से प्राप्त होती है, बिल्ली जब बच्चे देती है तो नाल गिरती है. यह नाल लक्ष्मी से संबंधित अनुष्ठान में, वशीकरण आदि प्रयोगों में बेजोड़ है।

घर में संग्रहणीय।

न्यौछावर—१२०)

और ये आश्चर्यजनक यंत्र

जो शक्ति यंत्रों में होती है, वह और किसी में नहीं होती, ये तुरन्त प्रभावयुक्त होते हैं, स्थायी फल लाभदायक होते हैं, और धातु निर्मित होने के कारण कई पीढ़ियों तक सुरक्षित रहते हैं।

पत्रिका के यंत्र विभाग ने श्रेष्ठ पंडितों द्वारा ऐसे ही श्रेष्ठ मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त यंत्र तैयार करवाये हैं, जो प्रत्येक गृहस्थ के लिये आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी हैं।

● कुबेर यंत्र

यह धातु निर्मित मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त यंत्र है, जिसे मात्र घर में रखना ही पर्याप्त है, मंत्र

सिद्ध होने के कारण इस पर किसी भी प्रकार से पूजा पाठ आदि कराने की आवश्यकता नहीं।

धन सम्पदा, व्यापार वृद्धि आर्थिक उन्नति देने में बेजोड़, अद्भुत सफलता दायक।

न्यौछावर—२४०)

● श्री यंत्र

यह लक्ष्मी प्राप्ति का श्रेष्ठतम यंत्र है, सारे तांत्रिक-मांत्रिक ग्रन्थों में इसे एक स्वर से श्रेष्ठतम सफलतादायक ऋण हर्ता सौभाग्यदायक यंत्र माना है, जो व्यापार वृद्धि एवं आर्थिक उन्नति में बेजोड़ है।

धातु निर्मित मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त।

न्यौछावर १८६)

● कनकधारा यंत्र

जिसके घर में कनकधारा यंत्र नहीं है, उसके घर में लक्ष्मी का निवास कैसे संभव है? शास्त्रों के अनुसार कनकधारा यंत्र अद्भुत है, आश्चर्यजनक है, श्रेष्ठतम है, व्यापार वृद्धि में अप्रतिम है।

धातु निर्मित मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त

न्यौछावर—२४०)

● विघ्नहर नवग्रह यंत्र

आर्थिक उन्नति, व्यापारिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक मंगल तथा पूर्ण आरोग्य लाभ के लिये, बच्चों की शिक्षा व उन्नति के लिये श्रेष्ठतम सफलता दायक यंत्र।

न्यौछावर—१२०)

● गौरी यंत्र

गौरी यंत्र विशेष रूप से मंत्र सिद्ध यंत्र है। विवाह दोष, गृहस्थ बाधा दोष मिटाने में समर्थ है, समय पर बालक या बालिका का विवाह न होता हो या बाधाएं आती हों तो ऐसे दोष को दूर करने में आश्चर्यजनक रूप से सहायक।

मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठा युक्त, चांदी से निर्मित, शीघ्र विवाह व गृहस्थ सुख के लिये श्रेष्ठतम रूप से सहायक।

न्यौछावर—६००)

और ये मंत्र सिद्ध मालाएं

● कमलगट्टे की माला

लक्ष्मी से संबंधित कोई भी प्रयोग तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक कि कमलगट्टे की माला का प्रयोग न हो। धारण करने से भी मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है। मंत्र सिद्ध चैतन्य....

न्यौछावर—३०)

● रक्षाकर रुद्राक्ष माला

रुद्राक्ष स्वतः ही रोग निवारक व उन्नतिदायक होता है। रक्षाकर रुद्राक्ष माला तो विशेष रूप से मंत्र सिद्ध चैतन्य है, जो ब्लड प्रेसर को नियंत्रित रखती है तथा अन्य रोग व्याप्त नहीं होने देती। जीवन की सर्वोन्नति के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी।

न्यौछावर—३००)

● मूंगे की माला

यह माला स्वतः वशीकरण युक्त है। इसके धारण करने से अद्वितीय उन्नति होने के साथ-साथ प्रत्येक प्रकार से रोग-मुक्त करने में सहायक है। अद्वितीय श्रेष्ठ, सफलतादायक।

न्यौछावर—३३०)

● कल्पवृक्ष माला

विभिन्न मनकों से युक्त यह "कल्पवृक्ष-माला" जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अद्वितीय सफलता देने में सहायक है। रोगमुक्ति, साधना में सफलता आर्थिक उन्नति, व्यापार वृद्धि, मुकदमें में विजय, शत्रुओं पर सफलता तथा समस्त प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति में असाधारण रूप से सहायक।

न्यौछावर—५१०)

(शेष पृष्ठ ८० पर)

गुरू पूर्णिमा महोत्सव : एक रिपोर्ताज

बेद पुरान बखानत गुरू महिमा भारी

१६ जुलाई १६८१। हारमोनियम और ढोलक-मंजीरे के संगीत के साथ प्रारम्भ हो गया है रामायण पाठ। भगवन्नाम का मांगलिक स्वर किसी महोत्सव के आयोजन की भूमिका है—हां महोत्सव ही तो। शिष्यों के लिये गुरू पूर्णिमा से बढ़कर और कोई अवसर क्या होगा जिस पर शिष्य एक बार फिर अपने समर्पण भाव को दुहराता है और अपनी फटी झोली गुरू के सामने फैला कर कहता है—अपने समस्त दोषों समेत मैं तुम्हारा, केवल तुम्हारा। इस झोली में कुछ डाल दोगे तो मेरा सौभाग्य, नहीं डालोगे तो तुम्हारी इच्छा........।

कुछ इने-गिने स्वर जिन्होंने प्रारम्भ किया था रामायण पाठ, दिन के दो बजे तक अनगिनत स्वरों में बदल गए हैं। संगीत-लहरी अधिक मुखर हो उठी है, शिष्यों की संख्या बढने लगी है। वातावरण में अधिक व्यस्तता, ज्यादा चहल-पहल दिखाई पड़ने लगी है।

बाहर मिलने वाले भक्तों की भीड़ को दिये जाने वाले समय में से कुछ बचा कर पूज्य गुरु जी बीच-बीच में अपने शिष्यों से बातें भी कर लेते हैं—देख रे, आज तेरा व्रत है, कल तेरा संस्कार है। तेरे पास धोती तो है न साफ धुली ? उसी को पहन कर बैठना होगा....अरे, तुम सब आ गए, सीधे यहीं क्यों नहीं आए, होटल में सामान रखने की क्या जरूरत थी ?....तुझे दीक्षा दूंगा कल, लेकिन अभी से किसी को बताने की जरूरत नहीं है। और उसी शोर भरे वातावरण में एक और भी स्वर है एक बहन का, जो गुरु जी से मानसिक शान्ति पाने के लिए आई है और अपने गुरु-भाई के पास खड़ी रो रही है और वह भाई कह रहा है—पगली, कल्प वृक्ष के नीचे आ गई है तू, अब रोना कैसा ?

सांझ ढलने लगी है। गुरु-परिवार की प्राण गुरु-पत्नी—जिन्हें सब शिष्य माता जी कह कर पुकारते हैं—सबके पास जा-जा कर पूछती हैं पूर्ण रूप से स्वस्थ नहीं हैं, परन्तु पूछे बिना रहा नहीं जाता उनसे—तूने खाना खा लिया है न ? भूखा तो नहीं है संकोच मत करना। बेहद व्यस्तता के बीच भी उनके मां हृदय की ललक कभी कम होते नहीं देखी किसी ने। और किसी ने उनसे कह दिया है—गुरु जी ने अपने शिष्यों को उपवास कराया है आज। वे आज नहीं खायेंगें।

"तो इतनी देर तक वे भूखे कैसे रहेंगे ? गुरु पूर्णिमा तो कल है न ? अभी तो कल के भोजन में चौबीस घंटे बाकी हैं।"

और माता जी के इस ममत्व के सामने गुरुजी मानो झुक गये हैं, कुछ शिष्यों को उन्होंने आज्ञा दे दी है कि वे भोजन कर लें, लेकिन अगले दिन होने वाले महोत्सव की प्रसन्नता में तथा रामायण पाठ करने हेतु

रात्रि-जागरण करने के लिए भूखे पेट रहने में होने वाली सुविधा के कारण भोजन करने में होने वाली हिचकिचाहट को भांप लिया है गुरु जी ने। गुरु जी बाहर मिलने को बैठी भीड़ को छोड़ कर अन्दर आ गए हैं। अपने बेड रूम, जो उन्होंने शिष्याओं को रहने के लिए खाली कर दिए हैं, उनमें जा-जा कर एक-एक की बांह पकड़ कर लाते हैं और भोजन की थाली के सामने बैठा देते हैं। यह पत्नी के ममत्व की कदर है या अपने शिष्यों के प्रति उनका असीम स्नेह ? नहीं, शायद दोनों ही जो शायद एक भरे-पूरे परिवार में आयोजित किये जाने वाले गुरु पूर्णिमा के उत्सव को अन्य आश्रमों के इसी प्रकार के उत्सवों से अलग-थलग बना रहा है।

रात की नीरवता रामायण स्वर के मांगलिक स्वरों के बीच न जाने कहां खो गई है। स्वर कम अवश्य हुए हैं, शायद ३-४ ही—परन्तु पाठ जारी है, अनवरत।

१७ जुलाई, पावन महोत्सव की सुबह। पिछली रात को ही गुरु जी ने अपने शिष्यों को अगले दिन का कार्यक्रम समझा दिया था, इसलिए सुबह सात बजे से ही शिष्यगण ड्राइंग रूम में एकत्र होने लगे हैं, गुरु-पूजन करने के लिए, जिससे गुरु पूर्णिमा उत्सव का प्रारम्भ होगा। ड्राइंग रूम पूजा-सामग्री की सुगंधि से महक उठा है। गुरु-चरणों की पूजा प्रारम्भ हो गई है, एक-एक करके शिष्यगण आगे बढ़ रहे हैं. चरण का अंगूठा धोते हैं, उस पर रोली लगाते हैं. पुष्प चढ़ाते हैं और फिर श्री चरणों को माथे से स्पर्श करते हैं। श्री चरणों की यह पूजा मात्र पूजा ही नहीं है. पूजा करते समय जो अश्रु प्रवाहित हो रहे हैं वे मानो दमित मनोवेगों की 'कैथार्सिस' हैं। रो कर जो हलकापन महसूस होता है, आत्मसमर्पण करके अहंमुक्ति के परिणाम स्वरूप जिस भार से मुक्ति मिलती है, उसका सुख वर्णनातीत है। इसे वही जानता है जिसने सच्चे मन से गुरु पूजा की हो। 'अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में' भजन की पहली पंक्ति गाते ही गायक गुरू बहन न केवल खुद रो पड़ी है बल्कि उसने सभी को रुला दिया है। उसके अवरुद्ध कण्ठ के अवरुद्ध स्वर का साथ देने वाले शिष्य गणों के स्वरों में एक ऐसी गम्भीरता है जो इस पावन अवसर के अनुरूप ही है।

इस गुरु-पूजा का समापन हुआ है गुरुदेव की इस आरती से—'जय गुरुदेव दया निधि दीनन हितकारी।' सभी शिष्यों के हाथ में इस आरती के 'स्क्राल' हैं जिन्हें एक कलाकार-शिष्य ने स्वयं तैयार करके गुरु भाई-बहिनों को भेंट किया है। इसी 'स्क्राल' को पढ़कर गुरुदेव की आरती कर रहे हैं शिष्यगण तन्मयता से, भाव-विभोर होकर।

रामायण पाठ समाप्त होने वाला है, गुरु जी व्यास गद्दी पर बैठ गये हैं और पाठ कर रहे हैं। रामायण की अंतिम चौपाई के बाद हनुमान चालीसा का पाठ, फिर कीर्तन और अन्त में रामायण आरती तथा प्रसाद-वितरण।

घर के प्रांगण में होने वाले यज्ञ की तैयारियां सुबह से ही प्रारम्भ हो गई थीं। पंडित लोग रामायण पाठ के समापन की प्रतीक्षा में बैठे थे। यज्ञ प्रारम्भ होने ही वाला है। लांज में वे लोग बैठे हैं जो अपनी समस्याओं का समाधान करने के लिए, उनसे मिलने के लिए आए हैं, उनके मित्र एवं शुभ चिन्तक हैं। यज्ञ स्थल के पास उन साधकों को बिठलाया गया है जिनका संस्कार किया जायेगा और वहीं हवन कुंड के समीप ही कुछ चौकियां पड़ी हैं, वे किसलिए पड़ी हैं ? किसी को नहीं मालूम।

थोडी देर बाद पांच शिष्य आकर उन चौकियों पर बैठ गए हैं। वे धोती पहने हैं, कमर से ऊपर का भाग निर्वस्त्र है।

गुरु जी ने मंत्र पाठ करना शुरू कर दिया है। प्रारम्भिक मंत्र पढ़ने के बाद ही पता चला है कि इन पांचों शिष्यों का 'प्रज्ञाभिषेक' किया जायेगा।

उन चौकियों के पीछे दो शिष्य और बैठे हैं, उनका 'संस्कार' किया जाएगा।

लगभग आधे घंटे तक प्रज्ञाभिषेक का कार्यक्रम होता रहा है। अब संस्कारित होने वाले शिष्य बारी-बारी से हवन कुंड के समीप पड़े हुए आसन पर बैठ रहे हैं। संकल्प पढ़ने के बाद अपना तथा पिता का नाम, गोत्र आदि का उच्चारण करते हैं और गुरु-मुख से निसृत गायत्री मंत्र के अन्त में 'स्वाहा' शब्द के साथ ही तीन-तीन बार आहुति छोड़ रहे हैं। अन्त में शिष्याओं के संस्कारित होने की बारी आई है। सामूहिक रूप से संकल्प पढ़ने के बाद वे भी एक-एक करके यज्ञस्थल के पास आ रही हैं और ३-३ बार आहुतियां डाल रही हैं।

और फिर अन्त में पूर्णाहुति तथा आरती।

कई लोगों के मन में जिज्ञासा है कि 'प्रज्ञाभिषेक' क्या है? गुरु जी किसी न किसी रूप में यह समझा चुके हैं कि प्रज्ञाभिषेक शिष्य के साधना-काल में होने वाले चार अभिषेकों में पहला अभिषेक है। शेष तीन अभिषेक हैं—पूर्णाभिषेक राज्याभिषेक, सम्राटाभिषेक। इस अभिषेक से शिष्य की उस साधना-स्थिति का पता चलता है जो दृढ़ हो चुकी है। इससे यह भी पता चलता है कि वह अब साधना पथ में डगमगायेगा नहीं, अब उसमें संकल्प-विकल्प नहीं उठेंगे, वह गुरु के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है। साधना-पथ में उसने अपना चरण मजबूती से रख दिया है। दुनिया का कोई प्रलोभन अब उसे पीछे नहीं ढकेल सकता। यह प्रज्ञाभिषेक ही दीक्षा संस्कार कहलाता है।

'संस्कार' प्रज्ञाभिषेक से पूर्व की स्थिति होती है। संस्कार इस बात का द्योतक है कि साधक पूर्व-साधना काल में किये जाने वाले शारीरिक और मानसिक अनुशासन को स्वीकार करने के लिए पूर्ण रूप से तत्पर है। उसने अपने को गुरु से शिष्य भाव से संबंधित कर दिया है। उसे इसका भान है कि प्रज्ञाभिषेक की साधना-स्थिति पर पहुंचते-पहुंचते उसे अपने साधना-संकल्प को दृढ़ से दृढ़तर बना लेना है।

प्रभु आरती के साथ ही यज्ञ समाप्त हो गया है। वृहद गुरु पूजा की तैयारियां हो रही हैं। लांज में एक ऊंची चौकी पर गुरु जी विराजमान हैं। गुरु आरती के 'स्काल' फिर से वितरित कर दिए गए हैं। एक-एक करके शिष्य आ रहे हैं और गुरु चरणों को पूजा करने के बाद फल-फूल धन, वस्त्र आदि भेंट करके अपनी श्रद्धा व्यक्त कर रहे हैं।

लगभग दो-ढाई सौ शिष्यों द्वारा की जाने वाली यह गुरु-पूजा तीन घंटों में समाप्त हो पाई है।

और अन्त में गुरुजी के आशीर्वचन। प्रस्तुत है उनका सारांश—

गुरु पूर्णिमा वस्तुतः शिष्य पूर्णिमा है। पूरे वर्ष भर गुरु शिष्य को साधना सम्बन्धी निर्देश देता है, आज के रोज भक्त भगवान से, स्नेह के अधिकार भरे स्वर में कहता है—मैं तुम्हारी पूजा करूंगा, इधर बैठो. मुझे इस तरह पूजा करने दो और शिष्य-पूर्णिमा का यह अवसर जहां उसके इस अधिकार की याद दिलाता है वहां उसके कर्त्तव्य की भी। उसका कर्त्तव्य है कि गुरु से 'अधिकतम' प्राप्त करे, ताकि वह उसे दूसरों को 'हैंड डाउन' कर सके और उससे समाज को लाभान्वित कर सके।........मैं सब कुछ देने को तैयार हूं। शिष्यत्व की कसौटी पर खरे उतर कर आप सब मुझसे मेरा साधना-ज्ञान प्राप्त करने के लिए आमंत्रित हैं। पता नहीं यह मेरा नसीब है या आपकी तटस्थता, मेरी यह आकांक्षा पूरी नहीं हुई है।........सिद्धाश्रम में सहस्रों वर्षों की आयु वाले साधक तपस्या रत हैं। उसके संचालक मेरे गुरु स्वामी सच्चिदानन्द जी समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अपने शिष्यों को संन्यासी, गृहस्थ साधक, आदि विभिन्न रूपों में समाज के बीच में सामाजिक प्राणी बन कर समाज का कल्याण करने हेतु भेजा करते हैं। मैंने भी

उनकी आज्ञा से पुनः गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया था। मैं पहली बार यह घोषणा कर रहा हूं कि लगभग चार वर्षों बाद समाज के प्रति मेरे दायित्व समाप्त हो जायेंगे और मैं गुरु आश्रम वापिस लौट सकूंगा।........मेरी गरिमा, मेरी प्रतिष्ठा, मेरा मान आपने ही मुझे दिया है। वह मेरी व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है, यह सब आपकी ही धरोहर है, मेरे बाद इस की रक्षा करने का भार आप पर ही है।........चौबीस घंटों में तेईस घंटे पचास मिनट आपके हैं। मुझे आपसे केवल दस मिनट चाहिए। यदि आप ईमानदार हैं तो साधना के ये दस मिनट ही चौबीस घंटे बन जायेंगे।

गुरु जी के वचन करुणा-पूरित हैं और वे श्रोताओं को रुलाते हैं। कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस अवसर पर शिष्यगण रो रहे हैं।

अनगिनत शीश गुरु-चरणों पर विनीत भाव से झुक रहे हैं, लगता है भारतीय संस्कृति में निहित सारी विनम्रता, सारा समर्पण जोधपुर स्थित इस गुरु-आश्रम पर साक्षात उपस्थित हो गया है। जिसके पास आंखें हों, वह देख ले इस अभूतपूर्व दृश्य को, जिसके पास मन हो वह अंकित कर ले इस छवि को उस पर।

और अब एक बात और। शिष्यों की इस भीड़ के व्यवहार में झलकने वाली उतावली गुरु से मिल कर अपने मन की भड़ास निकाल देने के लिए होने वाली उतावली, और इस उतावली को संयत करने के लिए लगाये गए व्यवस्था के अंकुश के प्रति विरोध प्रकट करने वाले शिष्य मुखों से निःसृत वाक्यांश (अंग्रेज साहबों के स्वर में 'दिस इज इर्रेलेवेंट'....यूनियन लीडरों के लहजे में—जनाब आप अन्दर से दूसरी लाइन क्यों लगवा रहे हैं, हमारे समय का भी ध्यान रखिये.... मैं अभी, बिल्कुल अभी गुरु जी से मिलकर ही रहूंगा, मैं क्यू में नहीं, यहीं से उनके पास जाऊंगा.... जब तक गुरु जी मुझसे खुद न कहें मैं यहां से नहीं हटूंगा).... इन सबकी याद आ रही है मुझे। प्रारम्भ में जिस खिन्नता से घिर गया था मैं, उसके बादल अब छंट रहे हैं. और इस रिपोर्ताज की अंतिम पंक्तियां लिखते-लिखते अब मैं सोचने लग गया हूं कि आक्रोश भरी इन अभिव्यक्तियों के पीछे भी गुरु के प्रति उनका प्यार ही छिपा हुआ था, जो प्रकट होना चाहता था। इस प्यार में एक ऐसी उफान थी जो रुकावट नहीं, 'आऊटलेट' चाहती है। इस प्यार को प्रतीक्षा असह्य है. उसे धैर्य असह्य है. क्योंकि वह प्यार है, और प्यार प्रकट होने के लिए ही होता है और वह प्यार जिस महान व्यक्तित्व के प्रति था, उसके श्री चरणों में कोटिशः नमन।

प्रस्तुतकर्ता आनन्द प्रकाश

(शेष पृष्ठ ७६ का)

सुना है कि....

इस बार गुरु पूर्णिमा (१७-७-८१) उत्सव पर पूज्य गुरुदेव श्रीमालीजी ने पांच शिष्यों का 'प्रज्ञाभिषेक' तथा दो शिष्यों का 'दीक्षा संस्कार' पूर्ण वैदिक विधि-विधान से सम्पन्न किया।



गुरु पूर्णिमा के अवसर पर लिया गया चित्र

(ऊपर) —प्रज्ञाभिषेक लेते दीक्षार्थी, (बायें से दायें)—शंकर लिंगम, रत्नागिरी, कृष्ण गोपाल सिंह आनन्द प्रकाश, कुनो भाई (और पीछे झांकता शिवशंकर)

(नीचे) —दीक्षा लेने को उत्सुक बहनें (बायें से दायें)—लक्ष्मी मित्रा (काठगोदाम), एक बहन, शान्ता शर्मा (काठगोदाम), कमला बाई (इन्दौर), कुसुम (लखनऊ), प्रेमा सिंह (लखनऊ) श्रीमती वी. बी. एन. शर्मा (हनमकोंडा), शोभा (जमशेदपुर)

पिछले दिनों पूज्य गुरुदेव श्री श्रीमाली जी के निर्देशन-सान्निध्य में जिन साधकों एवं शिष्यों ने साधना सम्पन्न कर सफलता प्राप्त की, उनके नाम है—

हरवंशराज, दिल्ली—पंचांगुली साधना। योगी क्षिप्रानंद, जम्मू—बगलामुखी साधना। श्रीमती मधु बहिन—अहमदाबाद—कुण्डलिनी जागरण। कुमारी स्नेह प्रभा, लखनऊ—वाग्देवी साधना। प्रपन्नराज शर्मा, कलकत्ता—तारा साधना। रघुराज, कानपुर—कालभैरव साधना।

इन सबको पत्रिका परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई।